3 राजधानी
आरएमएल में रोगियों को मिलेंगी नई सुविधाएं

6 अभिमत
संसद में सांसदों का कर्तव्य

11 विदेश
बाइडन फिर कोविड-19 से संक्रमित हुए

12 स्पोर्ट्स
टी20 में भारत की अगुआई करेंगे सूर्यकुमार यादव

RNI NO.DELHIN/2012/48369
वर्ष 12 अंक 250
नई दिल्ली, शुक्रवार, 19 जुलाई, 2024
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
नगर संस्करण

नई दिल्ली, लखनऊ और रायपुर से प्रकाशित

पायनियर

www.dailypioneer.com

मानव महत्वाकांक्षा का कोई अंत नहीं

राष्ट्रीय-10

एनटीए 20 तक नीट-यूजी का परिणाम अपलोड करे : कोर्ट

सुप्रीम कोर्ट में नीट पेपर लीक मामले की सुनवाई के दौरान कुछ छात्र तख्ती लेकर प्रदर्शन करते हुए। फोटो : रंजन डिमरी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

उच्चतम न्यायालय ने बृहस्पतिवार को राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) को निर्देश दिया है कि वह इस नीट-यूजी परीक्षा के परिणाम अपनी वेबसाइट पर शहर और केंद्रवार 20 जुलाई (शनिवार) दोपहर दोपहर 12 बजे तक उम्मीदवारों की पहचान छिपाते हुए जारी करें। शीर्ष अदालत 5 मई को आयोजित प्रतिष्ठित परीक्षा में बड़े पैमाने पर गड़बड़ी के आरोपों को रद्द करने, दोबारा परीक्षा कराने और अदालत की निगरानी में जांच की मांग करने वाली याचिकाओं पर 22 जुलाई को फिर से सुनवाई शुरू करेगी।

शीर्ष अदालत ने कहा कि प्रथम दृष्टया ऐसा प्रतीत होता है कि प्रश्नपत्र लीक की घटना पटना और हजारीबाग तक ही सीमित थी तथा गुजरात के गोधरा में इस तरह की कोई घटना नहीं हुई है। पटना और हजारीबाग में प्रश्नपत्र कथित तौर पर लीक हो गए, जबकि गोधरा में दावा किया गया कि परीक्षा आयोजित कराने वाले एक व्यक्ति ने कुछ अभ्यर्थियों की ओएमआर शीट भरने के लिए पैसे लिए। सोशल मीडिया टेलीग्राम पर प्रश्नपत्र लीक होने के दावों पर सवाल उठाते हुए पीठ ने कहा, आपको यह बात ध्यान में रखनी होगी कि ऐसा करने का उद्देश्य राष्ट्रीय स्तर पर दिखावा करना नहीं था। लोगों ने यह पैसे के लिए किया। इसलिए, यह परीक्षा को बदनाम करने के लिए नहीं था और कोई व्यक्ति पैसे कमाने के लिए ऐसा कर रहा था जो स्पष्ट है। बड़े पैमाने पर लीक के लिए उस स्तर पर संपर्कों की भी आवश्यकता होती है ताकि आप विभिन्न शहरों में ऐसे सभी प्रमुख संपर्कों से जुड़ सकें।

पीठ में न्यायमूर्ति जे.बी.पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा भी शामिल हैं। पीठ ने विवादों में घिरी राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा(नीट)-स्नातक से जुड़ी याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए कहा कि इसके सामाजिक प्रभाव हैं। न्यायालय ने नीट-यूजी से जुड़ी याचिकाओं से पहले सूचीबद्ध मामलों की सुनवाई स्थगित कर दी और कहा, हम आज मामले पर सुनवाई करेंगे। लाखों युवा छात्र इसका इंतजार कर रहे हैं, हमें सुनवाई करने और निर्णय लेने दीजिए। पीठ ने याचिकाकर्ताओं से यह दिखाने के लिए कहा कि प्रश्न पत्र व्यवस्थागत तरीके से लीक किया गया और उससे पूरी परीक्षा पर असर पड़ा, इसलिए इसे रद्द करना जरूरी है। सीजेआई ने कहा, पुन: परीक्षा कराने के लिए यह ठोस आधार होना चहिए कि पूरी परीक्षा की शुचिता पर असर पड़ा है। इस मामले की जारी (शेष पेज 9)

उत्तर प्रदेश के गोंडा में चंडीगढ़-डिब्रूगढ़ एक्सप्रेस के पटरी से उतर जाने के बाद मौके पर बड़ी संख्या में मौजूद स्थानीय लोग। पीटीआई

गोंडा में चंडीगढ़-डिब्रूगढ़ एक्सप्रेस के आठ डिब्बे पटरी से उतरे, दो की मौत

पायनियर समाचार सेवा। गोंडा/नई दिल्ली

उत्तर प्रदेश के गोंडा जिले में बृहस्पतिवार को चंडीगढ़ से डिब्रूगढ़ जा रही ट्रेन के आठ डिब्बे मोतीगंज तथा झिलाही रेलवे स्टेशनों के बीच पटरी से उतर गए। प्रदेश के उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने बताया कि इस दुर्घटना में दो व्यक्ति की मौत की खबर है। प्रदेश के राहत आयुक्त जीएस नवीन कुमार ने बताया कि हादसे में 20 अन्य लोग जख्मी हुए हैं। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने घटना का संज्ञान लिया और स्थानीय प्रशासन को पीड़ित यात्रियों को सहायता प्रदान करने का निर्देश दिया है। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों से दुर्घटना में घायल यात्रियों का सुमित इलाज भी सुनिश्चित करने को कहा है। साथ ही घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना भी की है।

असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने बृहस्पतिवार को कहा कि उत्तर प्रदेश के गोंडा जिले में चंडीगढ़-डिब्रूगढ़ एक्सप्रेस के पटरी से उतरने की घटना के बाद उनकी सरकार संबंधित अधिकारियों के संपर्क में है। घटना में उनके राज्य से अब तक किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। रेलवे ने एक बयान जारी कर बताया कि दुर्घटना के मद्देनजर तीन ट्रेनों को डायवर्ट रूट से चलाया जा रहा है। मार्ग परिवर्तित करने वाली ट्रेनों में 15707 कटिहार-अमृतसर आम्रपाली एक्सप्रेस, 15603 गुवाहाटी-जम्मू तवी अमरनाथ एक्सप्रेस और 15910 लालगढ़-डिब्रूगढ़ अवध असम एक्सप्रेस शामिल हैं। (शेष पेज 9)

जम्मू में लंबी लड़ाई की तैयारी में सेना

मोहित कंडारी। जम्मू

भारतीय सेना ने ग्राउंड जीरो पर धीरे-धीरे अधिक सैनिकों को शामिल करते हुए, 'जम्मू हाइट्स' पर कब्जा करने वाले पाकिस्तानी आतंकवादियों को खदेड़ने के लिए लंबी लड़ाई की तैयारी कर रही है। इस बीच, बृहस्पतिवार को जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में नियंत्रण रेखा पर घुसपैठ की एक नई कोशिश को नाकाम करते हुए सुरक्षा बलों ने दो आतंकवादियों को मार गिराया।भारतीय सेना ने आक्रामक रुख अपनाते हुए पहले ही हिमाचल प्रदेश की सीमा से लगे कठुआ जिले के ऊंचे इलाकों में अतिरिक्त सैनिकों को तैनात कर दिया है, ताकि घुसपैठ करने वाले आतंकवादियों के भागने के रास्ते को बंद किए जा सके।

वहीं राजौरी और पुंछ के सीमावर्ती जिलों में भी सैनिकों की तैनाती की समीक्षा की जा रही है, क्योंकि इस क्षेत्र में अक्टूबर 2021 से सेना के ट्रकों और गश्ती दलों पर बार-बार घात लगाकर हमला किया गया है। सुरक्षा बल कश्मीर घाटी में प्रवेश करने के पारंपरिक मार्गों को अवरुद्ध करने के लिए डोडा और किश्तवाड़ जिलों के ऊपरी इलाकों में अतिरिक्त चौकियाँ स्थापित करने पर भी विचार कर रहे हैं। विभिन्न एजेंसियों द्वारा किए गए प्रारंभिक आकलन के अनुसार, जम्मू-कश्मीर में बहुस्तरीय सुरक्षा ग्रिड वाले हिस्से में हुए हमलों के पीछे जैश-ए-मोहम्मद (जेईएम) आतंकवादी संगठन के प्रशिक्षित कैडर के साथ-साथ पूर्व पाकिस्तानी सेना के नियमित सैनिकों की संलिप्तता से इनकार नहीं किया जा सकता है। इनमें से अधिकांश घात लगाकर किए गए हमलों की योजना और क्रियान्वयन एक ही कमांड संरचना के तहत किया गया था और वांछित उद्देश्य शांतिपूर्ण जम्मू क्षेत्र में आतंक व दहशत फैलाने के साथ भारतीय सुरक्षा बलों को अधिक से अधिक नुकसान पहुंचना था।

डोडा जिले के जंगल में बृहस्पतिवार को आतंकवादियों की खोज करते हुए सेना के जवान।

डोडा के डेसा वन क्षेत्र में चार सैनिकों के शहीद होने से पहले, 8 जुलाई को कठुआ के बिलावर तहसील के मछेड़ी के बदनोटा इलाके में पाकिस्तानी आतंकवादियों ने पांच सैनिकों पर घात लगाकर हमला किया था। सीमा पार से घुसपैठ की नई कोशिशों को रोकने के लिए अंतरराष्ट्रीय सीमा पर सुरक्षा ग्रिड को हाई अलर्ट पर रखा गया है। इस बीच, बृहस्पतिवार को जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में नियंत्रण रेखा पर घुसपैठ की एक नई कोशिश को नाकाम करते हुए सुरक्षा बलों ने दो आतंकवादियों को मार गिराया। श्रीनगर स्थित चिनार कोर ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, आज केरन सेक्टर, कुपवाड़ा में नियंत्रण रेखा पर दो आतंकवादियों को मार गिराने के साथ ही घुसपैठ की कोशिश को सफलतापूर्वक रोक दिया गया है। घुसपैठ विरोधी अभियान जारी है। डोडा में, आतंकवादियों के एक समूह द्वारा सरकारी स्कूल की इमारत पर ग्रेनेड फेंकने और अंधाधुंध गोलीबारी करने से दो सैन्यकर्मी घायल हो गए, जहां ये सैनिक रात के दौरान अस्थायी शरण लिए हुए थे। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार, स्कूल परिसर में सैनिकों की मौजूदगी की जानकारी डोडा के काश्तीगढ़ इलाके में आतंकवादियों के स्थानीय सहयोगियों द्वारा साझा की गई हो सकती है। रिपोर्टों के अनुसार हमला रात करीब (शेष पेज 9)

बांग्लादेश में आरक्षण पर हिंसा के बीच भारत ने जारी किया परामर्श

पायनियर समाचार सेवा। एजेंसी/नई दिल्ली/ढाका

भारत ने गुरुवार को बांग्लादेश में अपने नागरिकों और छात्रों को एक परामर्श जारी कर कहा कि वे यात्रा करने से बचें और कम से कम घरों व आवास परिसर से बाहर निकलें। यह परामर्श देश के विभिन्न हिस्सों में चल रही कोटा हिंसा के मद्देनजर जारी किया गया है, जिसमें छह लोगों की मौत हो गई। भारत ने किसी भी सहायता के लिए 24 घंटे चालू रहने वाले कई आपातकालीन नंबर भी जारी किए हैं। सरकारी नौकरियों में आरक्षण प्रणाली में सुधार की मांग को लेकर जारी विरोध प्रदर्शनों में हिंसा फैलने से देशभर में कम से कम छह लोगों की जान जा चुकी है। हिंसा के कारण सरकार ने मंगलवार देर रात बांग्लादेश

में सभी सरकारी और निजी विश्वविद्यालयों के साथ-साथ स्कूलों और कॉलेजों को अनिश्चितकाल के लिए बंद कर दिया तथा छात्रों से छात्रावास खाली करने को कहा गया। भारतीय उच्चायोग ने यहां एक बयान में कहा, बांग्लादेश में मौजूदा हालात को देखते हुए बांग्लादेश में रहने वाले भारतीय समुदाय के सदस्यों और भारतीय छात्रों को यात्रा से बचने और अपने निवास स्थान से बाहर कम से कम आवाजाही की सलाह दी जाती है। उच्चायोग की वेबसाइट के अनुसार बांग्लादेश में लगभग सात हजार भारतीय हैं। ये झड़पें सोमवार को शुरू हुईं, जब सत्तारूढ़ अवामी लीग के छात्र मोर्चे के कार्यकर्ता प्रदर्शनकारियों के सामने आ गए। प्रदर्शनकारी इस बात पर जोर दे रहे थे कि मौजूदा आरक्षण व्यवस्था सरकारी सेवाओं में मेधावी छात्रों के नामांकन को काफी हद तक रोक रही है। प्रदर्शनकारियों ने सत्तारूढ़ पार्टी की छात्र शाखा, बांग्लादेश छात्र लीग पर पुलिस के समर्थन से उनके शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन पर हमला करने का आरोप लगाया। (शेष पेज 9)

पीएम मोदी ने चुनाव के बाद पार्टी कार्यकर्ताओं का बढ़ाया मनोबल

नई दिल्ली स्थित भाजपा मुख्यालय पहुंचने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का स्वागत करते पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा।

राजेश कुमार। नई दिल्ली

उत्तर प्रदेश से राजनीतिक गतिविधियों की खबरें आने के एक दिन बाद, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बृहस्पतिवार को भाजपा मुख्यालय पहुंचकर पार्टी कार्यकर्ताओं से मुलाकात की, ताकि हाल ही में संपन्न हुए आम चुनावों में अच्छे प्रदर्शन के बावजूद उनके गिरते मनोबल को फिर से उठाया जा सके। भाजपा 2014 और फिर 2019 की तरह 2024 में सरकार बनाने के लिए पार्टी के बहुमत के आंकड़े हासिल नहीं कर सकी थी। सूत्रों ने बताया कि मोदी शाम को भाजपा मुख्यालय पहुंचे और डीडीयू मार्ग पर पार्टी के विशाल परिसर में घूमे और उनमें से कई लोगों से बातचीत की। प्रधानमंत्री ने पार्टी कार्यकर्ताओं के कुछ कार्यालयों का भी दौरा किया और फिर एक सम्मेलन कक्ष में पार्टी कार्यकर्ताओं और स्वयंसेवकों से बातचीत की।

मोदी ने उनसे बातचीत की, जिसे लगातार तीसरी बार सत्ता में लौटने के बाद उनके काम की सराहना के रूप में देखा जा रहा है। उनके योगदान की सराहना करते हुए, प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि वह भविष्य में भी उनसे मिलते रहेंगे। भाजपा मुख्यालय पहुंचने पर मोदी का भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने स्वागत किया। पार्टी महासचिव से जुड़े एक कार्यकर्ता ने प्रधानमंत्री के हवाले से कहा, वे हमसे मिलकर बहुत खुश हुए और हममें से कई लोगों को व्यक्तिगत रूप से पहचाना। उन्होंने कहा कि वे पिछले पांच दशकों से भी अधिक समय से कई समर्पित कार्यकर्ताओं को जानते हैं। उन्होंने पार्टी मुख्यालय के बंद परिसर में हुई कुछ घटनाओं को याद करते हुए गपशप की और चुटकुले भी सुनाए, जो पहले लुटियंस के अशोका रोड पर हुआ करता था। उन्होंने कहा कि मोदी ने उन्हें उसी जोश के साथ काम करते रहने के लिए कहा, क्योंकि भाजपा को दुनिया की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी बनाने में उनका ही योगदान है। यह इशारा अभूतपूर्व नहीं है, क्योंकि मोदी ने 2014 और 2019 के लोकसभा चुनावों के बाद भी पार्टी कार्यकर्ताओं से मुलाकात की और उनका आभार जताया, जिसका उद्देश्य कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाना और उनके योगदान को सराहना था। अपने मजबूत कैडर-आधारित ढांचे के लिए जानी जाने वाली भाजपा शीर्ष नेतृत्व द्वारा जमीनी स्तर के कार्यकर्ताओं से सीधे जुड़ने की परंपरा को कायम रखती है ताकि उनके प्रयासों को बल मिल सके। यह बैठक केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक के बाद हुई है। 2024 के लोकसभा चुनाव में 240 सीटें हासिल जो बहुमत से कम है और 2019 के प्रदर्शन की तुलना में 63 सीटों की कमी थी। (शेष पेज 9)

कांवड़ यात्रा : भोजनालयों पर नाम लिखने वाले आदेश पर घमासान

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली/मुजफ्फरनगर

कांवड़ यात्रा के दौरान भोजनालयों पर नाम प्रदर्शित करने को लेकर राजनीतिक दलों समेत विभिन्न पक्षों से नाराजगी के बाद, मुजफ्फरनगर पुलिस ने गुरुवार को ताजा परामर्श जारी कर उनके मालिकों के नाम का बोर्ड लगाना 'स्वैच्छिक' कर दिया है। मुजफ्फरनगर पुलिस ने कहा कि उसका उद्देश्य किसी भी तरह का धार्मिक भेदभाव पैदा करना नहीं है, बल्कि मुजफ्फरनगर जिले से गुजरने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए और किसी भी अप्रिय स्थिति को रोकना है। मुजफ्फरनगर पुलिस ने अपने सोशल मीडिया पोस्ट के माध्यम से कहा, श्रावण के पवित्र महीने के दौरान, कई लोग, खासकर कांवड़िये, अपने आहार में कुछ खाद्य पदार्थों से परहेज करते हैं। परामर्श में आगे कहा गया है, अतीत में ऐसे मामले सामने आए हैं, जहां कांवड़ मार्ग पर सभी प्रकार के खाद्य पदार्थ बेचने वाले कुछ दुकानदारों ने अपनी दुकानों के नाम इस तरह रखे कि इससे कांवड़ियों में भ्रम की स्थिति पैदा हुई और कानून-व्यवस्था की स्थिति पैदा हुई। ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए कांवड़ मार्ग पर खाद्य पदार्थ बेचने वाले होटलों, ढाबों और दुकानदारों से अनुरोध किया गया है कि वे स्वेच्छा से अपने मालिकों और कर्मचारियों के नाम प्रदर्शित करें, यह व्यवस्था पहले भी प्रचलित रही है।

प्रशासन द्वारा सड़क किनारे ठेले समेत खाने-पीने की दुकानों को अपनी दुकानों के आगे मालिकों के नाम प्रदर्शित करने के पहले के आदेश की कड़ी आलोचना के बाद यह ताजा परामर्श जारी किया गया है। पुलिसकर्मियों ने भी आदेश का पालन कराना शुरू कर दिया है। मुजफ्फरनगर के पुलिस प्रमुख अभिषेक सिंह ने सोमवार को कहा, जिले में कांवड़ यात्रा मार्ग का करीब 240 किलोमीटर हिस्सा आता है। मार्ग पर स्थित सभी खाने-पीने की दुकानों, होटलों, ढाबों और ठेलों समेत सभी को अपने मालिकों या इन दुकानों पर काम करने वालों के नाम प्रदर्शित करने के लिए कहा गया है।विरोधियों के अलावा, भाजपा शासित उत्तर प्रदेश सरकार को (शेष पेज 9)

विवादित आईएएस अफसर पूजा खेडकर की मां जमीन विवाद में हिरासत में

पायनियर समाचार सेवा। पुणे

महाराष्ट्र के पुणे जिले की अदालत ने भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) सेवा की प्रशिक्षु अधिकारी पूजा खेडकर की मां मनोरमा खेडकर को 20 जुलाई तक पुलिस हिरासत में भेज दिया। पुलिस ने मनोरमा को जमीन विवाद को लेकर बंदूक लहराकर कुछ लोगों को धमकाने के आरोप में गिरफ्तार किया है। मनोरमा को रायगढ़ जिले के महाड स्थित एक लॉज से बृहस्पतिवार सुबह पकड़ा गया जहां वह छिपी हुई थी। पुलिस के मुताबिक, मनोरमा को रायगढ़ से पुणे के पौड पुलिस थाना लाया गया और औपचारिक रूप से गिरफ्तार किया गया। एक अधिकारी ने बताया कि मनोरमा को स्थानीय अदालत में पेश किया गया जहां से उन्हें 20 जुलाई तक पुलिस की हिरासत में भेज दिया गया। दरअसल, एक वीडियो सामने आया था जिसमें मनोरमा पुणे के मुलशी तहसील के धडवाली गांव में भूमि विवाद को लेकर कुछ लोगों को कथित तौर पर बंदूक दिखाकर धमकाती नजर आ रही थीं। इसके बाद से पुलिस मनोरमा और उनके पति दिलीप खेडकर की तलाश में जुटी थी। पुणे में पौड पुलिस ने खेडकर दंपति और पांच अन्य के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा-323 (बेईमानी या धोखाधड़ी से संपत्ति हटाना या छिपाना) सहित अन्य धाराओं और शस्त्र अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया था। पुणे (ग्रामीण) के पुलिस अधीक्षक पंकज देशमुख ने इससे पहले बताया था, मनोरमा खेडकर को रायगढ़ जिले के महाड से हिरासत में लिया गया और उन्हें पुणे लाया गया, जहां औपचारिकताएं पूरी होने के बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। (शेष पेज 9)

धोती-कुर्ता के अपमान पर बेंगलुरु के मॉल को सात दिनों के लिए बंद कराया

पायनियर समाचार सेवा। बेंगलुरु/नई दिल्ली

कर्नाटक सरकार ने भारतीय परिधान धोती, कुर्ता के अपमान पर बेंगलुरू के उस मॉल को सात दिन के लिए बंद करा दिया है, जिसने एक किसान को धोती और कुर्ता पहने होने की वजह से कथित रूप से प्रवेश की अनुमति नहीं दी थी। सरकार ने गुरुवार को इस मॉल को सात दिन तक बंद रखने का आदेश दिया। आदेश आने के कुछ समय बाद ही मॉल को बंद कराने की कार्रवाई शुरू हो गई। किसान को मॉल में कथित रूप से प्रवेश नहीं देने की घटना की विधानसभा में सभी पार्टी के सदस्यों ने कड़ी निंदा की है।

सरकार ने किसान के कथित अपमान को गरिमा और स्वाभिमान पर आघात बताया और कहा कि इसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। शहरी विकास मंत्री बी.सुरेश ने सदन को बताया, उन्होंने बृहत बेंगलुरु महानगर पालिका आयुक्त से पूछा कि क्या किया जा सकता है। सरकार के पास अधिकार है। मॉल के खिलाफ कानून के तहत तुरंत कार्रवाई की जाएगी और यह सुनिश्चित करेंगे कि मॉल सात दिनों के लिए बंद रहे। समाज कल्याण मंत्री एचसी महादेवप्पा ने कहा कि यह घटना निंदनीय है। उन्होंने कहा, हर व्यक्ति के लिए आत्मसम्मान और गरिमा महत्वपूर्ण है, इसका उल्लंघन किया गया है और सरकार

कार्रवाई करेगी। यह घटना मंगलवार को उस समय हुई जब हावेरी जिले के 70 वर्षीय फकीरप्पा अपनी पत्नी और बेटे के साथ मल्टीप्लेक्स में फिल्म देखने के लिए मॉल गए थे। फकीरप्पा ने कथित तौर पर सफेद कमीज और 'पंचे' (धोती) पहन रखी थी। मॉल के सुरक्षा कर्मचारी ने कथित तौर पर उन्हें और उनके बेटे से कहा कि उन्हें 'पंचे' पहनकर अंदर जाने की अनुमति नहीं दी जाएगी। कर्मचारी से उनसे कहा कि वह पतलून पहनकर आएं। इससे पहले विधानसभा अध्यक्ष यू टी खादर ने यह मुद्दा उठाया और सरकार से कार्रवाई करने को कहा। रानीबेन्नूर से कांग्रेस विधायक प्रकाश कोलीवाड ने कहा कि किसान उनके निर्वाचन क्षेत्र के तहत आने वाले गांव का निवासी है। उन्होंने कहा, किसान ने अपने सभी नौ बच्चों को पढ़ाया लिखाया है। उनका एक बेटा बेंगलुरु में एमबीए की पढ़ाई कर रहा है और बेटा अपने पिता को मॉल दिखाने ले जाना चाहता था। किसान के पहनावे के कारण उसका अपमान किया गया और मॉल को बंद कर देना चाहिए।

विपक्ष के नेता आर अशोक ने कहा कि इस तरह के मुद्दों पर सदन में पहले भी चर्चा हो चुकी है, लेकिन नतीजा क्या निकला। अध्यक्ष या सरकार को कुछ आदेश जारी करने होंगे, जिनका सचिवों और नौकरशाहों द्वारा सख्ती से पालन किया जाना चाहिए। मंत्री सुरेश ने अध्यक्ष या सदन से निर्देश मांगे ताकि सभी मॉल और क्लब राज्य की सांस्कृतिक पोशाक पहनने वालों के प्रवेश पर प्रतिबंध न लगाएं। अशोक ने इसका जवाब देते हुए कहा, आखिरकार आदेश किसके द्वारा जारी किया जाना है। आप सरकार में हैं, आप शहरी विकास मंत्री हैं, आपको आदेश जारी करना है। ऐसी घटनाएं दोबारा नहीं होनी चाहिए। जब कुछ विधायकों ने सुझाव दिया कि सदन की एक समिति बनाई जाए और उसकी रिपोर्ट के आधार पर कार्रवाई की जाए, तो वरिष्ठ भाजपा विधायक सुरेश कुमार और अशोक ने कहा अतीत में कई समितियां बनाई गई हैं और उनकी रिपोर्ट पर अब तक कोई कार्रवाई नहीं की गई है। अध्यक्ष या सरकार को कुछ आदेश जारी करने होंगे, जिनका नौकरशाह सख्ती से पालन करें।

किसानों के बीच पहुंचे नोएडा प्राधिकरण के सीईओ लोकेश

नोएडा प्राधिकरण के सीईओ को सम्मानित करते किसान नेता।

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

समस्याएं सुनी, डीजीएम व अधिकारियों को निस्तारण के दिए निर्देश

नोएडा प्राधिकरण के सीईओ लोकेश एम. ने गुरुवार दोपहर को अधिकारियों के साथ सलारपुर गांव पहुंचे है। इस दौरान उन्होंने किसानों और गांव की समस्या को सुना।

ये कार्यक्रम नोएडा आपके द्वार अभियान के तहत किया गया है। ये कार्यक्रम सलारपुर प्राथमिक स्कूल में आयोजित किया गया। इस मौके पर किसानों ने गांव में सड़क, जलभराव, नालियों की साफ-सफाई, रोड कनेक्टिविटी के अलावा कई और समस्या बताई।जिनको दूर करने के लिए सीईओ ने दोनों डीजीएम सिविल और जन स्वास्थ्य को निर्देश दिए। इसके अलावा जमीन से जु? कई मामलों को रखा गया।

सीईओ ने सभी किसानों की एप्लिकेशन लेकर उसे भू लेख विभाग को सौंप दिया। साथ ही निवारण के लिए कहा गया। इस मौके पर भाजपा नोएडा महानगर अध्यक्ष मनोज गुप्ता, एसीईओ संजय खत्री, डीजीएम (सिविल) विजय रावल आदि मौजूद रहे।

गाजियाबाद को 4 सुपर जोनल, 108 सेक्टरों में बांटा

जिलाधिकारी इन्द्र विक्रम सिंह ने अधिकारियों को समय से व्यवस्थाएं पूरी करने के दिए निर्देश

कांवड़ यात्रा

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

जिलाधिकारी इन्द्र विक्रम सिंह

22 जुलाई को शुरू होने जा रही कांवड़ यात्रा के लिए जिला प्रशासन पूरी तरह से तैयार हो गया है। कांवड़ यात्रा के दौरान किसी प्रकार की कोई दिक्कत न हो, इसके लिए डीएम इन्द्र विक्रम सिंह ने अधिकारियों को समय से व्यवस्थाएं जहां पूर्ण करने के निर्देश दिए हैं वहीं अधिकारियों की भी तैनाती की गई है।

कांवड़ यात्रा के लिए जिले को चार सुपर जोनल, 12 जोन, 27 सब सेक्टर और 108 सेक्टर में बांटा गया हैं। जोनल और सेक्टर मजिस्ट्रेट की भी तैनाती कर दी गई है। एडीएफ फाइनेंस सौरभ भट्ट को सुपर जोन-1 नगरीय क्षेत्र की जिम्मेदारी दी गई है। उनके साथ जोनल मजिस्ट्रेट के रूप में ओएसडी जीडीए गुंजा सिंह, अपर आयुक्त वाणिज्य जितेन्द्र पाल, जीडीए मुख्य अभियंता मानवेन्द्र सिंह को तैनात किया है। साथ ही सात सब सेक्टर भी उनके अधिकार क्षेत्र में दिए हैं। सुपर जोन-2 ट्रांस हिंडन क्षेत्र में जीडीए सचिव राजेश कुमार सिंह को जिम्मेदारी दी गई है। उनके साथ जोनल अधिकारी के रूप में सहायक नगर आयुक्त पल्लवी, अपर आयुक्त वाणिज्य लाल चन्द्रा,अपरआयुक्त वाणिज्य संजय सिंह द्वितीय, मुख्य अभियंता नगर निगम नरेन्द्र कुमार को तैनात किया गया है। साथ ही इन अधिकारियों के जिम्मे आठ सब सेक्टर भी आंवटित किए गए हैं। सुपर जोन-3 ग्रामीण की जिम्मेदारी जोनल अधिकारी अपर नगर आयुक्त अरुण कुमार को दी गई है। उनके साथ जोनल मजिस्ट्रेट एसडीएम राजेन्द्र शुक्ला, अपर आयुक्त वाणिज्य लल्लन मौर्य, अपर आयुक्त वाणिज्य जयंत कुमार को तैनात किया गया है।

साथ ही सात सब सेक्टर भी आंवटित किए गए हैं। सुपर जोन-4 लोनी-अंकुर विहार की जिम्मेदारी एडीएम एलए विवेक मिश्रा को दी गई है। उनके साथ जोनल मजिस्ट्रेट के रूप में उपकृषि निदेशक राम जतन मिश्रा, अपर आयुक्त वाणिज्य कैलाश नाथ सरोज तैनात रहेंगे। जिनके जिम्मे चार सेक्टर रहेंगे।

इसके अलावा 108 सेक्टर में भी मजिस्ट्रेट तैनात किए गए हैं। डीएम ने डयूटी में तैनात किए गए सभी अधिकारियों को कड़े निर्देश दिए हैं कि वह बिना अनुमति के मुख्यालय नहीं छोड़ेंगे। साथ ही अपना मोबाइल भी साथ रखेंगे। इसके अलावा अधिकारियों को यात्रा शुरू होने से पूर्व ही यात्रा मार्ग में जहां-जहां शिवभक्त जलाभिषेक करते हैं, मस्जिद, मजार, संवदेनशील क्षेत्रों का चिन्हिकरण करने के निर्देश दिए हैं। ताकि अगर कोई विवाद होता है तो तत्काल उसका निस्तारण किया जा सके।

पांच कंट्रोल रूम बनाए जाएंगे

कांवड़ यात्रा के दौरान जिला प्रशासन द्वारा पांच कंट्रोल रूम स्थापित किए जाएंगे। इसमें एक दूधेश्वरनाथ मंदिर, मेरठ रोड तिराहा, गंग नहर मुरादनगर, राज चौपाला और टीला मोड लोनी में कंट्रोल बनाया जाएगा। इन कंट्रोल रूम पर नगर निगम, जीडीए, चिकित्सा, परिवहन, दूरसंचार, बिजली व अग्निशमन विभाग के अधिकारी व कर्मचारी तैनात रहेंगे ताकि सूचना मिलने पर तत्काल कार्रवाई हो सके।

शिकायत पंजिका में पूरा ब्यौरा होगा दर्ज

कांवड़ यात्रा के दौरान एक शिकायत व सुझाव पंजिका भी रखे जाने के निर्देश डीएम ने दिए हैं। इन पंजिका में पूरा ब्यौरा दर्ज किया जाएगा ताकि उनका निस्तारण सही प्रकार से हो सके। इसके अलावा निगम, क्षेत्रीय प्रबंधक, राज्य सड? परिवहन निगम, जिला पूर्ति विभाग के अधिकारी 24 घंटे तैनात रहेंगे, सभी की एक उपस्थिति पंजिका भी बनाई जाएगी। इस पंजिका में अधिकारियों के भ्रमण की जानकारी भी दर्ज की जाएगी

कांस्टेबल आत्महत्या मामले में गर्लफ्रेंड पुलिस हिरासत में

गाजियाबाद। गाजियाबाद में ईवीएम की सुरक्षा में तैनात सिपाही पम्मी ने मंगलवार रात सरकारी बंदूक से गोली मारकर आत्महत्या करने के मामले में पुलिस ने गर्लफ्रेंड सहित दो और को हिरासत में लिया है।

मरने से पहले सिपाही ने 3 मिनट का वीडियो बनाया। दरअसल मोदीनगर के मुरादनगर में सिपाही ब्लैकमेल से आहत होकर सिपाही ने आत्महत्या की थी।

इस मामले में पुलिस ने दो महिला सहित तीन के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की है। इस मामले में साथी सिपाही ध्यान सिंह की तहरीर पर मुरादनगर थाने में अमित पुत्र महिलपाल ,प्राची ,गुड्डन निवासी अज्ञात के खिलाफ एनबीसी 108 के तहत रिपोर्ट दर्ज की है।

पुलिस ने प्राची व उसकी सहेली गुड्डन को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रहे है।नगर पालिका परिषद कार्यालय स्थित गोदाम में रखी ईवीएम की सुरक्षा के लिए मंगलवार रात को सिपाही पम्मी और ध्यान सिंह की डयूटी थी।

यमुना प्राधिकरण 130 मीटर चौड़ी सड़क का निर्माण करेगी

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

ग्रेटर नोएडा वेस्ट व गाजियाबाद में रहने वालों के लिए जल्द ही यमुना प्राधिकरण 130 मीटर चौड़ी सड़क का निर्माण करेगी। दरअसल यमुना प्राधिकरण ने जल्द ही ग्रेटर नोएडा वेस्ट और गाजियाबाद से जेवर एयरपोर्ट की कार्गो टर्मिनल को कनेक्ट करने के लिए 130 मीटर चौड़ी सड़क बनाने का ऐलान किया है।

इसके लिए 30 सिंतबर को जमीन खरीदने का कार्यक्रम पूरा करेगा। आपको बता दें कि इस सड़क के बनने से यमुना एक्सप्रेस-वे के समानांतर कार्गो टर्मिनल तक पहुंचने का एक और वैकल्पिक मार्ग बनकर तैयार हो जाएगा। इसके साथ ही यमुना प्राधिकरण के औद्योगिक, आवासीय सेक्टर की कनेक्टिविटी भी हो जाएगी। ग्रेटर नोएडा वेस्ट के किसान चौक से सिरसा गांव तक 130 मीटर चौड़ी सड़क का निर्माण हुआ है। यमुना प्राधिकरण क्षेत्र में होते हुए प्रस्तावित खुर्जा पलवल एक्सप्रेस-वे तक है। यीडा क्षेत्र में सड़क की लंबाई तकरीबन 38 किमी है। प्राधिकरण टुकड़ों में करीब 29 किमी लंबी सड़क का निर्माण कर चुका है।

बिल्डरों की खाली संपत्ति का सर्वे करेगी एजेंसी

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

प्राधिकरण ने करी एंड ब्राउन एजेंसी को किया हायर, रिकार्ड मिलने पर संपत्ति होगी सील

बकाया नहीं देने वाले बिल्डरों की सोसाइटी में खाली पड़ी संपत्ति का सर्वे कराने के लिए नोएडा प्राधिकरण ने एक एजेंसी को लगा दिया है। करी एंड ब्राउन कंपनी प्राधिकरण और बिल्डर से फ्लैटों का रिकार्ड लेकर डेटा तैयार करेगी।

प्राधिकरण अधिकारियों का दावा है कि रिपोर्ट आने पर खाली पड़ी संपत्ति को सील किया जाएगा। रजिस्ट्री कराने के लिए प्राधिकरण ने बिल्डरों से उन खरीदारों की सूची मांगी है जो रजिस्ट्री कराने के लिए आगे नहीं आ रहे हैं।

अभी तक 22 बिल्डरों ने कुल बकाए में से 25 प्रतिशत जमा कर दिया है। इन बिल्डरों के जरिए 276 करोड़ रुपए जमा कराया गया है। बाकी पैसा एक साल के अंदर जमा कराना होगा। जबकि 14 परियोजनाओं से जुड़े बिल्डरों ने कुछ-कुछ राशि जमा की है। महत्वपूर्ण यह है कि पैसा जमा कराने वाले बिल्डर सोसाइटी में प्राधिकरण ने करीब 3 हजार फ्लैट की रजिस्ट्री की अनुमति दे दी है।

विद्युत विभाग का कारनामा 4 करोड़ रुपये का बिल थमाया

नोएडा। नोएडा में विद्युत विभाग का एक अनोखा कारनामा चर्चा का विषय बना हुआ है। विद्युत विभाग ने नोएडा के सेक्टर-122 में रहने वाले बसंत शर्मा को 4 करोड़ से अधिक का बिजली का बिल भेज दिया है। विद्युत विभाग की इस लापरवाही से बिजली उपभोक्ता के होश उड़ गए हैं और उसकी सांसें अटकी हुई हैं। विद्युत विभाग की लापरवाही के कारण सेक्टर-122 के मकान संख्या सी-103 का चालू माह का बिल 4 करोड़ 2 लाख 31 हजार 842.31 रूपये का भेजा गया है। बिल देखकर भूखंड स्वामी के पैरों तले जमीन खिसक गई। सेक्टर-122 के पीके ब्लॉक के रहने वाले फोनरवा के सह कोषाध्यक्ष भारत भूषण ने विद्युत विभाग की इस लापरवाही पर अंकुश लगाने की मांग की है। उनकी मांग है कि विद्युत विभाग के शीर्ष अधिकारी इसका गंभीरता से संज्ञान लें तथा दोषी कर्मचारी को दंडित करें। सेक्टर-122 के भूखंड संख्या सी-103 में विद्युत कनेक्शन संख्या 6463862000 का बिल 40231842.31 रूपये भेजा गया है तथा 24 जुलाई तक बिल जमा करने की तिथि अंकित है। 24 जुलाई तक बिल जमा करने पर 284969.88 की छूट का भी अवसर दिया गया है।

संक्षिप्त समाचार

प्राधिकरण के खिलाफ सड़क पर उतरी आरडब्ल्यूए

नोएडा। ग्रेटर नोएडा शहर की 40 आरडब्ल्यूए ने ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। गुरुवार को 40 आरडब्ल्यूए के पदाधिकारी ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण पहुंचे और अधिकारीयों से मिले तथा उन्हें ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में फेडरेशन ने प्राधिकरण को शहर की समस्त समस्याओं से अवगत कराया और उन्होंने चेतावनी दी कि अगर इनकी समस्या हल नहीं हुई तो प्राधिकरण के दोनों गेट पर ताला जड़ देंगे तथा अनिश्चितकालीन धरने पर बैठ जाएंगे। फेडरेशन ऑफ़ आरडब्ल्यूएज के उपाध्यक्ष आलोक नागर ने बताया कि आज पैदल मार्च कर सांकेतिक रूप से प्राधिकरण के गेट को बंद किया और एक 7 सूत्रीय ज्ञापन ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के ओएसडी हिमांशु वर्मा को सौंपा।

महिला बैंककर्मी सुसाइड केस में मैनेजर गिरफ्तार

गाजियाबाद। एक्सिस बैंक में जॉब करने वाली शिवानी त्यागी निवासी हरिनगर घूकना नन्दग्राम ने अपने कुछ सीनियरर्स व सहकर्मियों के द्वारा की गई उत्पीड़ात्मक कार्रवाई से दुखी होकर आत्महत्या कर ली थी। उक्त मामले की रिपोर्ट मृतका के भाई गौरव त्यागी ने दर्ज करवाई थी। उसके बाद नन्दग्राम थाने के एसएचओ धर्मपाल सिंह की टीम ने त्वरित कार्रवाई करते हुए नामजद अभियुक्तों में से एक मौहम्मद अकरम निवासी मुरादाबाद हाल सेल्समैनेजर एक्सिस बैंक नोएडा को गिरफ्तार कर लिया।

मजदूरी मांगने पर स्कूटी सवार दो लोगों ने की मारपीट

नोएडा। थाना कासना में एक व्यक्ति ने रिपोर्ट दर्ज कराई है कि स्कूटी सवार दो लोगों ने उसके साथ मारपीट की। थाना कासना के प्रभारी विनोद कुमार ने बताया कि छत्रपाल नामक व्यक्तिने थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई है कि वह कासना रोड पर पानी वाली टंकी के पास से गुजर रहा था, तभी स्कूटी पर सवार होकर दो लोग आए। उन्होंने उसे लात मार दिया। विरोध करने पर उन्होंने उसके साथ मारपीट कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। उन्होंने बताया कि घटना की रिपोर्ट दर्ज कर पुलिस मामले की जांच कर रही है।उन्होंने बताया कि एक अन्य मामले मे दिनेश पुत्र वीरेंद्र ने रिपोर्ट दर्ज कराई है कि डाढा गांव के पास स्थित एक पेंट बनाने की कंपनी में वह काम करते हैं। पीड़ित के अनुसार उन्होंने कंपनी के सुपरवाइजर राहुल से अपने 12 दिन की मजदूरी की मांग की तो उसने उनके साथ मारपीट की। इस घटना में पीड़ित के नाक में गंभीर चोट आई है। उन्होंने बताया कि पुलिस मामले की जांच कर रही है।

पुलिस मुठभेड़ में बदमाश को लगी गोली

नोएडा। नोएडा के थाना सेक्टर 24 क्षेत्र में पुलिस और बाइक सवार बदमाश के बीच में मुठभेड़ हो गई। इस मुठभे? में बदमाश पैर में गोली लगने से घायल हो गया। घायल बदमाश को उपचार के लिए अस्पताल भेज दिया गया है। पकड़े गए बदमाश पर एक दर्जन से ज्यादा लूट और चोरी के मुकदमे दर्ज है। बुधवार रात में थाना सेक्टर-24 पुलिस द्वारा ग्राम चौ?ा सेक्टर-12/22 के पास चेकिंग की जा रही थी कि तभी एक व्यक्ति काले रंग की मोटरसाइकिल पर आता दिखाई दिया, जिसे पुलिस ने रूकने का इशारा किया तो वह भागने लगा और पुलिस टीम द्वारा पीछा करने पर मदर डेयरी, गन्दा नाला सेक्टर-11 नोएडा के पास मोटरसाइकिल से फिसलकर गिर गया।

एसेट केअर एंड रिकन्स्ट्रक्शन एंटरप्राईज लिमिटेड ("एसीआरई")
CIN : U65993DL2002PLC115769
पंजीकृत कार्यालय: 14वीं मंजिल, ईआरओएस कॉर्पोरेट टॉवर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली-110019. ई-मेल: acre.arc@acreindia.in,वेबसाइट: www.acreindia.in
कॉर्पोरेट कार्यालय: यूनिट नंबर 502, सी विंग, वन बीकेसी, प्लॉट नंबर सी - 66, जी - ब्लॉक, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स, मुंबई – 400051. फोन: 022 68643101

कब्जा सूचना
(अचल संपत्ति हेतु)

जब कि,
इंडियाबुल्स हाउसिंग फायनान्स लिमिटेड ("आईएचएफएल") प्राधिकृत अधिकारी होने के नाते सिक्योरिटाइजेशन एंड रिकन्स्ट्रक्शन ऑफ फायनांशियल असेट्स एंड एन्फोर्समेंट ऑफ सिक्योरिटी इंटरेस्ट ऐक्ट, 2002 के अंतर्गत और नियम 3 के साथ धारा 13(12) के साथ सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, 2002 के साथ पढ़ते हुए प्राप्त अधिकारों का उपयोग करके कर्जदार **ब्रिजेश तिवारी और दया कृष्ण तिवारी** को **31.12.2021** की सूचना में वर्णन के अनुसार **कर्ज खाता नं. HHLNOD00221047** की राशि **रू. 41,89,021.55 (रूपए इकतालीस लाख नवासी हजार इक्कीस और पचपन मात्र)** और **21.12.2021** के अनुसार उस पर ब्याज उक्त सूचना की प्राप्ती की तारीख से स्पष्ट 60दिनों के भीतर चुकता करने का आवाहन करते हुए अभियाचना सूचना जारी की थी । इसके अलावा **आईएचएफएल** ने दिनांक **27.06.2023** के असाइनमेंट करार के माध्यम से **एसेट केअर एंड रिकन्स्ट्रक्शन एंटरप्राईज लिमिटेड ("एसीआरई")** के पक्ष में उपरोक्त कर्ज खाते के अपने सभी अधिकार, शीर्षक और ब्याज और कर्ज खाता सौपा है, जिसे सुधार अनुबंध दिनांक **04.08.2023** के साथ पढ़े ।
धनराशि चुकता करने में कर्जदारों के असफल रहने पर एतद्द्वारा कर्जदार और सर्व सामान्य जनता को सूचना दी जाती है कि, अधोहस्ताक्षरी ने उक्त कानून की धारा 13 की उप-धारा 4 के साथ उक्त कानून के नियम 8 के तहत सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, **2002** के तहत प्राप्त अधिकारों का कार्यान्वयन करके **15.07.2024** को संपत्ति पर **सांकेतिक आधिपत्य** कर लिया है ।
विशेषत: कर्जदारों और सामान्यत: जनता को एतद्द्वारा संपत्ति के साथ सौदा नहीं करने के लिए सावधान किया जाता है और संपत्ति के साथ कोई भी सौदा राशि **रू. 41,89,021.55 (रूपए इकतालीस लाख नवासी हजार इक्कीस और पचपन मात्र) 21.12.2021** के अनुसार और उस पर ब्याज के साथ **असेट्स केअर एन्ड रिकन्स्ट्रक्शन एन्टरप्राइजेस लि.** के आधीन होगा.
उधारकर्ताओ का ध्यान अधिनियम की धारा 13 की उप-धारा (8) के अन्तर्गत संपत्ति / संपत्तियों को मुक्त कराने के लिए उपलब्ध समय की ओर आमंत्रित किया जाता है।

अचल संपत्ति का विवरण
यूनिट नं. 604, छठी मंजिल, टावर जे 2, ईको विलेज 4, प्लॉट नं. जीएच 01, सेक्टर 16बी ग्रेटर नोएडा, नोएडा – 201308, उत्तर प्रदेश।

सही/-
प्राधिकृत अधिकारी
दिनांक : 15.07.2024 **असेट्स केअर एन्ड रिकन्स्ट्रक्शन एन्टरप्राइजेस लि.**
स्थान : नोएडा **(102- ट्रस्ट)**

किसी भी शिकायत के लिए आप **श्री मोहम्मद शारिक मलिक,** शिकायत निवारण अधिकारी, फोन नंबर 011-66115609, ईमेल: complaint@acreindia.in से संपर्क कर सकते हैं। संगठन के अंतर्गत शिकायत निवारण तंत्र विस्तृत रुप से https://www.acreindia.in/compliance पर देखी जा सकती है।

एसेट केअर एंड रिकन्स्ट्रक्शन एंटरप्राईज लिमिटेड ("एसीआरई")
CIN : U65993DL2002PLC115769
पंजीकृत कार्यालय: 14वीं मंजिल, ईआरओएस कॉर्पोरेट टॉवर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली-110019. ई-मेल: acre.arc@acreindia.in,वेबसाइट: www.acreindia.in
कॉर्पोरेट कार्यालय: यूनिट नंबर 502, सी विंग, वन बीकेसी, प्लॉट नंबर सी - 66, जी - ब्लॉक, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स, मुंबई – 400051. फोन: 022 68643101

कब्जा सूचना
(अचल संपत्ति हेतु)

जब कि,
इंडियाबुल्स हाउसिंग फायनान्स लिमिटेड ("आईएचएफएल") प्राधिकृत अधिकारी होने के नाते सिक्योरिटाइजेशन एंड रिकन्स्ट्रक्शन ऑफ फायनांशियल असेट्स एंड एन्फोर्समेंट ऑफ सिक्योरिटी इंटरेस्ट ऐक्ट, 2002 के अंतर्गत और नियम 3 के साथ धारा 13(12) के साथ सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, 2002 के साथ पढ़ते हुए प्राप्त अधिकारों का उपयोग करके कर्जदार **प्रेम कुमार और लालसा देवी** को **08.12.2021** की सूचना में वर्णन के अनुसार **कर्ज खाता नं. P034OXXIII (आईएचएफएल का पूर्व कर्ज खाता नं. HHLNOD00496238)** की राशि **रू. 47,09,131.94 (रूपये सैंतालीस लाख नौ हजार एक सौ इकतीस और चौरानबे पैसे मात्र)** और **24.11.2021**के अनुसार उस पर ब्याज उक्त सूचना की प्राप्ती की तारीख से स्पष्ट 60 दिनों के भीतर चुकता करने का आवाहन करते हुए अभियाचना सूचना जारी की थी । इसके अलावा **आईएचएफएल** ने **इंडियाबुल्स एसेट रिकन्स्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड** के पक्ष में **इंडियाबुल्स एआरसी –XXIII ट्रस्ट के ट्रस्टी** के रूप में उपरोक्त कर्ज खाते के अपने सभी अधिकार, शीर्षक और ब्याज **31.12.2021** को एक असाइनमेंट समझौते के माध्यम से सौपा है, इसके अलावा **इंडियाबुल्स एसेट रिकन्स्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड, इंडियाबुल्स एआरसी –XXIII ट्रस्ट के ट्रस्टी** ने दिनांक **29.06.2022** के असाइनमेंट करार के माध्यम से **एसेट केअर एंड रिकन्स्ट्रक्शन एंटरप्राईज लिमिटेड ("एसीआरई")** के पक्ष में उपरोक्त कर्ज खाते के अपने सभी अधिकार, शीर्षक और ब्याज और कर्ज खाता जिसे **एसीआरई** की पुस्तकों में कर्ज खाता नं.**P034OXXIII** के रूप में पुन: क्रमांकित किया गया है, सौंपा है ।
धनराशि चुकता करने में कर्जदारों के असफल रहने पर एतद्द्वारा कर्जदार और सर्व सामान्य जनता को सूचना दी जाती है कि, अधोहस्ताक्षरी ने उक्त कानून की धारा 13 की उप-धारा 4 के साथ उक्त कानून के नियम 8 के तहत सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, **2002** के तहत प्राप्त अधिकारों का कार्यान्वयन करके **15.07.2024** को संपत्ति पर **सांकेतिक आधिपत्य** कर लिया है ।
विशेषत: कर्जदारों और सामान्यत: जनता को एतद्द्वारा संपत्ति के साथ सौदा नहीं करने के लिए सावधान किया जाता है और संपत्ति के साथ कोई भी सौदा राशि **रू. 47,09,131.94 (रूपये सैंतालीस लाख नौ हजार एक सौ इकतीस और चौरानबे पैसे मात्र) 24.11.2021** के अनुसार और उस पर ब्याज के साथ **असेट्स केअर एन्ड रिकन्स्ट्रक्शन एन्टरप्राइजेस लि.** के आधीन होगा.
उधारकर्ताओ का ध्यान अधिनियम की धारा 13 की उप-धारा (8) के अन्तर्गत संपत्ति / संपत्तियों को मुक्त कराने के लिए उपलब्ध समय की ओर आमंत्रित किया जाता है।

अचल संपत्ति का विवरण
संपूर्ण दूसरी मंजिल (छत के अधिकार के साथ), जिसका कवर्ड क्षेत्र 84 स्क्वे. मीटर्स, प्लॉट नंबर आर-6/241 पर बना, जिसका मापित क्षेत्र 213.33 स्क्वे. यार्डस, राज नगर की आवासीय कॉलोनी में स्थित, सेक्टर 06, तहसिल और जिला गाज़ियाबाद - 201017, उत्तर प्रदेश।
प्लॉट नंबर आर-6/241 पर घर निम्ननुसार परिबध्द है –
पूर्व में : प्लॉट नंबर 240 पश्चिम में : प्लॉट नंबर 242
उत्तर में : 12 फीट चौड़ी सर्विस लेन दक्षिण में : 30 फीट चौड़ी सड़क और पार्क

सही/-
प्राधिकृत अधिकारी
दिनांक : 15.07.2024 **असेट्स केअर एन्ड रिकन्स्ट्रक्शन एन्टरप्राइजेस लि.**
स्थान : गाज़ियाबाद **(102- ट्रस्ट)**

किसी भी शिकायत के लिए आप **श्री मोहम्मद शारिक मलिक,** शिकायत निवारण अधिकारी, फोन नंबर **011-66115609**, ईमेल: **complaint@acreindia.in** से संपर्क कर सकते हैं। संगठन के अंतर्गत शिकायत निवारण तंत्र विस्तृत रुप से **https://www.acreindia.in/compliance** पर देखी जा सकती है।

एसेट केअर एंड रिकन्स्ट्रक्शन एंटरप्राईज लिमिटेड ("एसीआरई")
CIN : U65993DL2002PLC115769
पंजीकृत कार्यालय: 14वीं मंजिल, ईआरओएस कॉर्पोरेट टॉवर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली-110019. ई-मेल: acre.arc@acreindia.in,वेबसाइट: www.acreindia.in
कॉर्पोरेट कार्यालय: यूनिट नंबर 502, सी विंग, वन बीकेसी, प्लॉट नंबर सी - 66, जी - ब्लॉक, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स, मुंबई – 400051. फोन: 022 68643101

कब्जा सूचना
(अचल संपत्ति हेतु)

जब कि,
इंडियाबुल्स हाउसिंग फायनान्स लिमिटेड ("आईएचएफएल") प्राधिकृत अधिकारी होने के नाते सिक्योरिटाइजेशन एंड रिकन्स्ट्रक्शन ऑफ फायनांशियल असेट्स एंड एन्फोर्समेंट ऑफ सिक्योरिटी इंटरेस्ट ऐक्ट, 2002 के अंतर्गत और नियम 3 के साथ धारा 13(12) के साथ सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, 2002 के साथ पढ़ते हुए प्राप्त अधिकारों का उपयोग करके कर्जदार **ज्योति मनोचा और जोगेन्दर कुमार मनोचा** को **11.07.2018** की सूचना में वर्णन के अनुसार **कर्ज खाता नं. HHLNOI00251390** की राशि **रू. 14,32,764/- (रूपए चौदह लाख बत्तीस हजार सात सौ चौसठ मात्र)** और **10.07.2018** के अनुसार उस पर ब्याज उक्त सूचना की प्राप्ती की तारीख से स्पष्ट 60दिनों के भीतर चुकता करने का आवाहन करते हुए अभियाचना सूचना जारी की थी । इसके अलावा **आईएचएफएल** ने दिनांक **27.06.2023** के असाइनमेंट करार के माध्यम से **एसेट केअर एंड रिकन्स्ट्रक्शन एंटरप्राईज लिमिटेड ("एसीआरई")** के पक्ष में उपरोक्त कर्ज खाते के अपने सभी अधिकार, शीर्षक और ब्याज और कर्ज खाता सौपा है, जिसे सुधार अनुबंध दिनांक **04.08.2023** के साथ पढ़े ।
धनराशि चुकता करने में कर्जदारों के असफल रहने पर एतद्द्वारा कर्जदार और सर्व सामान्य जनता को सूचना दी जाती है कि, अधोहस्ताक्षरी ने उक्त कानून की धारा 13 की उप-धारा 4 के साथ उक्त कानून के नियम 8 के तहत सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, **2002** के तहत प्राप्त अधिकारों का कार्यान्वयन करके **15.07.2024** को संपत्ति पर **सांकेतिक आधिपत्य** कर लिया है ।
विशेषत: कर्जदारों और सामान्यत: जनता को एतद्द्वारा संपत्ति के साथ सौदा नहीं करने के लिए सावधान किया जाता है और संपत्ति के साथ कोई भी सौदा राशि **रू. 14,32,764/- (रूपए चौदह लाख बत्तीस हजार सात सौ चौसठ मात्र) 10.07.2018** के अनुसार और उस पर ब्याज के साथ **असेट्स केअर एन्ड रिकन्स्ट्रक्शन एन्टरप्राइजेस लि.** के आधीन होगा.
उधारकर्ताओ का ध्यान अधिनियम की धारा 13 की उप-धारा (8) के अन्तर्गत संपत्ति / संपत्तियों को मुक्त कराने के लिए उपलब्ध समय की ओर आमंत्रित किया जाता है।

अचल संपत्ति का विवरण
सुपरटेक स्पोर्ट्स विलेज नामक परियोजना में टावर-ए 1 और ब्लॉक-ए 1 में नौवीं मंजिल पर फ्लैट नं. 907 आवासीय परिसर जिसका सुपर एरिया माप 1048 स्क्वे. फीट, एक कवर्ड कार पार्किंग के साथ, प्लॉट नं. एससी-02 पर स्थित, सेक्टर-27, ग्रेटर नोएडा (पश्चिम) - 201308, उत्तर प्रदेश ।

सही/-
प्राधिकृत अधिकारी
दिनांक : 15.07.2024 **असेट्स केअर एन्ड रिकन्स्ट्रक्शन एन्टरप्राइजेस लि.**
स्थान : ग्रेटर नोएडा **(102- ट्रस्ट)**

किसी भी शिकायत के लिए आप **श्री मोहम्मद शारिक मलिक,** शिकायत निवारण अधिकारी, फोन नंबर 011-66115609, ईमेल: complaint@acreindia.in से संपर्क कर सकते हैं। संगठन के अंतर्गत शिकायत निवारण तंत्र विस्तृत रुप से https://www.acreindia.in/compliance पर देखी जा सकती है।

एसेट केअर एंड रिकन्स्ट्रक्शन एंटरप्राईज लिमिटेड ("एसीआरई")
CIN : U65993DL2002PLC115769
पंजीकृत कार्यालय: 14वीं मंजिल, ईआरओएस कॉर्पोरेट टॉवर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली-110019. ई-मेल: acre.arc@acreindia.in,वेबसाइट: www.acreindia.in
कॉर्पोरेट कार्यालय: यूनिट नंबर 502, सी विंग, वन बीकेसी, प्लॉट नंबर सी - 66, जी - ब्लॉक, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स, मुंबई – 400051. फोन: 022 68643101

कब्जा सूचना
(अचल संपत्ति हेतु)

जब कि,
इंडियाबुल्स हाउसिंग फायनान्स लिमिटेड ("आईएचएफएल") प्राधिकृत अधिकारी होने के नाते सिक्योरिटाइजेशन एंड रिकन्स्ट्रक्शन ऑफ फायनांशियल असेट्स एंड एन्फोर्समेंट ऑफ सिक्योरिटी इंटरेस्ट ऐक्ट, 2002 के अंतर्गत और नियम 3 के साथ धारा 13(12) के साथ सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, 2002 के साथ पढ़ते हुए प्राप्त अधिकारों का उपयोग करके कर्जदार **अजय कुमार पांडे और विनीता पांडे** को **18.06.2018** की सूचना में वर्णन के अनुसार **कर्ज खाता नं. HHLNOI00203328** की राशि **रू. 34,98,027/- (रूपए चौंतीस लाख अट्ठानवे हजार सत्ताईस मात्र)** और **18.06.2018** के अनुसार उस पर ब्याज उक्त सूचना की प्राप्ती की तारीख से स्पष्ट 60दिनों के भीतर चुकता करने का आवाहन करते हुए अभियाचना सूचना जारी की थी । इसके अलावा **आईएचएफएल** ने दिनांक **27.06.2023** के असाइनमेंट करार के माध्यम से **एसेट केअर एंड रिकन्स्ट्रक्शन एंटरप्राईज लिमिटेड ("एसीआरई")** के पक्ष में उपरोक्त कर्ज खाते के अपने सभी अधिकार, शीर्षक और ब्याज और कर्ज खाता सौपा है, जिसे सुधार अनुबंध दिनांक **04.08.2023** के साथ पढ़े ।
धनराशि चुकता करने में कर्जदारों के असफल रहने पर एतद्द्वारा कर्जदार और सर्व सामान्य जनता को सूचना दी जाती है कि, अधोहस्ताक्षरी ने उक्त कानून की धारा 13 की उप-धारा 4 के साथ उक्त कानून के नियम 8 के तहत सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, **2002** के तहत प्राप्त अधिकारों का कार्यान्वयन करके **15.07.2024** को संपत्ति पर **सांकेतिक आधिपत्य** कर लिया है ।
विशेषत: कर्जदारों और सामान्यत: जनता को एतद्द्वारा संपत्ति के साथ सौदा नहीं करने के लिए सावधान किया जाता है और संपत्ति के साथ कोई भी सौदा राशि **रू. 34,98,027/- (रूपए चौंतीस लाख अट्ठानवे हजार सत्ताईस मात्र) 18.06.2018** के अनुसार और उस पर ब्याज के साथ **असेट्स केअर एन्ड रिकन्स्ट्रक्शन एन्टरप्राइजेस लि.** के आधीन होगा.
उधारकर्ताओ का ध्यान अधिनियम की धारा 13 की उप-धारा (8) के अन्तर्गत संपत्ति / संपत्तियों को मुक्त कराने के लिए उपलब्ध समय की ओर आमंत्रित किया जाता है।

अचल संपत्ति का विवरण
सुपरटेक ईको विलेज, टावर-जे 2, सोलहवीं मंजिल पर, यूनिट/फ्लैट नं. 1604, सुपर एरिया 1175 स्क्वे. फीट, प्लॉट नं. जीएच-01, सेक्टर-16बी, ग्रेटर नोएडा, गौतम बुद्ध नगर-201308, उत्तर प्रदेश।

सही/-
प्राधिकृत अधिकारी
दिनांक : 15.07.2024 **असेट्स केअर एन्ड रिकन्स्ट्रक्शन एन्टरप्राइजेस लि.**
स्थान : ग्रेटर नोएडा **(102- ट्रस्ट)**

किसी भी शिकायत के लिए आप **श्री मोहम्मद शारिक मलिक,** शिकायत निवारण अधिकारी, फोन नंबर 011-66115609, ईमेल: complaint@acreindia.in से संपर्क कर सकते हैं। संगठन के अंतर्गत शिकायत निवारण तंत्र विस्तृत रुप से https://www.acreindia.in/compliance पर देखी जा सकती है।

एसेट केअर एंड रिकन्स्ट्रक्शन एंटरप्राईज लिमिटेड ("एसीआरई")
CIN : U65993DL2002PLC115769
पंजीकृत कार्यालय: 14वीं मंजिल, ईआरओएस कॉर्पोरेट टॉवर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली-110019. ई-मेल: acre.arc@acreindia.in,वेबसाइट: www.acreindia.in
कॉर्पोरेट कार्यालय: यूनिट नंबर 502, सी विंग, वन बीकेसी, प्लॉट नंबर सी - 66, जी - ब्लॉक, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स, मुंबई – 400051. फोन: 022 68643101

कब्जा सूचना
(अचल संपत्ति हेतु)

जब कि,
एसेट केअर एंड रिकन्स्ट्रक्शन एंटरप्राईज लिमिटेड (CIN:U65993DL2002PLC115769) प्राधिकृत अधिकारी होने के नाते अधोहस्ताक्षरी ने सिक्योरिटाइजेशन एंड रिकन्स्ट्रक्शन ऑफ फायनांशियल असेट्स एंड एन्फोर्समेंट ऑफ सिक्योरिटी इंटरेस्ट ऐक्ट, 2002 के अंतर्गत और नियम 3 के साथ धारा 13(12) के साथ सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, 2002 के साथ पढ़ते हुए प्राप्त अधिकारों का उपयोग करके कर्जदार **अखिलेश कुमार पासवान, रंजना चौहान और सुशीला देवी** को **18.03.2024** की सूचना में वर्णन के अनुसार **कर्ज खाता नं. HHLNOD00232252** की राशि **रू. 57,94,041.80 (रूपये सत्तावन लाख चौरानबे हजार इकतालीस और अस्सी पैसे मात्र)** और **06.02.2024** के अनुसार उस पर ब्याज उक्त सूचना की प्राप्ती की तारीख से स्पष्ट 60 दिनों के भीतर चुकता करने का आवाहन करते हुए अभियाचना सूचना जारी की थी ।
धनराशि चुकता करने में कर्जदारों के असफल रहने पर एतद्द्वारा कर्जदार और सर्व सामान्य जनता को सूचना दी जाती है कि, अधोहस्ताक्षरी ने उक्त कानून की धारा 13 की उप-धारा 4 के साथ उक्त कानून के नियम 8 के तहत सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, **2002** के तहत प्राप्त अधिकारों का कार्यान्वयन करके **15.07.2024** को संपत्ति पर **सांकेतिक आधिपत्य** कर लिया है ।
विशेषत: कर्जदारों और सामान्यत: जनता को एतद्द्वारा संपत्ति के साथ सौदा नहीं करने के लिए सावधान किया जाता है और संपत्ति के साथ कोई भी सौदा राशि **रू. 57,94,041.80 (रूपये सत्तावन लाख चौरानबे हजार इकतालीस और अस्सी पैसे मात्र) 06.02.2024** के अनुसार और उस पर ब्याज के साथ **एसेट केअर एंड रिकन्स्ट्रक्शन एंटरप्राईज लिमिटेड** के आधीन होगा।
उधारकर्ताओ का ध्यान अधिनियम की धारा 13 की उप-धारा (8) के अन्तर्गत संपत्ति / संपत्तियों को मुक्त कराने के लिए उपलब्ध समय की ओर आमंत्रित किया जाता है।

अचल संपत्ति का विवरण
प्रोजेक्ट "द रोमानो" में, ब्लॉक ए -2 में छठी मंजिल पर, फ्लैट नं. 0601, सुपर एरिया 1020 स्क्वे. फीट, एक कवर्ड कार पार्किंग के साथ, प्लॉट नं. 001 पर स्थित, सेक्टर 118/जीएचपी , नोएडा, जिला गौतम बुद्ध नगर - 201301 उत्तर प्रदेश ।

सही/-
प्राधिकृत अधिकारी
दिनांक : 15.07.2024 **असेट्स केअर एन्ड रिकन्स्ट्रक्शन एन्टरप्राइजेस लि.**
स्थान : गौतम बुद्ध नगर **(102- ट्रस्ट)**

किसी भी शिकायत के लिए आप **श्री मोहम्मद शारिक मलिक,** शिकायत निवारण अधिकारी, फोन नंबर 011-66115609, ईमेल: complaint@acreindia.in से संपर्क कर सकते हैं। संगठन के अंतर्गत शिकायत निवारण तंत्र विस्तृत रुप से https://www.acreindia.in/compliance पर देखी जा सकती है।

एसेट केअर एंड रिकन्स्ट्रक्शन एंटरप्राईज लिमिटेड ("एसीआरई")
CIN : U65993DL2002PLC115769
पंजीकृत कार्यालय: 14वीं मंजिल, ईआरओएस कॉर्पोरेट टॉवर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली-110019. ई-मेल: acre.arc@acreindia.in,वेबसाइट: www.acreindia.in
कॉर्पोरेट कार्यालय: यूनिट नंबर 502, सी विंग, वन बीकेसी, प्लॉट नंबर सी - 66, जी - ब्लॉक, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स, मुंबई – 400051. फोन: 022 68643101

कब्जा सूचना
(अचल संपत्ति हेतु)

जब कि,
इंडियाबुल्स हाउसिंग फायनान्स लिमिटेड ("आईएचएफएल") प्राधिकृत अधिकारी होने के नाते सिक्योरिटाइजेशन एंड रिकन्स्ट्रक्शन ऑफ फायनांशियल असेट्स एंड एन्फोर्समेंट ऑफ सिक्योरिटी इंटरेस्ट ऐक्ट, 2002 के अंतर्गत और नियम 3 के साथ धारा 13(12) के साथ सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, 2002 के साथ पढ़ते हुए प्राप्त अधिकारों का उपयोग करके कर्जदार **अमित कुमार और प्रवीण लता** को **03.12.2019** की सूचना में वर्णन के अनुसार **कर्ज खाता नं. HHLMER00208561** की राशि **रू. 71,45,064/- (रूपए इकहत्तर लाख पैंतालीस हजार चौसठ मात्र)** और **03.12.2019** के अनुसार उस पर ब्याज उक्त सूचना की प्राप्ती की तारीख से स्पष्ट 60दिनों के भीतर चुकता करने का आवाहन करते हुए अभियाचना सूचना जारी की थी । इसके अलावा **आईएचएफएल** ने दिनांक **27.06.2023** के असाइनमेंट करार के माध्यम से **एसेट केअर एंड रिकन्स्ट्रक्शन एंटरप्राईज लिमिटेड ("एसीआरई")** के पक्ष में उपरोक्त कर्ज खाते के अपने सभी अधिकार, शीर्षक और ब्याज और कर्ज खाता सौपा है, जिसे सुधार अनुबंध दिनांक **04.08.2023** के साथ पढ़े ।
धनराशि चुकता करने में कर्जदारों के असफल रहने पर एतद्द्वारा कर्जदार और सर्व सामान्य जनता को सूचना दी जाती है कि, अधोहस्ताक्षरी ने उक्त कानून की धारा 13 की उप-धारा 4 के साथ उक्त कानून के नियम 8 के तहत सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, **2002** के तहत प्राप्त अधिकारों का कार्यान्वयन करके **15.07.2024** को संपत्ति पर **सांकेतिक आधिपत्य** कर लिया है ।
विशेषत: कर्जदारों और सामान्यत: जनता को एतद्द्वारा संपत्ति के साथ सौदा नहीं करने के लिए सावधान किया जाता है और संपत्ति के साथ कोई भी सौदा राशि **रू. 71,45,064/- (रूपए इकहत्तर लाख पैंतालीस हजार चौसठ मात्र) 03.12.2019** के अनुसार और उस पर ब्याज के साथ **असेट्स केअर एन्ड रिकन्स्ट्रक्शन एन्टरप्राइजेस लि.** के आधीन होगा.
उधारकर्ताओ का ध्यान अधिनियम की धारा 13 की उप-धारा (8) के अन्तर्गत संपत्ति / संपत्तियों को मुक्त कराने के लिए उपलब्ध समय की ओर आमंत्रित किया जाता है।

अचल संपत्ति का विवरण
"द रोमानो" नामक परियोजना में, ब्लॉक-एफ 1, पाँचवीं मंजिल पर फ्लैट नं. 0504, जिसका सुपर एरिया 1705 स्क्वे.फीट, एक कवर्ड हुई कार पार्किंग के साथ, प्लॉट नं. 001 में स्थित, सेक्टर-118/जीएचपी, नोएडा-201301, गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश ।

सही/-
प्राधिकृत अधिकारी
दिनांक : 15.07.2024 **असेट्स केअर एन्ड रिकन्स्ट्रक्शन एन्टरप्राइजेस लि.**
स्थान : गौतमबुद्ध नगर **(102- ट्रस्ट)**

किसी भी शिकायत के लिए आप **श्री मोहम्मद शारिक मलिक,** शिकायत निवारण अधिकारी, फोन नंबर 011-66115609, ईमेल: complaint@acreindia.in से संपर्क कर सकते हैं। संगठन के अंतर्गत शिकायत निवारण तंत्र विस्तृत रुप से https://www.acreindia.in/compliance पर देखी जा सकती है।

साइबर ठगी के शिकार हुए एडिशनल सेशन जज

- डिजिटल अरेस्ट कर मैसेजिंग एप्लिकेशन को 6 घंटे तक नियंत्रित किया
- न्यायाधीश ने निजी मोबाइल सेवा प्रदाता कंपनी पर खड़े किये सवाल

एजेंसी। नई दिल्ली

एक अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश ने साइबर अपराधियों द्वारा उनके फोन के मैसेजिंग एप्लिकेशन को नियंत्रित करके ठगी करने का आरोप लगाया है। न्यायाधीश द्वारा पुलिस में दर्ज शिकायत के अनुसार साइबर अपराधियों ने लगभग छह घंटे तक उनके मैसेजिंग एप्लिकेशन पर नियंत्रण रखा और इस दौरान इससे कॉल करके उनके दोस्तों से 1.10 लाख रुपये ठगे। अधिकारियों ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। रोहिणी जिला अदालत के न्यायाधीश ने शिकायत में यह भी जांच का अनुरोध किया है कि मैसेजिंग प्लेटफॉर्म से किसी ने उनकी शिकायत पर ध्यान क्यों नहीं दिया और उनके मोबाइल सेवा प्रदाता ने उनके नंबर से कॉल को किसी अज्ञात नंबर पर कैसे अग्रेषित किया। मामले में रोहिणी जिला साइबर पुलिस ने भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 318 (4) और 319 (2) के तहत एफआईआर दर्ज की गई। जिसमें किसी व्यक्ति को संपत्ति की आपूर्ति और प्रतिरूपण के जरिए बेईमानी से प्रेरित करके धोखाधड़ी से संबंधित है। अपनी शिकायत में, न्यायाधीश ने कहा कि 11 जुलाई को दोपहर 12:35 बजे, उन्हें अपने मोबाइल फोन पर अज्ञात नंबर से कॉल आया और बताया गया कि एक 'कूरियर बॉय' बैंक के दस्तावेज देने के लिए उनके घर के बाहर इंतजार कर रहा है। रोहिणी साइबर पुलिस द्वारा साझा की गई एफआईआर के अनुसार, अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश (एएसजे) को 'कूरियर बॉय' को कॉल करने के लिए कहा गया ताकि वह अपने घर पर सुरक्षा गार्ड को दस्तावेज सौंप सके और एसएमएस के माध्यम से उनके फोन पर एक नंबर भेजा गया। एएसजे ने कहा कि वह कुछ दस्तावेजों की प्रतीक्षा कर रहे थे और चूंकि वह अपने न्यायिक कार्य में व्यस्त थे, इसलिए वह उनके जाल में फंस गए और नंबर पर कॉल किया। न्यायाधीश के पास एसएमएस का स्क्रीनशॉट है। जब उन्होंने नंबर पर कॉल किया, तो उनका मैसेजिंग एप्लिकेशन अकाउंट तुरंत दूसरे डिवाइस पर पंजीकृत हो गया, जिसके लिए मुझे एक एसएमएस मिला। मेरे कॉल और एसएमएस कथित (अज्ञात) नंबर पर डायवर्ट किए गए।

न्यायाधीश ने कहा, इस बीच, मुझे पता चला कि एक व्यक्ति ने मेरे मैसेजिंग अकाउंट का उपयोग करके पैसे मांगना शुरू कर दिया है। मैंने तुरंत रोहिणी के साइबर पुलिस स्टेशन से पुलिस अधिकारी को फोन किया। न्यायाधीश ने अपना बैंक खाता भी ब्लॉक करवा दिया। अधिकारियों ने एफआईआर का हवाला देते हुए कहा कि वह साइबर पुलिस टीम की मदद से शाम 5.20 बजे अपने मैसेजिंग एप्लिकेशन को फिर से एक्सेस कर पाए। उन्होंने कहा कि यह पाया गया कि उनके मैसेजिंग अकाउंट को आखिरी बार बिहार के सीवान में एक स्थान से एक्सेस किया गया था और दोपहर 12:35 बजे की कॉल झारखंड के जमशेदपुर के पास एक स्थान पर ट्रेस की गई थी। एएसजे ने कहा कि इससे पहले कि वह अपने मैसेजिंग अकाउंट को फिर से एक्सेस कर पाते, उन्हें पता चला कि मेरे दो दोस्तों ने 1.10 लाख रुपये ट्रांसफर किए हैं। उन्होंने अपनी शिकायत में कहा कि मेरे डिवाइस से ईमेल के माध्यम से मैसेजिंग एप्लिकेशन सपोर्ट सर्विस के साथ भी शिकायत की गई थी, जिसे सपोर्ट सर्विस ने प्राप्त किया था।

एफआईआर में कहा गया है, मैसेजिंग सर्विस के नोडल अधिकारी से भी संपर्क किया गया, लेकिन उन्होंने फोन नहीं उठाया और दिल्ली पुलिस के एक जांच अधिकारी ने भी उनके सरकारी ईमेल पते के माध्यम से एक ईमेल भेजा।जज ने पुलिस को बताया कि ईमेल भेजने और वित्तीय धोखाधड़ी होने का उल्लेख करने के बाद भी मैसेजिंग एप्लीकेशन ने उनके अकाउंट को सस्पेंड नहीं किया। एफआईआर में लिखा है, यह अनुरोध किया जाता है कि उस मैसेजिंग एप्लीकेशन की भूमिका की भी जांच की जाए कि मेरी विशेष शिकायत के बावजूद उन्होंने मेरा अनुरोध क्यों स्वीकार नहीं किया। बाद में मुझे एहसास हुआ कि आरोपी व्यक्ति ने मेरे कॉल को अपने नंबर पर फॉरवर्ड किया है। इसमें कहा गया, यह आश्चर्यजनक है कि मोबाइल नेटवर्क सेवा प्रदाता ने यह भी नहीं पूछा कि क्या मैं इसके बारे में निश्चित हूं और कुछ ही सेकंड में मेरे कॉल को किसी अज्ञात नंबर पर फॉरवर्ड कर दिया, जो मेरी संपर्क सूची में भी नहीं था।

छात्रों को लीडर बनाते है प्रिंसिपलः आतिशी

- शिक्षा मंत्री ने 200 प्रधानाचार्यों से किया संवाद

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

मौजूदा सत्र में केजरीवाल सरकार के स्कूलों में सीखने संबंधी लक्ष्य और रणनीति तय करने के लिए शिक्षा मंत्री आतिशी ने गुरुवार को दिल्ली सरकार के स्कूलों के प्रिंसिपलो के साथ संवाद किया। वीर सावरकर सर्वोदय कन्या विद्यालय, कालकाजी में आयोजित इस कार्यक्रम में दिल्ली सरकार व दिल्ली सरकार द्वारा सहायता प्राप्त स्कूलों के 200 से अधिक प्रिंसिपलों ने भाग लिया।

इस मौक़े पर प्रिंसिपलों ने साझा किया कि कैसे अनूठे तरीकों को अपनाते हुए उन्होंने अपने स्कूलों में बच्चों के अटेंडेंस को बढ़ाया, व्यक्तिगत रूप से ध्यान देते हुए बच्चों के रिजल्ट में सुधार किया, उनकी आदतों को बदलने का काम किया, टीचर्स को गाइड किया और स्कूल में सीखने सीखाने का शानदार माहौल तैयार किया, पैरेंट्स को बच्चों की पढ़ाई में भागीदार बनाया।

स्कूल में बेहतर वातावरण बनाने के लिए प्रिंसिपलों द्वारा उठाए गए कदमों की शिक्षा मंत्री ने सराहना की। प्रिंसिपलों को संबोधित करते हुए शिक्षा मंत्री आतिशी ने कहा कि प्रिंसिपल सिर्फ़ एडमिनिस्ट्रेटर नहीं बल्कि स्कूल लीडर के रूप में जमीनी स्तर पर बच्चों के जीवन में असल बदलाव लाने का काम करते है। प्रिंसिपल होना एक बहुत ही चुनौती भरा कार्य है लेकिन उनके काम और मेहनत की बदौलत हजारों बच्चों की जिन्दगी संवरती है। उन्होंने आगे कहा कि किसी भी स्कूल में सबसे बड़े बदलाव लाने का काम वहां के प्रिंसिपल ही कर सकते है। प्रिंसिपल स्कूल का जिस दिशा में नेतृत्व करेंगे स्कूल में वैसे बदलाव ही देखने को मिलेंगे। उन्होंने कहा कि एक प्रिंसिपल का व्यक्तित्व जैसा होता है स्कूल का वातावरण भी वैसा ही होता है।

नौवीं में 17 हजार छात्र दूसरी बार फेल : सचदेवा

- कहा शिक्षा मंत्री के विश्वस्तरीय दावों की खोल दी पोल

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

प्रदेश भाजपा ने दिल्ली सरकार के विश्वस्तरीय शिक्षा व्यवस्था के दावों निशाना साधा है। दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की दिल्ली सरकार के स्कूलों के कक्षा नौवीं के नतीजों में करीब 17 हजार से अधिक छात्रों के दूसरी बार फेल होने से शिक्षा मंत्री के वर्ल्ड क्लास शिक्षा के दावों की पोल खोल दी है।

उन्होंने कहा कि भाजपा लगातार कहती रही है की केजरीवाल सरकार के स्कूलों में शिक्षा स्तर बदहाल है और खासकर नौवीं एवं ग्यारहवीं में सरकार जानबूझकर कर बड़ी संख्या में कमजोर छात्रों को फेल करती है ताकि कम से कम छात्र दसवीं की परीक्षा दें और सरकार दसवीं एवं बारहवीं का नतीजा अच्छा दिखा सके।भाजपा नेता ने कहा कि अब जो नौवीं के आंकड़े सामने आये हैं। उससे स्पष्ट है कि आम आदमी पार्टी की सरकार द्वारा हजारों शिक्षकों को पढ़ाने की ड्यूटी से हटा कर प्रशासनिक एवं अन्य कामों में लगाने से शिक्षा का स्तर गिर गया है। शर्मनाक है की दिल्ली सरकार छात्रों को पास होकर आगे जाने के लिए प्रोत्साहित करने की जगह छात्रों को ओपन स्कूल में जाने को बाध्य कर रही है। शिक्षा मंत्री आतिशी को इस मुद्दे पर जवाब देना चाहिए कि जो छात्र नियमित स्कूल से नहीं पढ़ पा रहे वह बिना ट्यूशन के ओपन स्कूल से कैसे पढ़ पायेंगे।

कविता की जांच एम्स में कराने के आदेश

नई दिल्ली। दिल्ली की एक अदालत ने आबकारी से जुड़े मामले में तिहाड़ जेल में बंद भारत राष्ट्र समिति नेता के. कविता को चिकित्सा जांच के लिए एम्स रेफर किया।

एक अधिकारी ने बताया कि बीआरएस विधान पार्षद कविता को महिलाओं से जुड़ी समस्या और तेज बुखार होने पर दीनदयाल उपाध्याय अस्पताल ले जाया गया था। करीब दो घंटे तक अस्पताल में रखने के बाद उन्हें वापस जेल भेज दिया गया था। अपराह्न चार बजकर करीब 30 मिनट पर कविता को स्त्री संबंधी समस्याओं और तेज बुखार के कारण डीडीयू अस्पताल ले जाया गया।

वकीलों संग सीएम की अतिरिक्त बैठकों पर फैसला सुरक्षित

- उच्च न्यायालय की अदालत ने आबकारी नीति मामले में बृहस्पतिवार को की सुनवाई

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली उच्च न्यायालय ने आबकारी नीति मामले में गिरफ्तार मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की उस याचिका पर बृहस्पतिवार को अपना आदेश सुरक्षित रख लिया, जिसमें उन्होंने वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए अपने वकीलों के साथ दो अतिरिक्त बैठकों की अनुमति दिए जाने का अनुरोध किया है।

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) और तिहाड़ जेल के अधिकारियों ने इस कदम का विरोध किया और कहा कि कानून सभी के लिए समान है। आम आदमी पार्टी (आप) नेता केजरीवाल के वकील ने कहा कि वह देशभर में लगभग 35 मामलों का सामना कर रहे हैं और निष्पक्ष सुनवाई के लिए उन्हें इन मामलों पर चर्चा के लिए वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए अपने वकीलों के साथ दो अतिरिक्त बैठकें करने की जरूरत है। केजरीवाल की याचिका का विरोध करते हुए तिहाड़ जेल के अधिकारियों ने दलील दी कि ऐसे कई कैदी हैं जिनके खिलाफ 100 मामले लंबित हैं और उन्हें अपने वकीलों से केवल दो बार मुलाकात की अनुमति है।

ईडी ने आरोप लगाया कि केजरीवाल वकीलों के साथ अपनी बैठकों का इस्तेमाल दिल्ली सरकार के मंत्रियों को निर्देश भेजने के लिए कर रहे थे। सभी पक्षों की दलीलें सुनने के बाद न्यायमूर्ति नीना बंसल कृष्णा ने कहा कि वह आदेश सुरक्षित रख रही हैं और आदेश चैंबर में पारित किया जाएगा। केजरीवाल की याचिका का विरोध करते हुए जेल अधिकारियों के वकील ने कहा कि उन्होंने शुरू में अपने वकीलों के साथ केवल दो अतिरिक्त भौतिक मुलाकातों की अनुमति का अनुरोध किया था और अब वह दो और ऑनलाइन मुलाकात चाहते हैं।

मेट्रो स्टेशन से महिला सड़क पर कूदी, मौत

नई दिल्ली। दिल्ली में उत्तम नगर वेस्ट मेट्रो स्टेशन के प्लेटफॉर्म से बृहस्पतिवार दोपहर एक महिला ने कथित रूप से सड़क पर छलांग लगा दी जिससे उसकी मौत हो गई।

पुलिस ने बताया कि पीड़िता को दीन दयाल उपाध्याय अस्पताल ले जाया गया जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। महिला की पहचान सुनिश्चित करने की कोशिश की जा रही है और माना जा रहा है कि उसकी उम्र 40-45 साल है। पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि उसके पास से ऐसा कुछ नहीं मिला है जिससे उसकी पहचान हो सके। मेट्रो स्टेशन और आसपास के इलाकों की सीसीटीवी फुटेज की जांच की जा रही है।

आरएमएल में मरीजों को मिलेंगी नई सुविधाएं

- ओपीडी रजिस्ट्रेशन काउंटर की संख्या 23 हुई

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

अटल बिहारी वाजपेई इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (एबीवीआईएमएस) और डॉ. राम मनोहर लोहिया (आरएमएल) अस्पताल में गुरुवार को केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव डॉक्टर अपूर्व चंद्रा ने कई नई सेवाओं का उद्घाटन किया।

नए ओपीडी रजिस्ट्रेशन हॉल, फार्मेसी काउंटर, वेटिंग एरिया और मेडिकल छात्रों के लिए बैठने की अधिक क्षमता वाला रीडिंग रूम शुरू करना शामिल है। नई सुविधाओं से हर दिन ओपीडी में आने वाले करीब 8000 मरीजों को लाभ मिलेगा। ओपीडी रजिस्ट्रेशन काउंटर की संख्या नौ से 23 कर दी गई है। इस अवसर पर डॉ. (प्रो.) अजय शुक्ला, निदेशक एवं चिकित्सा अधीक्षक, डॉ. (प्रो.) आरती मारिया, डीन, डॉ. (प्रो.) मनोज झा, डॉ. नीरा शर्मा, डॉ. बीके कुंडू, डॉ. आर. के. मोदी, डॉ. शरद पांडेय समेत विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष उपस्थित थे।

बाल मजदूरों को बचाने के लिए कार्रवाई की जाएगी: आप

नई दिल्ली। आप सरकार ने बृहस्पतिवार को उच्च न्यायालय को आश्वासन दिया कि देश के विभिन्न भागों से तस्करी कर लाए और यहां बंधुआ मजदूरी करने को मजबूर नाबालिगों को बचाने के लिए ठोस सूचना मिलने पर कार्रवाई की जाएगी।

कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश मनमोहन और न्यायमूर्ति तुषार राव गेडेला की पीठ ने कहा कि यह यह प्राथमिकता वाला विषय है। उच्च न्यायालय एक जनहित याचिका पर सुनवाई कर रहा था जिसमें अनुरोध किया गया है कि बंधुआ मजदूरों के रूप में काम कर रहे एक हजार से अधिक नाबालिगों को बचाने के लिए अधिकारियों को निर्देश दिए जाएं।

ट्रांसपोर्ट आफिस में डकैती के मामले में 12 धरे

- साढ़े तीन करोड़ की हुई थी लूट

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

राजधानी के गुलाबी बाग इलाके में एक ट्रांसपोर्टर के कार्यालय से बंदूक दिखाकर 3.5 करोड़ रुपये लूटने के आरोप में 12 लोगों को दिल्ली पुलिस ने गिरफ्तार किया है।पुलिस ने बृहस्पतिवार को इसकी जानकारी दी, इसके अनुसार, यह घटना पिछले सप्ताह किशनगंज इलाके में हुई थी, जब कुछ लोग ट्रांसपोर्टर के कार्यालय में घुसे और बंदूक दिखाकर लूटपाट की।

पुलिस उपायुक्त (उत्तर) मनोज कुमार मीना ने कहा कि पुलिस ने 1.5 करोड़ रुपये बरामद कर लिए हैं और लूट के मामले में आठ लोगों को गिरफ्तार किया गया, जबकि चार को पहले ही गिरफ्तार कर लिया गया था। ज्ञात रहे कि 11 जुलाई को गुलाबी बाग थाने में किशनगंज इलाके में एक ट्रांसपोर्ट कंपनी के कार्यालय में नकदी लूटने के संबंध में एक पीसीआर कॉल मिली थी। जांच में पता चला कि 11 जुलाई को रात करीब 10:45 बजे सात से आठ लोग अपने चेहरे पर कपड़ा बांधे हुए थे और उनके पास बंदूक और चाकू थे, वे बीकानेर असम रोडलाइन्स इंडिया लिमिटेड के कार्यालय में जबरन घुस गए और कार्यालय में मौजूद कर्मचारियों को घेर लिया।

आरआरटीएस स्टेशनों पर एक साथ खड़े हो सकेंगे 8 हजार वाहन

- दिल्ली-मेरठ मार्ग पर कम होगा निजी गाड़ियों का भार

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

एनसीआरटीसी ने यात्रियों की सुविधा के लिए स्टेशन पार्किंग क्षेत्रों में पर्याप्त स्थान प्रदान कर रही है, ताकि यात्री अपने निजी वाहनों को पार्किंग में खड़ा करके नमो भारत ट्रेनों की आरामदायक, सुरक्षित और विश्वसनीय सवारी का आनंद ले सकें। इससे न केवल दिल्ली-मेरठ मार्ग पर निजी वाहनों का भार काफी कम होगा, बल्कि सड़क दुर्घटनाओं को भी रोकने में सहयोग मिलेगा। इसके साथ ही वायु प्रदूषण को भी कम करने में मदद मिलेगी। आरआरटीएस कॉरिडोर पर तैयार किए जा रहे पार्किंग स्थलों में 1,600 से अधिक चौपहिया और 6,500 से अधिक दुपहिया वाहनों के खड़ा करने की सुविधा होगी।

इन पार्किंग स्थलों पर सिर्फ पिक और ड्रॉप के लिए आने वाले वाहनों के लिए शुरुआती 10 मिनट तक कोई शुल्क नहीं है। 10 मिनट के बाद और 6 घंटों तक साइकिल के लिए 5 रुपए, दुपहिया वाहनों के लिए 10 रुपए और चौपहिया वाहनों के लिए 25 रुपए।

6 से 12 घंटे के लिए साइकिल के लिए 5 रुपये, दुपहिया वाहनों के लिए 25 रुपये और कारों के लिए 50 रुपये और 12 घंटे के बाद आरआरटीएस संचालन के घंटे समाप्त होने तक, साइकिल के लिए 10 रुपये, दुपहिया वाहनों के लिए 30 रुपये और कारों के लिए 100 रुपये। नॉन ऑपरेशनल घंटों के दौरान नाइट पार्किंग का चार्ज साइकिल के लिए 20 रुपये, दुपहिया वाहनों के लिए 60 रुपये और कारों के लिए 200 रुपये होगा।

अनुमान है कि सम्पूर्ण दिल्ली-मेरठ कॉरिडोर तैयार होने के बाद सार्वजनिक परिवहन के उपयोग को बढ़ावा मिलेगा, जिससे सार्वजनिक परिवहन उपयोग की मौजूदा 37 प्रतिशत की हिस्सेदारी बढ़कर 63 प्रतिशत तक हो जाएगी।

एनसीआरटीसी यात्रियों को लास्ट माइल कनेक्टिविटी के विभिन्न विकल्प प्रदान करने पर भी काम कर रही है, जिसके लिए हाल ही में सभी 25 स्टेशनों पर विभिन्न प्रकार की फीडर सेवाएं प्रदान करने के लिए अभिरुचि की अभिव्यक्ति आमंत्रित की गई है। दिल्ली से मेरठ तक पूरे आरआरटीएस कॉरिडोर पर 25 स्टेशन हैं। इन स्टेशनों पर अपेक्षित फुटफाल को ध्यान में रखते हुए पार्किंग स्थान विकसित किए जा रहे हैं। आरआरटीएस स्टेशनों पर सबसे बड़ी पार्किंग मेरठ साउथ स्टेशन में बनाई जा चुकी है, जहां करीब 300 कारें और 900 दुपहिया वाहन पार्क किए जा सकते हैं। वहीं दूसरी सबसे बड़ी पार्किंग दिल्ली के सराय काले खां स्टेशन पर विकसित की जा रही है, जहां करीब 275 कारें और 900 दुपहिया वाहन पार्क किए जा सकेंगे।

इस कॉरिडोर का 34 किलोमीटर का हिस्सा पहले से ही 8 आरआरटीएस स्टेशनों के साथ जनता के लिए संचालित है, जहां यात्रियों को पार्किंग की सुविधा प्रदान की गई है। इन पार्किंग स्थलों में ऑटो रिक्शा पार्क करने की सुविधा भी उपलब्ध है। स्टेशनों पर पिक-अप और ड्रॉप-ऑफ सुविधा के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं। स्टेशनों को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि मुख्य सड़क से आने वाले वाहन आसानी से स्टेशन पर यात्रियों को ले और छोड़ सकें।

लंच नहीं कर सकेंगे दिल्ली कौशल विवि के छात्र

नई दिल्ली। दिल्ली कौशल एवं उद्यमिता विश्वविद्यालय (डीएसईयू) ने दोपहर का भोजनावकाश जैसी कोई चीज नहीं होती जैसे प्रसिद्ध मुहावरे को गंभीरता से लेते हुए अपनी समय सारिणी से दोपहर के भोजनावकाश को हटा दिया और लगातार एक के बाद एक कर, पूरे आठ घंटे की कक्षाएं लगा दी है।

विश्वविद्यालय ने हाल ही में एक अधिसूचना जारी कर विद्यार्थियों को दिया जाने वाला आधे घंटे का भोजनावकाश हटा दिया है। विश्वविद्यालय, सौंदर्यशास्त्र एवं सौंदर्य चिकित्सा में बीएससी और सुविधाएं एवं स्वच्छता प्रबंधन में बीबीए जैसे कौशल आधारित पाठ्यक्रम प्रदान करता है।

आप का आरोप, भाजपा संसद गरीबों की झुग्गियां तुड़वा रहे

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

आम आदमी पार्टी (आप) ने बृहस्पतिवार को आरोप लगाया कि भाजपा सांसद अपनी पार्टी की केंद्र सरकार के तहत आने वाले विभागों से गरीबों के मकान तुड़वाकर उन्हें बेघर बना रहे हैं।

आप के नेता और विधायक दुर्गेश पाठक ने संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि सिविल लाइंस में मकान अवैध रूप से ढहाए गए और आजादी के बाद से वहां रह रहे लोगों को बेघर कर दिया गया। उन्होंने कहा, अब रेलवे ने 22 जुलाई को बरार स्क्वायर की झुग्गियों को तोड़ने का नोटिस दिया है, लेकिन नई दिल्ली से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की सांसद बांसुरी स्वराज वहां लोगों से मिलने नहीं गईं। भाजपा ने आप के आरोपों पर फिलहाल कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है।

पाठक ने आरोप लगाया, कुछ दिन पहले ही डीडीए ने सिविल लाइंस इलाके में हजारों लोगों के मकानों को ध्वस्त कर दिया था। वहीं केंद्र सरकार के रेलवे विभाग ने 22 जुलाई से पहले बरार स्क्वायर में रेलवे ट्रैक के पास लोहा मंडी, बुध नगर, इंद्रपुरी में हजारों झुग्गियों को तोड़ने का नोटिस लगा दिया है।

सरकार आबोहवा दुरुस्त करने में विफल : विजेंद्र

- बोले, प्रदूषण सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल के स्तर तक पहुंच गया है

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

रोहिणी के विधायक विजेंद्र गुप्ता ने उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना को पत्र लिखकर दिल्ली में गंभीर प्रदूषण पर चिंता व्यक्त की है। उन्होंने दावा किया कि यहां प्रदूषण का इतना बुरा हाल है कि वह सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल के स्तर तक बढ़ गया है।

बिगड़ती वायु गुणवत्ता ने लोगों के स्वास्थ्य को बुरी तरह प्रभावित किया है। गुप्ता ने पत्र में कहा है कि इस संकट के बावजूद, आम आदमी पार्टी सरकार कोई प्रभावी समाधान प्रस्तावित करने या लागू करने में विफल रही है। इसके बजाय, वे लोगों के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को पूरी तरह से नजरअंदाज करते हुए भाजपा पर दोषारोपण में लगे हुए हैं। पिछले एक दशक में इस समस्या से निपटने के लिए रचनात्मक रणनीतियों का पूर्ण अभाव रहा है।

विजेंद्र गुप्ता ने एक आरटीआई का जिक्र करते हुए कहा कि दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति की स्थिति के बारे में चौंकाने वाली जानकारी सामने आई है। सूचना के अधिकार के तहत मिली जानकारी से पता चला कि जून 2024 तक, डीपीसीसी के कर्मचारियों की संख्या घटकर 107 नियमित कर्मचारी और 87 संविदा कर्मचारी रह गई थी। जो पिछले वर्ष के कर्मचारियों की तुलना में काफी कम है। पिछले वर्ष 111 नियमित और 122 संविदा कर्मचारी काम कर रहे थे। कर्मचारियों की संख्या में हुई कटौती का संज्ञान लेते हुए कहा है कि इसका मतलब यह है कि डीपीसीसी वर्तमान में कर्मचारियों की स्वीकृत क्षमता के केवल 54 फीसदी के साथ काम कर रही है, जिससे शहर में गंभीर प्रदूषण चुनौतियों को प्रभावी ढंग से निपटने की इसकी क्षमता गंभीर रूप से बाधित हो रही है। जिसका खामियाजा जनता को भुगतना पड़ रहा है। सांस, दमा, खांसी और एलर्जी जैसी प्रदूषण जनित बीमारियों से लोगों का जीवन दूभर हो गया है।

गुप्ता ने कहा है कि दिल्ली दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों में से एक बन गई है, यह जरूरी है कि प्रदूषण को कम करने के लिए तत्काल और ठोस कदम उठाए जाएं।

संक्षिप्त समाचार

मेयर से मिले मैक्सिको के राजदूत फेडेरिको

नई दिल्ली। भारत में मैक्सिको के राजदूत एचई. फेडेरिको सालास लोटफे और गुआनागुआटो के सामाजिक संचार के महासमन्वयक एलन साहिर मार्केज़ बेसेरा (वर्चुअल निर्वाचित प्रतिनिधि) के नेतृत्व में मैक्सिको के गुआनागुआटो राज्य सरकार के एक प्रतिनिधिमंडल ने महापौर डॉ. शेली ओबेरॉय से मुलाकात की। गुआनागुआटो राज्य सरकार के प्रतिनिधिमंडल ने यह जानने में गहरी दिलचस्पी दिखाई कि स्थानीय निकाय किस तरह से पार्कों, वृक्षारोपण, विकास और प्रबंधन का रखरखाव कर रहा है और सरकारी सेवाओं में प्रौद्योगिकी का उपयोग कैसे किया जा रहा है। उन्होंने इस बात पर भी चर्चा की कि भारत और मैक्सिको के बीच पर्यटन को कैसे आसान बनाया जा सकता है। डॉ. शेली ओबेरॉय ने प्रतिनिधिमंडल को बताया कि दिल्ली नगर निगम की प्राथमिक जिम्मेदारी शहर की सफाई व्यवस्था को बनाए रखना, नागरिकों को प्राथमिक शिक्षा, प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना, 1000 से अधिक पार्कों का रखरखाव करना आदि है।

कैंसर के लक्षणों की जानकारी की साझा

नई दिल्ली। आदर्श ऑडिटोरियम में आयोजित एक कार्यक्रम में कैंसर के लक्षणों के बारे में जानकारी साझा की गई। कार्यक्रम में पुलिसकर्मी और उनके परिवार मौजूद रहे। एपिजेनेरेस बायोटेक प्राइवेट लिमिटेड के सह-संस्थापक और प्रबंध निदेशक अनीष त्रिपाठी ने कैंसर को रोकने और एहतियाती उपायों के बारे में जानकारी दी। सत्र के बाद पुलिस कर्मियों और उनके परिवारों ने कैंसर के बारे में सवाल पूछे। सत्र को पीएफडब्ल्यूएस फेसबुक और यूट्यूब चैनल पर भी लाइव स्ट्रीम किया गया। आदर्श सभागार में 400 से अधिक पुलिस परिवारों ने सत्र में भाग लिया, जबकि 1500 से अधिक पुलिस कर्मियों ने वेबेक्स और सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के माध्यम से सत्र में भाग लिया। सभी पुलिस कर्मियों और उनके परिवारों ने कार्यक्रम की सराहना की। परिवारों ने सभी के लाभ के लिए भविष्य में भी ऐसे सूचनात्मक सत्र आयोजित करने की इच्छा व्यक्त की।

एलजी की अगुवाई में 2023-24 में लगे 89 लाख पौधे

नई दिल्ली। उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने बृहस्पतिवार को राजधानी में वनीकरण/पौधरोपण और विभिन्न स्थानों को हरा-भरा करने के कार्य की विस्तृत समीक्षा की। ज्ञात रहे कि एलजी के निर्देशन में वर्ष 2023-24 के दौरान 89 लाख पौधे लगाए गए थे। उन्होंने पिछले दो वर्षों में इस दिशा में किए कार्यों की समीक्षा करते हुए, आगे की रणनीति के संबंध में अधिकारियों को निर्देश भी दिए। एलजी सक्सेना के सीधे हस्तक्षेप से, जहां 2022-23 के दौरान, दिल्ली में 48 लाख पेड़ और श्रब्स लगाई गई, वहीं 2023-24 के दौरान यह संख्या बढ़कर 89 लाख हो गई।

राव दान सिंह के ठिकानों पर ईडी की छापेमारी

प्रवर्तन निदेशालय की टीम 1,392 करोड़ रुपये के कथित बैंक ऋण धोखाधड़ी मामले में कर रही है जांच

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

गुरुग्राम के सेक्टर-17 स्थित कांग्रेस नेता राव दान सिंह के आवास पर तैनात सुरक्षाकर्मी, यहां ईडी ने छापेमारी की।

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने गुरुवार को महेंद्रगढ़ से विधायक एवं लोकसभा चुनाव 2024 में कांग्रेस के प्रत्याशी रहे राव दान सिंह से जुड़े ठिकानों पर छापेमारी करने पहुंची। ईडी ने गुरुग्राम समेत चार जिलों में यह छापेमारी, जांच की। गुरुग्राम के सेक्टर-17 स्थित उनके आवास पर ईडी ने घंटों तक छानबीन की। इस दौरान कड़ी सुरक्षा की गई।

ईडी की टीम ने गुरुग्राम के अलावा दिल्ली, बहादुरगढ़, रेवाड़ी और महेंद्रगढ़ में राव दान सिंह के व उनके करीबियों के करीब 15 ठिकानों पर छापेमारी करते हुए तलाशी ली। सूत्रों के अनुसार ईडी को कथित तौर यह जानकारी मिली है कि राव दान सिंह के बेटे के स्वामित्व वाली कुछ कंपनियों ने मेटल फैब्रिकेटिंग कंपनी एलाइड स्ट्रिप्स लिमिटेड (एएसएल) से ऋण लिया था, जिसे बाद में माफ कर दिया गया। ईडी की टीम 1,392 करोड़ रुपये के कथित बैंक ऋण धोखाधड़ी मामले से जुड़ी मनी लॉन्ड्रिंग जांच के तहत मेटल फैब्रिकेटिंग कंपनी एलाइड स्ट्रिप्स लिमिटेड (एएसएल) और उसके प्रमोटर मोहिंदर अग्रवाल, गौरव अग्रवाल और कुछ अन्य के ठिकानों की भी तलाशी लेने पहुंची। जहां-जहां ईडी की टीम पहुंची, वहां पर सुरक्षा कड़ी की गई। किसी को भी परिसर में प्रवेश या बाहर जाने की अनुमति नहीं दी गई।

सूत्रों के अनुसार राव दान सिंह के परिवार का नाम आदर्श सहकारी सोसायटी घोटाले की ईडी की जांच में सामने आया था। वर्ष 2019 में ईडी की जयपुर शाखा ने इस मामले की जांच स्वयं शुरू की थी। जांच में एक कंपनी का नाम उजागर हुआ। इस कंपनी ने रेवाड़ी, महेंद्रगढ़ और नारनौल इलाकों में जमीन खरीदी थी। इस मामले में 100 से ज्यादा लोग ईडी के रडार पर हैं। इनमें राव दान सिंह का बेट अक्षत राव भी है।

कांग्रेस ने बताया बदले की भावना से की गई कार्रवाई

महेंद्रगढ़ के विधायक राव दान सिंह ने भिवानी-महेंद्रगढ़ सीट से कांग्रेस के उम्मीदवार के रूप में 2024 का लोकसभा चुनाव लड़ा था। वे भाजपा प्रत्याशी धर्मबीर सिंह से हार गए थे। लोकसभा चुनाव प्रचार के दौरान राव दान सिंह ने कहा था कि उनके परिवार का इस मामले से कोई संबंध नहीं है। उनके बेटे के खिलाफ मामला भी बंद कर दिया गया है। उन्होंने यह भी बताया कि उनके बेटे का नाम एक कंपनी के साथ लेन-देन के कारण ईडी की जांच में आया था। कथित घोटाले में उनकी कोई भूमिका नहीं यह छापेमारी महेंद्रगढ़ में हरियाणा सरकार द्वारा आयोजित पिछड़े वर्गों के सम्मान सम्मेलन में पहुंचे केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के दौरे के दो दिन बाद हुई है। ईडी की इस कार्यवाही को कांग्रेस बदले की भावना कह रही है।

गुरुग्राम में यातायात सुचारू रूप से संचालन के लिए सड़क पर गिरे पेड़ को हटाते पुलिसकर्मी।

यातायात पुलिस ने हटाए सड़क पर गिरे पेड़

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

पुलिस उपायुक्त यातायात विरेंद्र विज के मार्गदर्शन में कार्य करते हुए सहायक पुलिस आयुक्त यातायात मुख्यालय/हाईवे विकास कुमार की देखरेख में यातायात पुलिस द्वारा बरसात के दौरान सड़क पर गिरे हुए पेड़ों और टहनियों को हटाकर यातायात सुचारू कराया।

अधिक बरसात होने पर पुराने पेड़ टूटकर सड़क पर गिर जाते हैं, जिससे यातायात अवरुद्ध हो जाता है। इस प्रकार की समस्याओं के तुरंत समाधान के लिए यातायात पुलिस गुरुग्राम ने पूरी तरह से कमर कस रखी है। किसी भी समय किसी भी रोड पर यदि पेड़ टूटकर गिर जाता है तो पुलिस उसको यातायात कर्मचारियों व सम्बन्धित विभाग के साथ संपर्क करके जल्दी से जल्दी उस सड़क पर यातायात का संचालन सुचारू रूप से करती है। बरसात के दौरान एक पेड़ टूट कर सड़क पर गिर गया था, जिसको जोनल अधिकारी एमजी रोड सुमेर सिंह ने तुरंत हटवाया। इसी तरह सेक्टर-31 रेड लाइट पर एक पेड़ टूट कर सड़क पर गिर गया था, जिसको जोनल अधिकारी धर्मेन्द्र सिंह ने हटवाया।

ऑटोमोटिव सेक्टर के महत्व को नहीं किया जा सकता नजरंदाज: कुरैशी

इंडियन कॉमर्शियल व्हीकल कॉन्क्लेव में मुख्य अतिथि भारी उद्योग मंत्रालय के अतिरिक्त सचिव डॉ. हनीफ कुरैशी को स्मृति चिन्ह भेंट करते आयोजक।

- इंडियन कॉमर्शियल व्हीकल कॉन्क्लेव के कार्यक्रम में बोले, भारी उद्योग मंत्रालय के अतिरिक्त सचिव

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

भारत सरकार के भारी उद्योग मंत्रालय के अतिरिक्त सचिव डॉ. हनीफ कुरैशी ने कहा कि ऑटोमोटिव सेक्टर के महत्व को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। देश की जीडीपी में इसका 7 प्रतिशत योगदान है। इसमें बड़े पैमाने पर रोजगार सृजित होते हैं। भारत सरकार इस तथ्य को समझती है। इसीलिए वैकल्पिक ईंधन से चलने वाले पावरट्रेन की ओर कदम बढ़ाने और ग्रीन ट्रांसपोर्टेशन के महत्व को बढ़ावा दे रही है। यह बात उन्होंने इंडियन कॉमर्शियल व्हीकल कॉन्क्लेव के तीसरे संस्करण में कही।

गुरुग्राम में आयोजित इस कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि पावरट्रेन की ओर कदम बढ़ाने और ग्रीन ट्रांसपोर्टेशन के महत्व को बढ़ावा देने के लिए पीएलआई जैसी स्कीम चलाई जा रही हैं, जो न केवल ऑटोमोटिव ओईएम के लिए बल्कि कंपोनेंट मैन्यूफैक्चरिंग की पूरी वैल्यू चेन के लिए लाभकारी हैं। उन्होंने इंडियन कॉमर्शियल व्हीकल कॉन्क्लेव जैसे मंच तैयार करने के लिए सीआईआई की सराहना की। ऐसे प्लेटफॉर्म से उद्योग एवं सरकार के बीच विचारों के आदान-प्रदान के अवसर बनते हैं। इस अवसर पर सीआईआई आईसीवीसी के चेयरमैन एवं टाटा मोटर्स लिमिटेड के एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर गिरीश वाघ ने कहा कि भारत का सीवी उद्योग एक बदलावकारी मोड़ पर है। जिसे सरकार की महत्वाकांक्षी नीतियों, तेजी से हो रहे शहरीकरण और आर्थिक विकास से गति मिल रही है।

वाघ ने कई महत्वपूर्ण आंकड़े सामने रखे और भारत में सीवी उद्योग के मौजूदा परिवर्तनकारी चरण के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि 2031 तक भारत की शहरी आबादी 60 करोड़ तक पहुंच जाएगी, जिससे कंस्ट्रक्शन, लॉजिस्टिक्स और सार्वजनिक परिवहन जैसे सेक्टर में सीवी की मांग बढ़ेगी। यहां 6-7 प्रतिशत की अनुमानित विकास दर और मेक इन इंडिया जैसी पहल से भी भारी एवं हल्के वाणिज्यिक वाहनों की मांग बढ़ी है।

मंत्री के दर से निराश लौटीं नर्सिंग ऑफिसर्स करेंगी आंदोलन

- अपनी मांगों को लेकर हिसार में स्वास्थ्य मंत्री के घर पहुंची थीं नर्सिंग ऑफिसर्स
- बार-बार समय देकर भी उनकी मांगों को नहीं किया जा रहा पूरा

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम/हिसार

स्वास्थ्य मंत्री डॉ. कमल गुप्ता के कार्यालय पर अपनी मांगों को लेकर पहुंचीं नर्सिंग ऑफिसर्स।

ऑल नर्सिंग ऑफिसर्स वेलफेयर एसोसिएशन हरियाणा की ओर से स्वास्थ्य मंत्री के आवास पर जाकर उनके समक्ष अपनी मांगें रखी गईं। उनकी मांगों को सुनकर स्वास्थ्य मंत्री ने कोई संतोषजनक, ठोस जवाब नहीं दिया। इससे प्रदेश में सभी नर्सिंग ऑफिसर्स में रोष है।

ऑल नर्सिंग ऑफिसर वेलफेयर एसोसिएशन हरियाणा की प्रधान सुनीता ने बताया कि गुरुवार को एसोसिएशन सेक्रेटरी सन्तोष अहलावत, महेंदरी, पुष्पा, प्रोमिला, शारदा, नरेश, रेखा, सरोज, मीना दलाल आदि हिसार स्थित स्वास्थ्य मंत्री डा. कमल गुप्ता के कार्यालय पर पहुंचे। इस दौरान स्वास्थ्य मंत्री से मुलाकात हुई। इस मुलाकात में भी स्वास्थ्य मंत्री की ओर से पहले की तरह कोई संतोषजनक जवाब नहीं दिया गया। बार-बार इस तरह से होने पर नर्सिंग एसोसिएशन ने रोष जताया है। इसके विरोध में अब नर्सिंग ऑफिसर्स आंदोलन की राह पकड़ेंगे। प्रधान सुनीता ने बताया कि 26 जून को भी एसोसिएशन की ओर से मांग पत्र स्वास्थ्य मंत्री के विधानसभा कार्यालय में दिया गया था। उसके बाद भी कोई कार्यवाही नहीं हुई। इसके बाद 10 जुलाई को फिर से उन्हें विधानसभा में नर्सिंग ऑफिसर्स की मांगों से अवगत कराने के लिए गए। तब उनके निजी सचिव ने हिसार आने का समय दिया था। प्रधान सुनीता ने कार्यकारिणी से मंत्रणा करके घोषणा की कि 23 जुलाई को अस्पतालों में ड्यूटी पर काले बिल्ले लगाकर नर्सिंग ऑफिसर्स काम करते हुए विरोध जताएंगी। इसके बाद 28 जुलाई को सीएम सिटी में मुख्यमंत्री के कार्यालय का घेराव किया जाएगा।

मातृशक्ति उद्यमिता योजना से आत्मनिर्भर होंगी महिलाएं: उपायुक्त

गुरुग्राम। प्रदेश सरकार महिलाओ को सशक्त स्वावलंबी एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए विभिन्न प्रकार की कल्याणकारी योजनाएं चला रही है, जिनके माध्यम से महिलाओं को आर्थिक सहायता से लेकर स्वरोजगार स्थापित करने में सहायता प्रदान की जाती है।

डीसी निशांत कुमार यादव ने बताया कि हरियाणा सरकार ने महिला सशक्तिरण की दिशा में हरियाणा मातृशक्ति उद्यमिता योजना शुरू की है। इस योजना का लाभ महिलाओं को केवल तभी प्रदान किया जाएगा, जब उनकी पारिवारिक आय 5 लाख या फिर इससे कम हो, साथ ही महिला की आयु 18 से 60 वर्ष के बीच होनी चाहिए तथा वह पूर्व के किसी ऋण मामले में डिफाल्टर नहीं होनी चाहिए।

चहुंमुखी विकास कराना मेरा नैतिक कर्तव्य: मूलचंद शर्मा

कैबिनेट मंत्री ने किया 20 लाख रुपए की लागत से बनने वाली सड़क के निर्माण कार्य का शुभारंभ

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

उद्योग एवं वाणिज्य, श्रम, खाद्य नागरिक आपूर्ति व उपभोक्ता मामले तथा निर्वाचन मंत्री मूलचंद शर्मा ने आज वीरवार को बल्लभगढ़ विधानसभा के दौरे पर राव कालोनी में 20 लाख रुपए की लागत से बनने वाली सड़क के निर्माण कार्य की स्थानीय निवासियों के हाथों नारियल फुड़वाकर शुरुवात करवाई। यह कार्य नगर निगम द्वारा किया जाएगा।

कैबिनेट मंत्री मूलचंद शर्मा ने गुरुवार को बल्लभगढ़ विधानसभा के विभिन्न इलाकों का दौरा कर आमजन की समस्याओं को जानकार अधिकारियों को जल्द से जल्द उनका समाधान करने के निर्देश दिए। केबिनेट मंत्री ने सीवर लाइन की सफाई व्यवस्था को लेकर कहा कि प्रशासन ने सीवर की सफाई का कार्य शुरू कर दिया है, जल्द ही इन लाइनों की सफाई की जाएगी। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि सीवर लाइनों में मलवा डाल कर सीवर लाइन को रोकने और लोगो को दिक्कत करने वाले लोगों की निगरानी कर उनको पकड़कर उनपर उचित कार्यवाही की जाएगी। कैबिनेट मंत्री मूलचंद शर्मा ने कहाकि 2014 से पहले बल्लभगढ़ की दुर्दशा किसी से छुपी नहीं है।

प्रदेश सरकार के नेतृत्व में सभी गलियों और सड़को को पक्का बनवाया गया है और गलियों में इंटरलोकिंग टाइल्स की सड़क या गली की सड़क खराब होने पर उसे आरएमसी से बनवाया जा रहा है।

संक्षिप्त समाचार

समाधान शिविर में लोगों की समस्याएं सुनते डीसी निशांत कुमार यादव।

राजस्व रिकार्ड में पटल पर आया जाटौली का नाम

गुरुग्राम। राजस्व रिकार्ड में जाटौली गांव का नाम अब पटल पर आ गया है। जाटौली को अब पटौदी और हेलीमंडी से अलग दर्शाया गया है। गांव के मौजिज व्यक्तियों ने डीसी निशांत कुमार यादव का आभार व्यक्त किया है। लघु सचिवालय सभागार में आयोजित किए गए समाधान शिविर में जाटौली गांव के मौजिज व्यक्तियों ने बताया कि पटौदी नगर परिषद की हद का विस्तार होने के कारण उनके गांव को सरकारी रिकॉर्ड में दर्शाया नहीं जा रहा था। ग्रामवासियों ने इस संदर्भ में डीसी निशांत कुमार यादव के समक्ष गुहार लगाई थी। जिसके परिणामस्वरूप अब जाटौली के नाम को राजस्व रिकार्ड में अलग से दर्ज कर लिया गया है। ग्रामीणों ने इसके लिए डीसी का आभार व्यक्त किया। इसके अलावा ग्रामवासियों ने बताया कि गांव में पंचायती भूमि पर स्थापित एक निजी शिक्षण संस्थान बंद होने के कगार पर है। इसका सरकार से अधिग्रहण करवाया जाए। डीसी ने आश्वासन दिया कि इस मामले में शिक्षा विभाग से सलाह लेकर उचित कार्यवाही की जाएगी।

डा. विजय सिंह ने भूपेंद्र चौहान को दी शुभकामनाएं

हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग के सदस्य बनाए गए भूपेंद्र चौहान को शुभकामनाएं देते डा. विजय सिंह नंबरदार।

गुरुग्राम। हरियाणा राज्य कर्मचारी चयन आयोग के सदस्य नियुक्त होने वाले गुरुग्राम भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौहान को जाने-माने शिक्षाविद् एवं समाजसेवी डॉ. विजय सिंह नंबरदार ने शुभकामनाएं दी है। गुरुवार को चंडीगढ़ में हरियाणा भवन में भूपेंद्र चौहान को हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग का मेंबर बनने पर खुशी व्यक्त करते हुए डा. विजय ड्क्षसह नम्बरदार ने कहा कि इससे न केवल वजीरपुर गांव और आसपास के क्षेत्र का मान सम्मान बढ़ा है। हरियाणा के युवाओं को रोजगार देने तथा परीक्षा व साक्षात्कार में पारदर्शिता लाने के लिए भी भूपेंद्र चौहान अपने विशेष भूमिका निभाएंगे। हरियाणा भवन में हुए उनके शपथ ग्रहण समारोह में शामिल हुए डा. विजय सिंह नंबरदार ने भूपेंद्र सिंह चौहान को फूलों का गुलदस्ता भेंटकर उन्हें शुभकामनाएं दी। उनके साथ धर्म सिंह चौहान, समाज सेवक मनीष शर्मा एडवोकेट, तिलक राज चौहान, शेर सिंह चौहान, सुशील चौहान सुल्तानपुर, केलाश राघव बढा ने भी भूपेंद्र चौहान को शुभकामनाएं दीं।

गुरुग्राम यूनिवर्सिटी में चार नए पाठ्यक्रम शुरू

- विश्वविद्यालय और एसईएआरटी के बीच एमओयू साइन

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

स्कूल ऑफ एम्ब्रियोलॉजी एंड असिस्टेड रिप्रोडक्टिव टेक्नोलॉजी (एसईएआरटी) के साथ एमओयू साइन के बाद फाइलों का आदान-प्रदान करते अधिकारी।

क्लिनिकल एम्ब्रियोलॉजी में रोजगार की संभावनाओं को देखते हुए गुरुग्राम विश्वविद्यालय ने 4 नए पाठ्यक्रम शुरू करने का निर्णय लिया है। इसके लिए यूनिवर्सिटी ने गुरुवार को स्कूल ऑफ एम्ब्रियोलॉजी एंड असिस्टेड रिप्रोडक्टिव टेक्नोलॉजी (एसईएआरटी) के साथ एमओयू साइन किया। इसके तहत क्लिनिकल एम्ब्रियोलॉजी के क्षेत्र में रूचि रखने वाले जीयू के छात्रों के लिए सिधरावली स्थित एसईएआरटी के परिसर में विश्वविद्यालय का एक ऑफ साइट परिसर खोला गया है। इंस्टिट्यूट में खोले गए गुरुग्राम विश्वविद्यालय के इस ऑफ साइट परिसर में विवि के छात्र मास्टर ऑफ साइंस इन क्लिनिकल एम्ब्रियोलॉजी, बीएससी प्लस एमएससी इन क्लिनिकल एम्ब्रियोलॉजी (इंटीग्रेटेड), पीजी डिप्लोमा इन क्लिनिकल एम्ब्रियोलॉजी, डिप्लोमा (फेलोशिप) इन क्लिनिकल एआरटी आदि कोर्स कर सकेंगे।

सफाई मित्रों की सहायता के लिए नगर निगम ने शुरू किया सीवरेज वर्कर सहायता कार्यक्रम

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

नगर निगम के सफाई मित्रों को उपकरण उपलब्ध कराने के दौरान उनके साथ अतिरिक्त आयुक्त डा. बलप्रीत सिंह।

नगर निगम में सफाई मित्रों अर्थात सीवरेज का काम करने वाले कर्मचारियों की आजीविका और कल्याण को बढ़ाने के लिए रूट्स अपैरल्स प्राइवेट लिमिटेड के सहयोग से सीवरेज वर्कर सहायता कार्यक्रम (एसडब्ल्यूएपी) शुरू किया गया है। इस पहल का उद्देश्य व्यापक उपायों की एक श्रृंखला के माध्यम से सफाई कर्मचारियों और उनके परिवारों का उत्थान और सशक्तिकरण करना है।

इस पहल में सफाई मित्रों के लिए काम करने की स्थिति और जीवन की समग्र गुणवत्ता में सुधार करने के लिए डिजाइन किए गए कई प्रमुख कारक हैं।

इसके तहत वर्दी प्रदान करके यह सुनिश्चित करना है कि वे सम्मान और व्यावसायिकता के साथ अपने कर्तव्यों के लिए सुसज्जित हैं। इसके अतिरिक्त, कार्यक्रम सीवरेज प्रबंधन में उनके कौशल और दक्षता को बढ़ाने के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। एसडब्ल्यूएपी यह सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के साथ संबंध स्थापित करेगा, ताकि सफाई मित्रों को आवश्यक लाभ और सहायता मिले।

एक ही छत के नीचे मिल रहा समस्याओं का समाधान: डीसी

- जिला व उपमंडल मुख्यालय पर आयोजित किए जा रहे समाधान शिविर

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

जिला उपायुक्त नेहा सिंह के मार्गदर्शन में हर कार्यदिवस पर जिला व उपमंडल स्तर पर सुबह 9 से 11 बजे तक समाधान शिविरों का आयोजन किया जा रहा है।

वीरवार को जिला सचिवालय स्थित सभागार में लगाए गए समाधान शिविर में एसडीमए नरेंद्र कुमार, जिला परिषद के कार्यकारी अधिकारी जितेंद्र कुमार, नगराधीश अप्रतिम सिंह व डीएसपी नरेश कुमार ने लोगों की शिकायतें सुनी तथा मौके पर उपस्थित संबंधित अधिकारियों को इन शिकायतों के यथाशीघ्र निपटारे के निर्देश दिए।

वीरवार को समाधान शिविर में 36 शिकायतें प्राप्त हुई, जिनमें से विभिन्न विभागों के अधिकारियों द्वारा 26 का मौके पर ही समाधान करवा दिया गया। जिला उपायुक्त नेहा सिंह ने बताया कि विभागों के अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि वे समाधान शिविर में आ रही शिकायतों का जल्द से निपटारा करना सुनिश्चित करें।

चार महीने में हुई सिर्फ 50 मीटर नाले की मरम्मत

घरों में घुस रहा है गंदा पानी, भाखरी गांव के लोग भुगत रहे रिलायंस कंपनी की मनमानी का खामियाजा

- परेशान नागरिक अधिकारियों को भेजेंगे घाघरा और चूड़ियां

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

बड़खल पाली रोड भांकरी चौक के लोग रिलांयस टोल कंपनी की कार्यशैली से खासे नाराज हैं। कारण पिछले लगभग 4 महीने से 50 मीटर नाला ही रिपेयर नहीं हो पाया है। जबकि रिलांयस टोल कंपनी 3 किलोमीटर रोड का टोल वसूल रही है।

समाजसेवी सतेन्द्र फागना व ग्रामीणों ने बताया कि रिलांयस टोल कंपनी एक चिनाई मिस्त्री और दो बेलदार के साथ पिछले लगभग 4 महीने से लगभग डेढ़ किलोमीटर की सड़क के दोनों तरफ़ के नालें को रिपेयर करने के काम में लगी हुई है लेकिन अभी तक 50 मीटर नाला ही रिपेयर हो पाया है। बरसात शुरू हुए लगभग महीना निकल चुका है भगवान के भरोसे काम चल रहा है। पुराने नाले की मरम्मत न होने से पानी घरों में घुस जाता है। इससे लोगों को अच्छी खासी परेशानी झेलनी पड़ रही है। बरसात का सीजन चल रहा है, ऐसे में यह नाला कब तक रिपेयर हो पाएगा, यह अभी तक तय नहीं है। टोल कम्पनी ने केवल 1 चिनाई मिस्त्री और 2 वेलदार इस काम पर लगाए हुए है। इससे यह काम और भी लम्बा खिंचता नजर आ रहा है। पीडब्ल्यूडी अधिकारी चैन की नींद सो रहे हैं। बारिश का पानी घरों में घुस गया, किसी भी अधिकारी ने इसकी सुध नहीं ली। अधिकारियों में इतनी हिम्मत नहीं कि इस कंपनी के खिलाफ कोई सख्त कार्यवाही कर सकें। गांव वालों ने निर्णय लिया है कि इन अधिकारियों को घाघरा और चूड़िया भेजी जाएंगी ताकि अधिकारी उन्हें पहनकर तालियां बजा कर मौजूदा सरकार का बंटाधार कर सके।

सभी सीटों पर अकेले लड़ेगी 'आप'

आप नेताओं ने किया चुनावी रणनीति का ऐलान, दिल्ली-पंजाब मॉडल को आगे रखकर मांगेंगे वोट

● पार्टी ने दिया नारा 'बदलेंगे हरियाणा का हाल अब लाएंगे केजरीवाल'

शिखा शर्मा। चंडीगढ़

आम आदमी पार्टी ने हरियाणा में होने वाले विधानसभा चुनाव अपने दम पर लड़ने का ऐलान कर दिया है। विधानसभा चुनाव में पार्टी किसी के साथ गठबंधन नहीं करेगी। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान, आम आदमी पार्टी के प्रदेशाध्यक्ष सुशील गुप्ता, पार्टी के नेता संजय सिंह तथा संदीप पाठक ने गुरुवार को चंडीगढ़ में पत्रकारों से बातचीत में हरियाणा की चुनावी रणनीति का ऐलान किया।

हालही में हुए लोकसभा चुनाव के दौरान आम आदमी पार्टी ने इंडिया गठबंधन के तहत हरियाणा में कांग्रेस के साथ मिलकर चुनाव लड़ा था। हरियाणा की दस लोकसभा सीटों में से नौ पर कांग्रेस तो एक पर आम आदमी पार्टी चुनाव लड़ी थी। आप के प्रदेशाध्यक्ष सुशील गुप्ता ने कुरुक्षेत्र से चुनाव लड़ा था। पार्टी ने आज हरियाणा के लिए नारा दिया है कि 'बदलेंगे हरियाणा का हाल, अब लाएंगे केजरीवाल'।

लोकसभा चुनाव के बाद कांग्रेस पहले ही गठबंधन समाप्त होने का ऐलान कर चुकी है। गुरुवार को आम आदमी पार्टी के नेताओं ने भी अपने बल पर चुनाव लड़ने का ऐलान करके साफ कर दिया कि इंडिया गठबंधन अब समाप्त हो चुका है।

पंजाब सीएम भगवंत मान ने कहा कि पार्टी पूरी ताकत से हरियाणा में विधानसभा चुनाव लड़ेगी। दिल्ली और पंजाब में हमारी सरकार है। हरियाणा का आधा हिस्सा पंजाब तो आधा हरियाणा के साथ लगता है। खास बात यह है कि आप सुप्रीमो हरियाणा से संबंध रखते हैं। भगवंत मान ने कहा मुख्यमंत्री होने के नाते मेरा भी फर्ज बनता है, जहां भी मेरी ड्यूटी लगेगी वहां मैं जाऊंगा। आधा हरियाणा तो पंजाबी बोलता है।

आप सांसद संजय सिंह ने कहा कि हरियाणा में पिछले दस साल से डबल इंजन की सरकार चल रही है। हरियाणा फिरौती उद्योग बना हुआ है। आंदोलन में किसानों को कुचला जा रहा है। हरियाणा की सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी की है। यहां जवान, किसान, व्यापारी व कर्मचारी कोई भी सरकार से खुश नहीं है।

आप के महासचिव संदीप पाठक ने कहा कि हरियाणा में हम हर सीट पर चुनाव लड़ेंगे। हम हरियाणा में अकेले सरकार बनाने के लिए चुनाव लड़ेंगे। उन्होंने कहा कि जनता बदलाव चाह रही है।

सरकारी योजनाओं को गरीबों तक पहुंचाने में सहयोग करें बैंक: दलाल

चंडीगढ़। हरियाणा के वित्त मंत्री जेपी दलाल ने बैंकों को आहवान किया है कि वह केंद्र व प्रदेश सरकार की योजनाओं का लाभ अधिक से अधिक लोगों को पहुंचाने में सरकार की मदद करें। वित्त मंत्री आज यहां सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के क्षेत्रीय प्रबंधक शीशराम तोंदवाल के नेतृत्व में आए बैंक अधिकारियों से बातचीत कर रहे थे। शिष्टमंडल में सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के एजीएम जी.के.बंटी, भिवानी के शाखा प्रबंधक रवीश कुमार व अन्य अधिकारी शामिल थे। वित्त मंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा समाज की अंतिम पंक्ति के व्यक्ति को सामान्य जीवन के साथ जोडने् के लिए कई योजनाएं शुरू की गई हैं जिनका क्रियान्वयन बैंकों के माध्यम से ही संभव हो सकता है। वित्त मंत्री ने कहा कि बैंकों को ऋण देने की शर्तों का सरलीकरण करना चाहिए। प्रदेश सरकार उन्हें हर संभव मदद करने के लिए तैयार है। दलाल ने कहा कि गरीब लोगों को सरकार द्वारा लागू की गई योजनाओं का लाभ दिलाने में बैंकों की भूमिका सबसे अहम है।

मां की शिक्षा-संस्कारों से ही मिल सकता है जीवन का हर सुख: नायब सिंह

● सीएम ने दलजीत कौर की अंतिम अरदास में अर्पित की श्रद्धांजलि

सौरभ चौधरी। शाहबाद

मुख्यमंत्री नायब सिंह ने कहा कि मां की शिक्षा और संस्कारों से जीवन का प्रत्येक सुख मिल सकता है। जीवन में सफलता हासिल करने के लिए मां के आदर्शों को जीवन में धारण करना जरुरी है। इन शिक्षाओं और संस्कारों के कारण ही विधायक संदीप सिंह ने पूरे विश्व में खेल के क्षेत्र में प्रदेश और देश का नाम रोशन किया है। इसलिए समाज स्वर्गीय दलजीत कौर द्वारा दिए गए संस्कारों और शिक्षाओं को हमेशा याद रखेगा।

मुख्यमंत्री नायब सिंह वीरवार को शाहबाद बराड़ा रोड़ पर स्थित गुरुद्वारा मंजी साहब में स्वर्गीय दलजीत कौर के अंतिम अरदास कार्यक्रम में बोल रहे थे। इससे पहले मुख्यमंत्री नायब सिंह, विधानसभा अध्यक्ष ज्ञानचंद गुप्ता, शहरी स्थानीय निकाय राज्यमंत्री सुभाष सुधा, राज्यसभा सांसद कृष्ण पंवार, विधायक घनश्याम दास अरोड़ा, पूर्व मंत्री कृष्ण बेदी, मुख्यमंत्री के राजनीतिक सलाहकार भारत भूषण भारती, विधायक रामकरण, भाजपा के प्रदेश नेता राहुल राणा, जिलाध्यक्ष रवि बतान, चेयरमैन धर्मवीर मिर्जापुर, जिप चेयरमैन कंवलजीत कौर ने स्वर्गीय दलजीत कौर की अंतिम अरदास में गुरु ग्रंथ साहिब के आगे शीश नवाया और फिर कौर की तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजली अर्पित की। पूर्व मंत्री एवं विधायक संदीप सिंह, समाज सेवी गुरचरण सिंह सहित परिवार के अन्य सदस्यों के साथ दुःख भी साझा किया।

मुख्यमंत्री नायब सिंह ने स्वर्गीय दलजीत कौर की श्रद्धांजलि सभा में प्रदेश सरकार की तरफ से शोक व्यक्त करते हुए कहा कि वाहेगुरु स्वर्गीय दलजीत कौर को अपने चरणों में स्थान दे और परिवार को दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे। विधानसभा अध्यक्ष ज्ञानचंद गुप्ता ने कहा कि स्वर्गीय दलजीत कौर का जीवन एक पवित्र आत्मा की तरह है। शहरी स्थानीय निकाय राज्यमंत्री सुभाष सुधा ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वाहेगुरु जी ने स्वर्गीय दलजीत कौर को एक धार्मिक यात्रा के दौरान अपने चरणों में बुला लिया।

देशभर में लागू होगा पावर का मनोहर मॉडल

● हाइड्रो-इलेक्ट्रिक परियोजनाओं के माध्यम से वर्ष 2030 तक 500 गीगावाट बिजली उत्पादन का है लक्ष्य

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

हरियाणा के बाद देश भर में मनोहर लाल का पावर मॉडल लागू होगा। केंद्रीय ऊर्जा, आवास एवं शहरी विकास मंत्री मनोहर लाल ने देश में बढ़ रही बिजली डिमांड पूरी करने की कवायद शुरू कर दी है। उत्तराखंड व हिमाचल प्रदेश में पनबिजली परियोजनाओं का रास्ता साफ हो गया है। वर्ष 2030 तक हाइड्रो-इलेक्ट्रिक परियोजनाओं के जरिए 500 गीगावाट बिजली उत्पादन का लक्ष्य रखा है। मोदी सरकार-3.0 में मनोहर लाल को देश के सबसे अहम मंत्रालयों में एक ऊर्जा मंत्रालय का दायित्व सौंपा गया है। ऊर्जा मंत्रालय का जिम्मा संभालते ही मनोहर लाल ने देश भर में बिजली परियोजनाओं से जुड़े कायरे को रफ्तार देना शुरु कर दिया है।

केंद्रीय ऊर्जा मंत्री ने बीते दिनों उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश में पनबिजली परियोजनाओं पर तेजी से काम करने की दिशा में कदम बढ़ाया है तो हाइड्रो-इलेक्ट्रिक परियोजनाओं के जरिए भी बिजली उत्पादन का लक्ष्य निर्धारित किया है। अनुमान लगाया जा रहा है कि 2035 में बिजली की डिमांड दोगुनी हो जाएगी। अलबत्ता, इस स्थिति को देखते हुए मनोहर लाल ने महत्वपूर्ण बिजली परियोजनाओं में उत्पादन बढ़ाने के साथ सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने का रोड मैप भी तैयार कर दिया है।

उत्तराखंड में टिहरी डैम की बढ़ाई जाएगी क्षमता: मनोहर लाल ने पिछले दिनों टिहरी गढ़वाल जिले में 1000 मेगावाट टिहरी पंप स्टोरेज प्लांट और 2400 मेगावाट टिहरी पावर कॉम्प्लेक्स में चल रही निर्माण गतिविधियों का निरीक्षण किया और तेजी से परियोजनाएं पूरी करने के निर्देश दिए। टीएचडीसीआईएल उत्तरी ग्रिड को सस्ती व स्वच्छ ऊर्जा प्रदान करने में सबसे आगे रहा है और सिंचाई से संबंधित लाभ प्रदान करने के अलावा बाढ़ नियंत्रण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

उत्तराखंड व हिमाचल के मुख्यमंत्रियों संग परियोजनाओं की हुई समीक्षा: केंद्रीय ऊर्जा मंत्री ने उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के साथ प्रदेश में चल रही बिजली परियोजनाओं की समीक्षा की। खासकर हाइड्रो सेक्टर के प्रोजेक्ट्स के साथ पनबिजली प्रोजेक्टों पर चर्चा हुई। सूबे में 2123 मेगावाट क्षमता की 21 जलविद्युत परियोजनाओं को मंजूरी दी गई, तो कुल 45 जल विद्युत परियोजनाएं चिन्हित की गई हैं, जिन पर विभागीय मंजूरी के बाद आगामी कार्रवाई की जाएगी।

17 करोड़ से सुधरेगी आंगनबाड़ी केंद्रों की दशा: असीम

चंडीगढ़। हरियाणा के महिला एवं बाल विकास मंत्री असीम गोयल नन्यौला ने कहा है कि आवश्यकता के अनुसार आंगनवाड़ियों के भवनों की मरम्मत की जाएगी और कई गांवों में नए भवनों का भी निर्माण किया जाएगा। प्रथम चरण में 1000 आंगनवाड़ियों के भवनों की मरम्मत और नवीनीकरण के लिए 17 करोड़ रुपए जारी कर दिए गए हैं। गुरुवार को असीम गोयल ने बताया कि भविष्य में जहां आंगनवाड़ियों के मौजूदा बुनियादी ढांचे को मजबूत किया जाएगा।

मनोहर ने किया डीजीपी की किताब का विमोचन

चंडीगढ़। हरियाणा के बिजली वितरण निगमों को घाटे से उबारकर मुनाफे में लाने वाले पुलिस महानिदेशक शत्रुजीत कपूर ने निगमों में रहते हुए अपने अनुभवों को लेकर एक पुस्तक 'वायर्ड फॉर सक्सेस' लिखी है। जिसका विमोचन केंद्रीय ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल द्वारा किया गया। इस अवसर पर दिल्ली हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति डी.के.शर्मा विशिष्ट अतिथि के तौर पर उपस्थित रहे। यह पुस्तक बिजली सुधारों की दिशा में किए गए प्रयासों पर आधारित है जिसका समाज के सभी वर्गों व अन्य राज्यों के बिजली वितरण निगमों को भी बड़े पैमाने पर लाभ होगा।

सफाई कर्मचारियों को मिले सरकारी योजनाओं का फायदा: कृष्ण

कुरुक्षेत्र। हरियाणा सफाई कर्मचारी आयोग के अध्यक्ष इंजीनियर कृष्ण कुमार ने कहा कि सफाई कर्मचारियों को सरकार की तमाम योजनाओं का समय रहते फायदा मिलना चाहिए। इसके साथ ही सफाई कर्मचारियों की तमाम समस्याओं का प्राथमिकता के आधार पर निवारण करना चाहिए। इस मामले में जरा सी भी कोताही सहन नहीं की जाएगी। आयोग के अध्यक्ष इंजीनियर कृष्ण कुमार वीरवार को न्यू लघु सचिवालय के सभागार में सफाई कर्मचारियों की समस्याएं सुनने के उपरांत अधिकारियों की एक बैठक को संबोधित कर रहे थे।

सुषमा बनी बाल कल्याण परिषद की मानद सचिव

चंडीगढ़। हरियाणा के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय ने फरीदाबाद निवासी सुषमा गुप्ता को बाल कल्याण परिषद की मानद महासचिव नियुक्त किया है। राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय ने गुरुवार को इस संबंध में आदेश जारी किए हैं। सुष्मा गुप्ता का कार्यकाल तीन वर्ष के लिए होगा। बाल कल्याण परिषद की मानद महासचिव सुषमा गुप्ता ने गुरुवार को सेक्टर-16 स्थित मुख्यालय में पदभार संभाला। फरीदाबाद निवासी सुषमा गुप्ता पिछले लंबे समय से सामाजिक कार्यों से जुड़ी हुई हैं। सुषमा गुप्ता के पास हरियाणा रेडक्रास में वाइस चेसरपर्सन का भी प्रभार है।

PUBLIC NOTICE

Notice is hereby given on behalf of **Mr. Ranbeer, Mr. Rajbeer and Mr. Vinod Kumar ss/o Rati Ram** who are owner of Property area measuring 5 Marla 4 Sarsai(160 sq. yds.) out of 95 Kanal 12 Marla (Kita-16) comprised in Khewat/Khata no.1179, situated at Village Bhondsi, Tehsil Sohna, District Gurugram, Haryana vide Sale Deed dated 11.06.2020 (vide Document No.400) at Sub-Registrar-Sohna,and intend to mortgage against the financial assistance from **Protium Finance Limited, that 1).** Initial Sale Deed in the name of Mrs. Mukesh Devi and 2). Sale Deed dated 24.04.2012, document no.580 are Lost/Misplaced/Not available. To comply the requirements of BANK/NBFC, we give this public notice that if any Person having any type of claim /right/title/interest/creating mortgage over the said property, may inform in writing, at the address mentioned below, about his objections, within **07 days** from today, failing which it shall be presumed that the said property is free from all type of Encumbrances, lien etc. **Lucem Legal LLP**
Plot No.136, (Basement) Uday Park, New Delhi-110049,Contact # 011-40046316

PUBLIC NOTICE

It is to informed to the public at large that Mrs. Chitrakshi Rai w/o Mr. Gaurav Rai (Adhar- 62940338 5850) R/o Villa no. 33, Tatvam Villas, Sector-48, Z Block, Gurgaon (Haryana), who is the ownerof property i.e. Property Bearing No. 40A (Old) & New No. 637, area measuring 380 Sq. Yds., Situated at Shivpuri, Opposite Sector-7, Gurugram (Haryana); hereinafter referred as the "said property", having acquired the sameby virtue of Transfer Deed dt. 02-08-2019 executed by Mr. Gaurav Rai in favour of his wife Mrs. Chitrakshi Rai (Document No. 4740, SRO-Gurugram). Against said Property, Axis Bank Ltd. (our client) is giving a Housing Loan to one Mr. Vivek Khurana S/o Sh. Surinder Khurana (Adhar-48263920 6760) R/o- 40/9, Shiv Puri, Opposite Sector-7, Gurgaon, (Haryana), who would purchase the said property from the Present owner i.e. Mrs. Chitrakshi Rai. It is hereby declared that title of the said Property, is absolutely valid, clear and marketable and there is no dispute/Litigation pending in any court of law, in respect of said Property. Whosoever, is having any objection to said mortgage OR any Person having any type of claim/right/title/interest over the said property may inform in writing, at the address mentioned below, about his objections, within 07days from today, failing which it shall be presumed that the said property is free from all type of Encumbrances, lien etc.

VIPUL KR. RAHEJA (Advocate) Ch. no. 55, Civil Side, Tis Hazari Courts, Delhi, Mob-9873150663.

PUBLIC NOTICE

It is informed to the public at large that my client Girdhari Lai Arora S/o Late D.L. Arora R/o 45-A, Vishal Enclave, DDA Flats, Mayapuri, New Delhi-110064 hereby declaring / debarring / disowning his son, namely Rajesh Arora and his wife Smt. Shilpa Arora from his life, properties and estate moveable or immoveable situated at Delhi and severed all his relations with him because he is not under the control of my client. My client and his family members will not be responsible/ liable for any act, deed and thing done by them.

TAJINDER SINGH (ADVOCATE)
Ch. No. V-7, Opp. SBI Bank Tis Hazari Courts, Delhi-110054

ICICI Bank | शाखा कार्यालयः आई सी आई सी आई बैंक लि. तीसरी मंजिल, प्लॉट नं. 23, न्यू रोहतक रोड, करोल बाग, दिल्ली–110005

सार्वजनिक सूचनाः
बिल्डर निरस्तीकरण

आपके ध्यान में लाया जाता है कि अमृता देवी / प्रदीप कुमार (उधारकर्ता/ओं) ने फ्लैट नं 12–007, भूतल, टॉवर/ब्लॉक 12, सेरेनस, सेक्टर 36, सोहना (दो पहिया वाहन के लिए खुली पार्किंग स्थल और सामान्य क्षेत्रों में आनुपातिक हिस्सेदारी के साथ) गुड़गांव 122103 में स्थित सुविधा समझौता सं. LBDEL00004865125 के अंतर्गत गृह ऋण सुविधा का लाभ उठाया है। उधारकर्ता/ओं समझौते के नियमों और शर्तों के अनुसार बिल्डर को संविदागत राशि का भुगतान करने में विफल रहा है।
बैंक उसकी सूचना कर्जदार को पत्र दिनांकित 11 जनवरी, 2023 के माध्यम से दे चुका है, जिसमें सूचित किया गया है कि स्टर्नल बिल्डकॉन प्राइवेट लिमिटेड ने उपरिवर्णित सम्पत्ति का आबंटन निरस्त कर दिया है। अतः आपसे अनुरोध किया जाता है कि बिल्डर के साथ यह मामला इस सूचना के प्रकाशन की तिथि से 7 दिन के भीतर सुलझा लें।
कृपया यह भी ध्यान दे कि उक्त संपत्ति के आबंटन निरस्त करने के पश्चात आईसीआईसीआई बैंक बिल्डर द्वारा किए गए किसी भी अन्य आवंटन के लिए बाध्य और/या उत्तरदायी नहीं होगा।
दिनांक : जुलाई 19, 2024 — कृते आई सी आई सी आई बैंक लिमिटेड
स्थानः दिल्ली/एनसीआर — हस्ता/–

Public Notice

This is to inform the general public that **Mr. Anshul Gupta** is the owner of **Flat no. 302 on 4th Floor, super area 1400 sq. ft., i.e., 130.111 sq. meters., on Plot no. B-3 & B-4, out of Khata no. 000127, Khasra no. 73-M, situated in Bhangel Begumpur, Sec-106, Noida, Tehsil Dadri, Distt. Gautam Budh Nagar, U.P.** through Sale Deed dated 11.07.2012 as doc. no. 3634 executed by M/S Nirman Construction through its Prop Mr. Maruti Kumar Sachan in favour of Mr. Anshul Gupta in respect of the said property.
Mr. Anshul Gupta intends to transfer the ownership by way of Sale Deed of aforementioned Flat to **Avdhesh Kumar Tripathi. Subsequently, Avdhesh Kumar Tripathi** is in the process of mortgaging the said **SMFG India Home Finance Co. Ltd.** *(Formerly Fullerton India Home Finance Co. Ltd.)* Any objections or concerns regarding this transaction should be raised within a period of 07 days from the date of this public notice. Any objections submitted after the completion of this 07-day period will not be considered binding with respect to the said property or the interests of our client.
If anyone wishes to raise an objection, please do so within the stipulated 07-day period by contacting **Law Veritas: North (Advocates & Legal Consultants) at Office No. 11, 1st Floor, Building No. A-44/A, Sector-16, Noida, Uttar Pradesh-201301; Landline(s): +910120-3101683; e-mail: accounts@lvnorth.in**

Public Notice

This is to inform general public that Institute of Environment and Management has acquired the Flat No. 378-A, on Ground Floor, having area measuring 17.7 Sq. Mts., situated in the Group Housing Scheme Shipra Sun City, Indirapuram, Ghaziabad, U.P. by way Lease Deed dated 30.12.2003, Doc no. 29469.
Documents related to the above said property has been misplaced i.e. Original Lease deed executed by GDA in favour of Institute of Environment and Management, through its authorized representative Mr. N. C. Srivastava in respect of the Said Property, vide Document No. 29469, in Book No. 1, Volume No. 3678, Page No. 69 to 90 on 30.12.2003, duly registered in Sub Registrar IV Ghaziabad. anyone who find the said documents shall handover the same to the Manager of Hinduja Housing Finance Ltd. Office Address: Office No. 311 & 312, ITL Northex Tower A-9, NSP, Pitampura, Delhi-110034 and Now, we are given to understand that Institute of Environment and Management intends to sell above said property to Mr. Ramesh Chandra Gupta and Mr. Sudha Chandra Gupta and both availing loan on above said property from Hinduja Housing Finance Ltd. & in case anyone has any objection, the same may be raised within 3 days of this publication to Mr. Pramod Kumar Singh (Advocate), AccuLaw Source LLP, Unit No. S-2-U, 2nd Floor, built on Plot no. 4 and 5, Ansal Utility Commercial Center, Paschim Vihar, New Delhi-110063 or contact at +91 9560309909 (M).

PUBLIC NOTICE

It is to informed to the public at large that one Mrs. Reetu (PAN-AOBPR2208C) w/o Sh. Rakesh Kumar r/o N-61-62, Gali no. 14, Bihari Colony, Shahdara, East Delhi, Delhi, who is the owner of property i.e.Entire Ground Floor Portion upto the extent of ceiling level, built on Property No. IV/2461, bearing part of Plot Nos. N-61 and N-62, area measuring 145 sq. yds., out of Khasra No. 648/420min, Situated in the area of Village Uldhanpur, abadi of Gali No.14, Behari Colony, Shahdara, Delhi-110032, here in after referred to as "said property", having acquired the same by virtue of Irrevocable General Power of Attorney with consideration executed by Mrs. Mona Jainduly registered as document No.3700 Book No.4 volume No.2691, pages 73 to 77 on dated 30.04.2008 in the office of S.R.VIII, Delhi. Against said Property, Axis Finance Ltd. (our client) is giving a Housing Loan to one Smt. Amrit Kaur wife of Shri Trilochan Singh r/o C-171, Street no.7, Shastri Park, Garhi Mandu, North East Delhi-110053 (PAN-NHRPK 0259J), who would purchase the said property from the Present owner i.e. Mrs. Reetu. It is hereby declared that title of the said Property, is absolutely valid, clear and marketable and there is no dispute / Litigation pending in any court of law, in respect of said Property. Whosoever, is having any objection to said mortgage OR any Person having any type of claim/right/title/interest over the said property may inform in writing, at the address mentioned below, about his objections, within 10 days from today, failing which it shall be presumed that the said property is free from all type of Encumbrances, lien etc.

VIPUL KR. RAHEJA (Advocate) Ch. no. 55, Civil Side, Tis Hazari Courts, Delhi Mob-9873150663"

PUBLIC NOTICE

The public at large is hereby informed that our customer Isha Goyal, Dinesh Goyal, Sandhya Aggarwal & Nitya Goyal Flat no B-1216,12TH floor, Block B, Windsor Paradise-II, Raj Nagar Extension, Ghaziabad is in the process of registration/sale deed. The said Flat was booked with the builder in the name of Late Smt. Sarla Goyal w/o Sh. Dinesh Goyal who died on 27th May'2023. After that Mr. Amit Goyal S/o of Sh. Dinesh Goyal became the registered owner of the said flat who also died on 12th Apr'2024. After the death of Sarla Goyal and Amit Goyal all legal heirs have requested Windsor paradise to register the sale deed of the said flat in the name of Isha Goyal, Dinesh Goyal, Sandhya Aggarwal & Nitya Goyal. Any person having any objection to this may please contact the Windsor paradise office, details as under within 30 days of issue of this Public Notice, after which no claims shall be entertained or accepted by Windsor paradise.

Windsor Paradise 2, Khasra no - 1007-1008, Noor Nagar Near River Height, Round About, Raj Nagar Extension, Ghaziabad, U.P. 201017

सांकेतिक कब्ज़े की सूचना

ICICI Bank | **शाखा कार्यालय :** आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड, प्लॉट नंबर–23, शॉल टॉवर, तीसरी मंजिल, न्यू रोहतक रोड, करोल बाग, नई दिल्ली– 110005

आईसीआईसीआई बैंक के प्राधिकृत अधिकारी द्वारा प्रतिभूतिकरण, वित्तीय आस्तियों का पुनर्निर्माण और प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 एवं प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियमावली, 2002 के नियम 3 सहित पठित धारा 13(12) के अंतर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए नीचे उल्लिखित कर्ज़दार(रों) को माँग सूचना निर्गमित की गई थी, उक्त सूचना में कहा गया था कि वे सूचना प्राप्ति की तारीख से 60 दिनों के भीतर सूचना में उल्लिखित राशि का भुगतान करें।
कर्ज़दार राशि चुकाने में विफल रहे हैं, अतएव कर्ज़दार और जनसाधारण को सूचित किया जाता है कि उक्त अधिनियम 8 सहित पठित धारा 13(4) के अंतर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए नीचे उल्लिखित तिथियों पर नीचे वर्णित संपत्ति का अधोहस्ताक्षरदाता द्वारा सांकेतिक कब्ज़ा ले लिया गया है। विशेष रूप से कर्ज़दार एवं जनसाधारण को संपत्ति के संव्यवहार नहीं करने हेतु सचेत किया जाता है तथा संपत्ति के साथ कोई भी संव्यवहार आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड के प्रभार के अधीन होगा।

क्र. सं.	कर्ज़दार/ सह–कर्ज़दार का नाम/ ऋण खाता क्र.	संपत्ति का विवरण/ सांकेतिक कब्ज़े की तिथि	डिमांड नोटिस की तिथि/ डिमांड नोटिस में राशि (रु.)	शाखा का नाम
1.	शशि कला/केशव कुमार/ LBDEL00004205111	फ्लैट नंबर– टी1–204, द्वितीय तल, टॉवर 1, ग्लोबल हिल व्यू, सेक्टर–11, सोहना, गुड़गाँव–122103/ जुलाई 12, 2024	जनवरी 17, 2024 रु. 12,59,178/-	दिल्ली/ एनसीआर
2.	हरीश कुमार सैनी/सविता/ LBDEL00004566695	फ्लैट और यूनिट नंबर जे–1203ए, प्रोजेक्ट का नाम–माहिरा होम्स, 13वीं मंजिल, टावर जे, सेक्टर–68 में स्थित, गाँव बादशाहपुर, गुड़गाँव, हरियाणा–122018/ जुलाई 12, 2024	फरवरी 23, 2024 रु. 18,83,759/-	दिल्ली/ एनसीआर

उपरोक्त कर्ज़दार(रों)/जमानतदार(रों) को राशि वापस करने के लिए 30 दिन का नोटिस जारी किया जाता है, अन्यथा बंधक रखी गई संपत्ति(याँ) प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियमावली, 2002 के नियम 8 और 9 के प्रावधानों के अनुसार इस नोटिस के प्रकाशन की तारीख से 30 दिनों के बाद नीलाम कर दी जाएगी।
दिनांक : जुलाई 19, 2024 — **भवदीय, अधिकृत हस्ताक्षरकर्ता**
स्थान : दिल्ली/एनसीआर — **आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड के लिए**

THE PIONEER CLASSIFIEDS

CHANGE OF NAME

I, Jyoti Mitra S/o Prof. Raghuvansh, R/o 49-B, Pocket-C, Gangotri Enclave, Alaknanda, Delhi-110019, have changed my name from Jyoti Mitra to Jyotimitra Raghuvansh for all future purposes.

PD(600)A

सार्वजनिक सूचना

एतदद्वारा सूचित करना है कि श्री रघुवीर, श्री श्यामी व श्री राम पाल पुत्रगण स्व0 श्री नत्थु निवासी ग्राम –याकूबपूर, जिला–गौमतबुद्धनगर (उ0प्र0) आवासीय प्लॉट नं. YP-035 ग्राम–याकूबपुर, सैक्टर–86, नोएडा जिला–गौमतबुद्धनगर के संयुक्त मालिक है। जिनके पंजीकृत वसीयतनामा के आधार पर जो कि उप निबन्धक कार्यालय–2, नोएडा में बही सं.3, जिल्द सं.314, क्रमांक सं.829, 830 व 832, पृष्ठ सं. 51–60, 61–70, 81–90, दिनांक 27.05.2011 को पंजीकृत है। आवासीय प्लॉट नं. YP-035 ग्राम–याकूबपुर, सैक्टर–86, नोएडा (उ0प्र0) वसीयतनामा के आधार पर निम्न व्यक्ति को ट्रान्सफर किया जा रहा है :–
1. रंजना पुत्री श्री फगुनी राम निवासी 2A, MIG ब्लॉक–बी, सैक्टर–99, नोएडा (उ0प्र0)
2. यदि इस संबंध में किसी व्यक्ति को किसी भी प्रकार की आपत्ति है तो कृपया अपनी आपत्ति, समस्त साक्ष्य सहित, नौएडा प्राधिकरण के आवासीय भूखण्ड विभाग में इस सूचना के प्रकाशन की तिथि से 30 दिन के अन्दर दाखिल कर दें।
रंजना

PUBLIC NOTICE

It is to inform to the public at large that Mr. Ravinder Chauhan has acquired Third Floor area measuring 100 sq. yrds., Southern side/rear portion, Built on Plot No. B-43, Khasra No. 259, situated at Vishwakarma Colony M.B. Road, New Delhi vide Regd. SPA dt. 09.07.2024 along with Regd. Will executed by Mr. Anish V. Cherian and Mrs. Sojimol, Now Mr. Ravinder Chauhan is the undisputed owner of above said property.
OR
Any person / firm / institution / company having any claim or right in respect of the said Property by way of inheritance, share, sale, agreement, lease, license, gift, possession, legal heirs, partners or encumbrance howsoever or otherwise is hereby required to intimate in writing to the undersigned within 07 days from the date of publication of this notice of his/her/their share or claim, if any, with all supporting documents at below mentioned address. After expiration of notice period, the claims, if any, of such person shall be treated null and void and also treated as waived and not binding on our client.
Ajay Giri (Advocate) "H No. 26/161, Basement, Vikram Vihar, Lajpat Nagar 4, New Delhi 110024"

ICICI Bank | शाखा कार्यालयः आई सी आई सी आई बैंक लि. तीसरी मंजिल, प्लॉट नं. 23, न्यू रोहतक रोड, करोल बाग, दिल्ली–110005

सार्वजनिक सूचनाः
बिल्डर निरस्तीकरण

आपके ध्यान में लाया जाता है कि हरीश सिंह/तनुजा (उधारकर्ता/ओं) ने फ्लैट नं. 604, 6वीं मंजिल, टॉवर नं. एफ, अमात्रा होम्स, प्लॉट नं. जीएच, 02सी सेक्टर–10, ग्रेटर नोएडा वेस्ट, गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश में स्थित सुविधा समझौता सं. LBDEL00004422437 के अंतर्गत गृह ऋण सुविधा का लाभ उठाया है। उधारकर्ता/ओं समझौते के नियमों और शर्तों के अनुसार बिल्डर को संविदागत राशि का भुगतान करने में विफल रहा है।
बैंक उसकी सूचना कर्जदार को पत्र दिनांकित 14 जुलाई, 2020 के माध्यम से दे चुका है, जिसमें सूचित किया गया है कि नंदी इंफ्राटेक प्रा. लि. ने उपरिवर्णित सम्पत्ति का आबंटन निरस्त कर दिया है। अतः आपसे अनुरोध किया जाता है कि बिल्डर के साथ यह मामला इस सूचना के प्रकाशन की तिथि से 7 दिन के भीतर सुलझा लें।
कृपया यह भी ध्यान दे कि उक्त संपत्ति के आबंटन निरस्त करने के पश्चात आईसीआईसीआई बैंक बिल्डर द्वारा किए गए किसी भी अन्य आवंटन के लिए बाध्य और/या उत्तरदायी नहीं होगा।
दिनांक : जुलाई 19, 2024 — कृते आई सी आई सी आई बैंक लिमिटेड
स्थानः दिल्ली/एनसीआर — हस्ता/–

ICICI Bank | शाखा कार्यालयः आई सी आई सी आई बैंक लि. तीसरी मंजिल, प्लॉट नं. 23, न्यू रोहतक रोड, करोल बाग, दिल्ली–110005

सार्वजनिक सूचनाः
बिल्डर निरस्तीकरण

आपके ध्यान में लाया जाता है कि विनय कुमार/ज्योति (उधारकर्ता/ओं) ने फ्लैट नं. 2648, 25वीं मंजिल, 16वां पार्क व्यू, टॉवर–एफ, गौर यमुना सिटी, पॉकेट–3, मिर्जापुर साइट, सेक्टर–19, यीडा ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश, नोएडा में स्थित, सुविधा समझौता सं. LBGHZ00002206043 के अंतर्गत गृह ऋण सुविधा का लाभ उठाया है। उधारकर्ता/ओं समझौते के नियमों और शर्तों के अनुसार बिल्डर को संविदागत राशि का भुगतान करने में विफल रहा है।
बैंक उसकी सूचना कर्जदार को पत्र दिनांकित 04 जुलाई, 2024 के माध्यम से दे चुका है, जिसमें सूचित किया गया है कि गौरसंस रियलटेक प्राइवेट लिमिटेड ने उपरिवर्णित सम्पत्ति का आबंटन निरस्त कर दिया है। अतः आपसे अनुरोध किया जाता है कि बिल्डर के साथ यह मामला इस सूचना के प्रकाशन की तिथि से 7 दिन के भीतर सुलझा लें।
कृपया यह भी ध्यान दे कि उक्त संपत्ति के आबंटन निरस्त करने के पश्चात आईसीआईसीआई बैंक बिल्डर द्वारा किए गए किसी भी अन्य आवंटन के लिए बाध्य और/या उत्तरदायी नहीं होगा।
दिनांक : जुलाई 19, 2024 — कृते आई सी आई सी आई बैंक लिमिटेड
स्थानः दिल्ली/एनसीआर — हस्ता/–

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को एतद्द्वारा सूचित किया जाता है कि होटल "द ऑर्नेट" नामक संपत्ति, जो वाणिज्यिक भूखंड सेक्टर–04, वैशाली गाजियाबाद उत्तर प्रदेश–201010 में स्थित है, जो मेसर्स उन्नति फॉर्च्यून हॉटमार्ट प्राइवेट लिमिटेड कंपनी की है, जिसके निदेशकों में से एक श्री संजीव सिंघल हैं, जिसका पंजीकृत कार्यालय 380, ग्राउंड फ्लोर हवेली हैदर कुली, चांदनी चौक, दिल्ली, भारत–110006 में है, के संपत्ति दस्तावेज, अर्थात, गाजियाबाद विकास प्राधिकरण द्वारा साइट प्लान अनुलग्नक के साथ मूल सुधार विलेख (विलेख संख्या 21956 दिनांकित 07.12.2015), गाजियाबाद विकास प्राधिकरण और मेसर्स उन्नति फॉर्च्यून हॉटमार्ट प्राइवेट लिमिटेड के बीच निष्पादित मूल बिक्री के एग्रीमेंट (एटीएस संख्या 22052 दिनांकित 13.09.2011) के साथ संलग्न मूल स्टांप पेपर (1,07,24,500/– रुपये का स्टांप शुल्क) और जीडीए द्वारा अनुमोदित भवन योजनाएं दिनांकित 7.12.2012 सिविल लाइंस, दिल्ली में एक घर में स्थानांतरण के दौरान खो गए हैं। दिल्ली पुलिस के साथ 16.07.2024 को खोया और पाया रिपोर्ट दर्ज की गई है। अगर किसी को भी उपरोक्त विस्तृत दस्तावेज मिले हैं और वे उनके कब्जे में हैं, तो उनसे अनुरोध है कि वे नीचे दिए गए व्यक्ति को सौंप दें

अभिवक्ता आकृति भटनागर - 380, ग्राउंड फ्लोर हवेली हैदर कुली, चांदनी चौक, दिल्ली, भारत-110006
मोबाइल: 9873548050

एसेट केअर एंड रिकन्स्ट्रक्शन एंटरप्राईज लिमिटेड ("एसीआरई")
CIN : U65993DL2002PLC115769
पंजीकृत कार्यालय: 14वीं मंजिल, ईआरओएस कॉर्पोरेट टॉवर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली-110019. ई-मेल: acre.arc@acreindia.in,वेबसाइट: www.acreindia.in
कॉर्पोरेट कार्यालय: यूनिट नंबर 502, सी विंग, वन बीकेसी, प्लॉट नंबर सी - 66, जी - ब्लॉक, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स, मुंबई – 400051. फोन: 022 68643101

कब्जा सूचना
(अचल संपत्ति हेतु)

जब कि,
इंडियाबुल्स हाउसिंग फायनान्स लिमिटेड ("आईएचएफएल") प्राधिकृत अधिकारी होने के नाते सिक्योरिटाइजेशन एंड रिकन्स्ट्रक्शन ऑफ फायनांशियल असेट्स एंड एन्फोर्समेंट ऑफ सिक्योरिटी इंटरेस्ट ऐक्ट, 2002 के अंतर्गत और नियम 3 के साथ धारा 13(12) के साथ सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, 2002 के साथ पढ़ते हुए प्राप्त अधिकारों का उपयोग करके कर्जदार **देव धर पालीवाल, संतोष पालीवाल और रवि शंकर पालीवाल** को **11.12.2021** की सूचना में वर्णन के अनुसार **कर्ज खाता नं. D014OXXIII (आईएचएफएल का पूर्व कर्ज खाता नं.HHLNDA00395175)** की राशि **रू. 23,21,026.85 (रूपये तेईस लाख इक्कीस हजार छब्बीस और पैंसठ पैसे मात्र)** और **26.11.2021** के अनुसार उस पर ब्याज उक्त सूचना की प्राप्ती की तारीख से स्पष्ट 60 दिनों के भीतर चुकता करने का आवाहन करते हुए अभियाचना सूचना जारी की थी । इसके अलावा **आईएचएफएल** ने **इंडियाबुल्स एसेट रिकन्स्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड** के पक्ष में **इंडियाबुल्स एआरसी –XXIII ट्रस्ट के ट्रस्टी** के रूप में उपरोक्त कर्ज खाते के अपने सभी अधिकार, शीर्षक और ब्याज **31.12.2021**. को एक असाइनमेंट समझौते के माध्यम से सौपा है, इसके अलावा **इंडियाबुल्स एसेट रिकन्स्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड, इंडियाबुल्स एआरसी –XXIII ट्रस्ट के ट्रस्टी** ने दिनांक **29.06.2022** के असाइनमेंट करार के माध्यम से **एसेट केअर एंड रिकन्स्ट्रक्शन एंटरप्राईज लिमिटेड ("एसीआरई")** के पक्ष में उपरोक्त कर्ज खाते के अपने सभी अधिकार, शीर्षक और ब्याज और कर्ज खाता जिसे **एसीआरई** की पुस्तकों में कर्ज खाता नं.**D014OXXIII** के रूप में पुन: क्रमांकित किया गया है, सौंपा है ।
धनराशि चुकता करने में कर्जदारों के असफल रहने पर एतद्द्वारा कर्जदार और सर्व सामान्य जनता को सूचना दी जाती है कि, अधोहस्ताक्षरी ने उक्त कानून की धारा 13 की उप-धारा 4 के साथ उक्त कानून के नियम 8 के तहत सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, **2002** के तहत प्राप्त अधिकारों का कार्यान्वयन करके **15.07.2024** को संपत्ति पर **सांकेतिक आधिपत्य** कर लिया है ।
विशेषत: कर्जदारों और सामान्यत: जनता को एतद्द्वारा संपत्ति के साथ सौदा नहीं करने के लिए सावधान किया जाता है और संपत्ति के साथ कोई भी सौदा राशि **रू. 23,21,026.85 (रूपये तेईस लाख इक्कीस हजार छब्बीस और पैंसठ पैसे मात्र) 26.11.2021** के अनुसार और उस पर ब्याज के साथ **असेट्स केअर एन्ड रिकन्स्ट्रक्शन एन्टरप्राइजेस लि.** के आधीन होगा.
उधारकर्ताओ का ध्यान अधिनियम की धारा 13 की उप-धारा (8) के अन्तर्गत संपत्ति / संपत्तियों को मुक्त कराने के लिए उपलब्ध समय की ओर आमंत्रित किया जाता है।

अचल संपत्ति का विवरण

यूनिट नंबर ए-1505 के भाग और खंड पंद्रहवीं मंजिल, टाइप 3 बीएस (3 कमरों का सेट + एक कवर्ड कार पार्किंग के साथ स्टडी रूम) जिसका निर्मित क्षेत्र 925.61 स्क्वे. फीट (85.99 स्क्वे. मीटर्स), कारपेट क्षेत्र 617.61 स्क्वे. फीट (57.38 स्क्वे.मीटर्स), टावर-ए में, "दीया ग्रीन सिटी", खसरा नंबर 1097 मिन और 1098 मिन, गाँव मोरटा पर स्थित (राज नगर एक्सटेंशन), मेरठ रोड गाज़ियाबाद ।

सही/-
प्राधिकृत अधिकारी
दिनांक : 15.07.2024 — **असेट्स केअर एन्ड रिकन्स्ट्रक्शन एन्टरप्राइजेस लि.**
स्थान : गाज़ियाबाद — **(102- ट्रस्ट)**

किसी भी शिकायत के लिए आप **श्री मोहम्मद शारिक मलिक,** शिकायत निवारण अधिकारी, फोन नंबर **011-66115609**, ईमेल: **complaint@acreindia.in** से संपर्क कर सकते हैं। संगठन के अंतर्गत शिकायत निवारण तंत्र विस्तृत रुप से **https://www.acreindia.in/compliance** पर देखी जा सकती है।

एसेट केअर एंड रिकन्स्ट्रक्शन एंटरप्राईज लिमिटेड ("एसीआरई")
CIN : U65993DL2002PLC115769
पंजीकृत कार्यालय: 14वीं मंजिल, ईआरओएस कॉर्पोरेट टॉवर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली-110019. ई-मेल: acre.arc@acreindia.in,वेबसाइट: www.acreindia.in
कॉर्पोरेट कार्यालय: यूनिट नंबर 502, सी विंग, वन बीकेसी, प्लॉट नंबर सी - 66, जी - ब्लॉक, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स, मुंबई – 400051. फोन: 022 68643101

कब्जा सूचना
(अचल संपत्ति हेतु)

जब कि,
इंडियाबुल्स हाउसिंग फायनान्स लिमिटेड ("आईएचएफएल") प्राधिकृत अधिकारी होने के नाते सिक्योरिटाइजेशन एंड रिकन्स्ट्रक्शन ऑफ फायनांशियल असेट्स एंड एन्फोर्समेंट ऑफ सिक्योरिटी इंटरेस्ट ऐक्ट, 2002 के अंतर्गत और नियम 3 के साथ धारा 13(12) के साथ सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, 2002 के साथ पढ़ते हुए प्राप्त अधिकारों का उपयोग करके कर्जदार **जय मल, संतोष कुमारी और चमन लाल (गारंटर)** को **19.12.2015** की सूचना में वर्णन के अनुसार **कर्ज खाता नं. J004XII (आईएचएफएल का पूर्व कर्ज खाता नं.HHLLAJ00212227)** की राशि **रू. 27,36,276/- (रूपये सत्ताईस लाख छत्तीस हजार दो सौ छिहत्तर मात्र)** और **19.12.2015** के अनुसार उस पर ब्याज उक्त सूचना की प्राप्ती की तारीख से स्पष्ट 60 दिनों के भीतर चुकता करने का आवाहन करते हुए अभियाचना सूचना जारी की थी । इसके अलावा **आईएचएफएल** ने **इंडियाबुल्स एसेट रिकन्स्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड** के पक्ष में **इंडियाबुल्स एआरसी –XII ट्रस्ट के ट्रस्टी** के रूप में उपरोक्त कर्ज खाते के अपने सभी अधिकार, शीर्षक और ब्याज **31.12.2019**. को एक असाइनमेंट समझौते के माध्यम से सौपा है, इसके अलावा **इंडियाबुल्स एसेट रिकन्स्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड, इंडियाबुल्स एआरसी –XII ट्रस्ट के ट्रस्टी** ने दिनांक **26.04.2021** के असाइनमेंट करार के माध्यम से **एसेट केअर एंड रिकन्स्ट्रक्शन एंटरप्राईज लिमिटेड ("एसीआरई")** के पक्ष में उपरोक्त कर्ज खाते के अपने सभी अधिकार, शीर्षक और ब्याज और कर्ज खाता जिसे **एसीआरई** की पुस्तकों में कर्ज खाता नं.**J004XII** के रूप में पुन: क्रमांकित किया गया है, सौंपा है ।
धनराशि चुकता करने में कर्जदारों के असफल रहने पर एतद्द्वारा कर्जदार और सर्व सामान्य जनता को सूचना दी जाती है कि, अधोहस्ताक्षरी ने उक्त कानून की धारा 13 की उप-धारा 4 के साथ उक्त कानून के नियम 8 के तहत सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, **2002** के तहत प्राप्त अधिकारों का कार्यान्वयन करके **15.07.2024** को संपत्ति पर **सांकेतिक आधिपत्य** कर लिया है ।
विशेषत: कर्जदारों और सामान्यत: जनता को एतद्द्वारा संपत्ति के साथ सौदा नहीं करने के लिए सावधान किया जाता है और संपत्ति के साथ कोई भी सौदा राशि **रू. 27,36,276/- (रूपये सत्ताईस लाख छत्तीस हजार दो सौ छिहत्तर मात्र) 19.12.2015** के अनुसार और उस पर ब्याज के साथ **असेट्स केअर एन्ड रिकन्स्ट्रक्शन एन्टरप्राइजेस लि.** के आधीन होगा.
उधारकर्ताओ का ध्यान अधिनियम की धारा 13 की उप-धारा (8) के अन्तर्गत संपत्ति / संपत्तियों को मुक्त कराने के लिए उपलब्ध समय की ओर आमंत्रित किया जाता है।

अचल संपत्ति का विवरण

यूनिट नं. ई-155, पंद्रहवीं मंजिल, (टॉवर-ई), "मीडोज विस्टा", गाँव मोर्टा, एनएच-58, राजनगर एक्सटेंशन, गाज़ियाबाद (यूपी) – 201004.

सही/-
प्राधिकृत अधिकारी
दिनांक : 15.07.2024 — **असेट्स केअर एन्ड रिकन्स्ट्रक्शन एन्टरप्राइजेस लि.**
स्थान : गाज़ियाबाद — **(102-**

किसी भी शिकायत के लिए आप **श्री मोहम्मद शारिक मलिक,** शिकायत निवारण अधिकारी, फोन नंबर **011-66115609**, ईमेल: **complaint@acreindia.in** से संपर्क कर सकते हैं। संगठन के अंतर्गत शिकायत निवारण तंत्र विस्तृत रुप से **https://www.acreindia.in/compliance** पर देखी जा सकती है।

नीति आयोग
महत्वपूर्ण पुनर्गठन

नीति आयोग का महत्वपूर्ण पुनर्गठन कर सरकार ने उसमें 'रणनीतिक नियोजन' के लिए केन्द्रीय मंत्रियों तथा राजग सहयोगियों को शामिल किया है। अपनी नीति निर्माण प्रक्रिया को गति देने के लिए भारत सरकार ने 'नेशनल इंस्टीट्यूशन फार ट्रांसफार्मिंग इंडिया'- नीति आयोग का पुनर्गठन किया है। इसमें 15 केन्द्रीय मंत्रियों तथा राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन-राजग के महत्वपूर्ण सहयोगियों को शामिल किया गया है। यह देश के नियोजन एवं विकास में 'रणनीतिक बदलाव' है। इससे सरकार की प्रतिबद्धता प्रकट होती है कि वह विभिन्न मंत्रालयों की जानकारियों को नीति-निर्माण प्रक्रिया में शामिल करना चाहती है। विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित मंत्रालय अनेक विशेषज्ञताओं और दृष्टिकोणों को सामने रखेंगे। इस समग्र दृष्टिकोण का लक्ष्य बहुआयामी राष्ट्रीय चुनौतियों से ज्यादा प्रभावशाली ढंग से निपटना है। इस पुनर्गठन में प्रमुख राजग सहयोगियों को भी शामिल किया गया है ताकि राष्ट्र का विकास एजेंडा संचालित करने के सामूहिक प्रयास हो सकें। राजग सहयोगियों को आमंत्रित कर सरकार आयोग के भीतर ज्यादा समावेशी व सहयोगी परिवेश बनाना चाहती है। इसमें शामिल उल्लेखनीय मंत्रियों में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, गृह मंत्री अमित शाह और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह हैं। इनकी उपस्थिति से देश की आर्थिक, आंतरिक सुरक्षा तथा रक्षा नीतियों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ने की उम्मीद है। स्वास्थ्य, शिक्षा और ग्रामीण विकास मंत्रियों के समावेशन से भारत की विकास आवश्यकताओं के प्रति समग्र दृष्टिकोण की आशा है।

इस पुनर्गठन को परंपरागत 'योजना आयोग' माडल से रणनीतिक बदलाव माना जा रहा है जो नीति आयोग को ज्यादा गतिशील एवं समावेशी स्वरूप प्रदान करेगा। इससे सरकार का इरादा स्पष्ट होता है कि वह 'न्यू इंडिया' का दृष्टिकोण आगे बढ़ाने के लिए वरिष्ठ मंत्रियों व सहयोगियों के सामूहिक विवेक का प्रयोग करना चाहती है। आयोग के पुनर्गठन का उद्देश्य केन्द्र व राज्य सरकारों के बीच बेहतर समन्वय सुनिश्चित कर जमीनी स्तर पर नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करना है। इस पुनर्गठन का एक प्रमुख लक्ष्य नीतियों का क्रियान्वयन सुधारना है। सरकार को उम्मीद है कि इससे प्रमुख पहलों व कार्यक्रमों का सहज क्रियान्वयन होगा। इसका परिणाम ज्यादा सक्षम नीतिगत क्रियान्वयन तथा जमीनी स्तर पर बेहतर नतीजे होंगे। नीति आयोग की स्थापना योजना आयोग के विकल्प के रूप में 1 जनवरी, 2015 को की गई थी। इसका प्रमुख उद्देश्य राज्य सरकारों को नीति निर्माण प्रक्रिया में शामिल कर 'सहयोगी संघवाद' प्रोत्साहित करना है। लेकिन धीरे-धीरे इसका महत्व समाप्त हो गया। भारत सरकार ने लगातार केन्द्रीकृत दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया है जिससे राज्यों की नियोजन एवं निर्णय लेने की प्रक्रिया में भागीदारी घटी है। इससे नीति आयोग की भूमिका को नुकसान पहुंचा। नीति आयोग के पास वित्तीय शक्तियां तथा सीधे फंड आबंटन की शक्ति नहीं होती है, इससे वास्तविक नीति क्रियान्वयन पर इसका प्रभाव सीमित होता है। इसके साथ ही दीर्घकालीन रणनीतिक नियोजन के बजाय तात्कालिक आर्थिक व राजनीतिक लक्ष्यों को प्राथमिकता देने की प्रवृत्ति होती है। इससे टिकाऊ विकास में नीति आयोग की प्रासांगिकता घटती है। नीति आयोग के नए चरण में जाने के साथ ही इसकी संभावनाओं तथा समुचित प्रगति करने की क्षमताओं के प्रति आशावाद की भावना पैदा हुई है। उम्मीद है कि सरकार के नवीनतम कदम से ज्यादा जीवन्त नीतिगत ढांचा तैयार होगा।

संसद में सांसदों का कर्तव्य

विपक्ष को संसदीय बहसों में शामिल होकर अपने निर्वाचन क्षेत्रों से जुड़ना चाहिए, पर वे वाकआउट व विरोध प्रदर्शनों से अक्सर अपना समय खराब करते हैं।

प्रफुल्ल गोराडिया
(लेखक, पूर्व राज्यसभा सदस्य हैं)

सांसदों को संसद में अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए, पर अक्सर वे ऐसा नहीं करते हैं। विपक्ष को संसदीय बहसों में शामिल होकर अपने निर्वाचन क्षेत्रों से जुड़ना चाहिए, पर वे वाकआउट व विरोध प्रदर्शनों से अक्सर अपना समय खराब करते हैं। यह समझना कठिन है क्योंकि खासकर कुछ सांसद अपने कर्तव्यों की मूल भावना की अनदेखी करते हैं। इसी कारण आमतौर से विधायिका अपने मूल काम पर ज्यादा ध्यान नहीं दे पाती है। वर्तमान संसदीय सत्र का बाकी समय विपक्ष के लिए एक अवसर है कि वह टेलीवीजन के माध्यम से अपनी प्रतिभा और प्रतिबद्धता प्रकट करे। सत्तारूढ़ पार्टी या पार्टियों को अपने विधेयक पास कराने तथा उनको कानून में बदलने के सिवा विधायिका का और कोई काम नहीं होता है। यदि कोई कानून न हों अथवा उनको तत्काल पास कराने की जरूरत न हो तो सरकार और सत्तारूढ़ पार्टी लगभग पूरे साल बिना विधायिका के अपना काम चला सकते हैं।

हालांकि, बजट पेश करने और उसे पास कराने की मूल आवश्यकता होती है, जिसे केवल विधायिका ही वैध रूप दे सकती है। इसमें लोकसभा की खास भूमिका होती है। ये तथ्य खासकर भारत में राज्य विधानसभाओं की कार्यवाहियों से सामने आते हैं। वे साल में एक बार महत्वपूर्ण विधेयक पास कराते हैं और इस दृष्टिकोण से पूरे साल में एक बार बजट पास कराना राज्य विधायिकाओं के कामकाज का प्रमुख अंग होता है। अधिकांश राज्य विधानसभायें औसतन एक बार में तीन या चार दिन बैठकें करती हैं। यदि उनको विधिक आवश्यकतायें पूरी करने के लिए साल में कुछ समय तक बैठकें न करनी हों तो वे शायद यह भी न करें। इसी कारण राज्य विधानसभाओं का प्रत्येक सत्र मुश्किल से तीन या चार दिन का होता है। लेकिन इसके बावजूद राज्य विधानसभाओं के सदस्य विधायक-एमएलए विधायिका के पूरे कार्यकाल के लिए अपने वेतन और भत्ते प्राप्त करते हैं।

मोटेतौर से यह बात काफी कुछ संसद पर भी लागू होती है। हालांकि, संसद के तीन सत्र-बजट, मानसून व शीत सत्र होते हैं और ये काफी लंबे समय तक चलते हैं। इस महत्वपूर्ण तथ्य को अनदेखा नहीं किया जाना चाहिए कि यदि विधायिकाओं के सत्र ज्यादा से ज्यादा समय तक चलें तो विधि-निर्माता सांसदों और विधायकों, खासकर विपक्षी दलों के सदस्यों को अपना कौशल, ज्ञान तथा मतदाताओं के साथ अपना जुड़ाव प्रदर्शित करने का मौका मिलेगा। इससे वे अपने निर्वाचन क्षेत्र के मतदाताओं से जीवन्त संवाद स्थापित कर सकते हैं। आजकल टेलीवीजन चैनलों पर विधायिकाओं की लगभग पूरी कार्यवाही दिखाई जाती है जिसमें 'संसद टीवी' की प्रमुख भूमिका है। विपक्ष को इन टेलीवीजन प्रसारणों से बहुत लाभ मिल सकता है। यह उनके लिए अत्यन्त लाभदायक है क्योंकि यह माध्यम मुफ्त है तथा निरंतर उनकी सेवा में लगा रहता है। इसके माध्यम से वे अपने निर्वाचन क्षेत्रों के मतदाताओं तथा देश-प्रदेश की जनता से निरंतर संवाद कर सकते हैं। जब मैं संसद में था, उसी समय इस संस्थान-संसद टीवी की शुरुआत हुई थी। उस समय अधिकांश समय अधिकांश मंत्री टेलीवीजन चैनलों का पूरा प्रयोग करते थे। वे यथासंभव अधिकाधिक समय तक बोलते थे ताकि संसद टीवी पर उनका प्रसारण मतदाता देख सकें।

इसी कारण 11 बजे सवेरे से 12 बजे दोपहर तक 'प्रश्न काल' में केवल पांच या छः सवाल सामने आते थे जिनके जवाब दिए जाते थे, जबकि इस दौरान अधिकाधिक 20 सवाल शामिल किए जा सकते हैं। इसका कारण यह है कि प्रश्न पूछने वाले सांसद अधिकाधिक समय अपने 'पूरक प्रश्नों' पर बोलने के लिए खर्च करते थे जो सांसदों का विशेषाधिकार था। आमतौर से विपक्षी पार्टियों की तुलना में सत्तारूढ़ पार्टी या पार्टियों को अपनी बात रखने और संसद टीवी के सामने जनता के पास जाने का ज्यादा अवसर मिलता है। इसके बावजूद विपक्ष आमतौर से अपना ज्यादातर समय सत्र में विचारहीन ढंग से 'वाकआउट' व विरोध प्रदर्शनों के माध्यम से खराब करता है। विपक्ष के इस हंगामे और अराजकता के कारण अध्यक्ष को मजबूरी में कई घंटे या पूरे दिन के लिए सदन की कार्यवाही स्थगित करनी पड़ती है। विपक्ष के इस अनैतिक एवं अनुचित व्यवहार का प्रमाण 2 जुलाई को मिला, जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर हुई बहस का जवाब दिया।

विडंबना है कि दो घंटे से ज्यादा समय तक विपक्षी सदस्यों के समूह बारी-बारी से शोर मचाते रहे ताकि संसद में प्रधानमंत्री मोदी के संबोधन को दबा दिया जाए। वे शायद प्रधानमंत्री को बोलने से रोकना चाहते थे। लेकिन वे शायद यह समझ ही नहीं पाए कि अधिकांश टेलीवीजन चैनल उनकी नारेबाजी और शोर-शराबे को काट कर प्रधानमंत्री मोदी के भाषण का 'लाइव' प्रसारण करते रहे। इसके कारण केवल लोकसभा के सदस्य ही शोरशराबे के कारण प्रधानमंत्री का भाषण ठीक से नहीं सुन सके। इससे जनता में नारेबाजी करने वाले सांसदों के बारे में यह छवि बनी कि वे 'समय बरबाद करने' और 'कार्यवाही में बाधा डालने' वाले हैं। संसद सदस्य के रूप में वे करदाताओं का काफी पैसा अपने वेतन, भत्तों व अन्य सुविधाओं पर खर्च करते हैं। प्रधानमंत्री को भाषण देने से रोकने के प्रयास से उनकी जनता में केवल नकारात्मक छवि बनी। संसद में प्रत्येक सत्र और यहां तक कि हर दिन के कामकाज पर करोड़ों रुपये खर्च होते हैं। प्रत्येक संसद सदस्य पर हर साल देश का लाखों रूपया खर्च होता है जिसे उसे देश और जनता की सेवा के लिए दिया जाता है। उसका काम संसद के कामकाज में बाधा डालना नहीं है।

विरोध व्यक्त करने के अनेक तरीके हैं जिनमें बाहों पर काली पट्टी बांधना या कभी-कभी पूरे काले कपड़े पहनना शामिल हैं। सदस्य विरोधस्वरूप पूरे दिन अपनी सीटों पर बैठने से इनकार कर सत्र के दौरान दूसरे स्थान पर बैठने का फैसला कर सकते हैं, लेकिन उनको संसद की कार्यवाही जारी रहने देनी चाहिए। इससे यह सुनिश्चित होगा कि उनके मतदाताओं समेत संसद के कामकाज पर पैसा खर्च करने वाले सभी लोग तथा संसद के हजारों कर्मचारी अपना रचनात्मक योगदान देश के विकास में दे सकेंगे।

संसद में शोरशराबा करने वाले विपक्षी सांसदों को समझना चहिए कि अंग्रेज दशकों पहले भारत से जा चुके हैं और ऐसे में अब हमारे देश में नकारात्मक गतिविधियों को कोई स्थान नहीं मिलना चाहिए। संविधान निर्माता बाबा साहब डा. भीमराव अंबेडकर ऐसी गैर-कानूनी व असंसदीय गतिविधियों के खिलाफ पहले ही चेतावनी दे चुके थे। सांसदों और विधायकों तथा खासकर विपक्षी दलों के विधि-निर्माताओं को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि संसद या राज्य विधानसभाओं में उनका निर्वाचन उनको विशेषाधिकार की तुलना में राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व अधिक देता है। लेकिन विडंबना है कि अनेक सांसद और विधायक संसद और राज्य विधानसभाओं में निर्वाचन के बाद स्वयं को जनता का सेवक मानने के बजाय उसका मालिक तथा 'विशेषाधिकारों' वाला विशिष्ट व्यक्ति मानने लगते हैं।

यह समझ पूरी तरह गलत है। 2 और 3 जुलाई को हमने लोकसभा और राज्यसभा में विपक्ष का जो आचरण देखा, वह लोकतंत्र के इन महत्वपूर्ण संस्थानों के लिए शुभ संकेत नहीं है। विपक्षी दलों से लेकर मीडिया तथा अकादमिक लोगों को लोकतंत्र पर यह खतरा समझ लेना चाहिए। उनको यह नहीं भूलना चाहिए कि ऐसे लोग विदेशों में 'भारत खतरे में है' का राग अलापते रहते हैं। लेकिन संसद में हुई इन घटनाओं से क्या यह नहीं कहा जा कता है कि भारतीय लोकतंत्र को खतरा उसके भीतर से है? यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए। किसी भी लोकतंत्र को खतरा इसलिए नहीं पैदा होता है कि मतदाताओं ने भारत को 'विकसित अर्थव्यवस्था' वाला देश बनाने तथा भावी पीढ़ियों के लिए बेहतर भविष्य हेतु स्थिर सरकार के लिए स्पष्ट जनादेश दिया है। इस तथ्य को किसी प्रकार अनदेखा नहीं किया जा सकता है कि लगभग 60 साल बाद भारतीय मतदाताओं ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा नीत राजग को लगातार तीसरा कार्यकाल दिया है। लेकिन कुछ राजनीतिक पार्टियां तथा देश में स्वयं को सत्ता का 'अधिकारी' मानने वाले कुछ परिवार पूर्णत: अराजक और अनैतिक व्यवहार कर रहे हैं। वे संसद और उसके कामकाज का संचालन करने वाले नियमों व प्रोटोकालों की धज्जियां उड़ा रहे हैं। भारतीय लोकतंत्र के सामने यही असली खतरा है।

यथार्थ स्वीकार करने का महत्व

यथार्थ में जीना तथा चीजों को उसी रूप में स्वीकार करना बहुत महत्वपूर्ण है।

रवि वल्लूरी
(लेखक, आध्यात्मिक शिक्षक हैं)

पुराने जमाने में चीन में एक किसान था जो सालों तक अपने खेतों पर काम करता रहा। एक दिन उसका घोड़ा भाग गया। यह खबर सुन कर कुछ पड़ोसी उसे सांत्वना देने आए। ग्रामीणों ने कहा, 'यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है।' इस पर किसान ने कहा, 'हो सकता है।' कुछ दिनों बाद घोड़ा वापस आ गया। उसके साथ तीन जंगली घोड़े और थे। इस पर ग्रामीणों का एक और समूह किसान को मुबारकवाद देने गया। वृद्ध किसान ने कहा, 'हो सकता है।'

इसके अगले दिन किसान के लड़के ने एक घोड़े पर चढ़ने का प्रयास किया, लेकिन घोड़े ने उसे गिरा दिया और लड़के की टांग टूट गई और उसके पट्टियां बंध गईं। पड़ोसी एक बार फिर किसान के पास इस दु:साहस पर हमदर्दी प्रकट करने गए। किसान ने एक बार फिर तटस्थ भाव से जवाब दिया, 'हो सकता है।' कुछ दिनों बाद सेना के लोग गांव में नौजवानों को भर्ती करने आए। लेकिन लड़के के पैर में पट्टियां बंधी होने के कारण उसे भर्ती के अयोग्य ठहरा दिया गया। इस पर पड़ोसियों ने बूढ़े किसान को इसके लिए मुबारकवाद दी। किसान ने एक बार फिर जवाब दिया, 'हो सकता है।' श्री श्री रविशंकर ने मजेदार ढंग से इस कहावत का महत्व बताते हुए अपनी शिक्षाओं में कहा है कि 'लोगों और स्थितियों को उसी प्रकार स्वीकार करना चाहिए, जैसी वे हैं।'

'विकीपीडिया' के अनुसार, असामान्य व्यवहार को ऐसे व्यवहार के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो परेशान करने वाला या सामाजिक रूप से अस्वीकार्य, तनाव पैदा करने वाला, गलत या स्वयं को नुकसान पहुंचाने वाला तथा अक्सर संज्ञानात्मक रूप से विकृत विचारों को लाने वाला हो। असामान्य व्यवहार चार प्रकार के होते हैं। इनमें विकृति, निष्क्रियता, तनाव और खतरा शामिल हैं।

विकृत व्यवहार अक्सर अलग, अतिवादी तथा असामान्य होता है और इसमें आश्चर्यजनक व्यवहार पैटर्न भी शामिल हैं। इसके बाद परेशान करने वाला व्यवहार सामने आता है। ऐसे लोगों से जुड़े लोग अक्सर दु:खी अनुभव करते हैं और उनकी उपस्थिति में असहज रहते हैं। विकृत व्यवहार रोगी को ऐसी स्थिति में ले जा सकता है जहां वह दिन-प्रतिदिन के काम में बाधा पैदा करने लगे तथा अपने व्यवहार से अनेक गतिविधियों को बाधित करे। बेचैनी के पांच प्रकार इस श्रेणी में आते हैं। पहला, सामान्य बेचैनी विकृति है। यह लंबा, अस्पष्ट व व्याख्या से परे ऐसा भय है जिसका कोई वस्तुनिष्ठ आधार नहीं होता है। इसके साथ ही अत्यधिक सक्रियता मस्तिष्क में तनाव का कारण बनती है। इसके बाद 'क्वोटोडियन पारलेंस' या घबराहट वाली विकृति का स्थान है। लगातार बने रहने और अक्सर आने वाले बेचैनी के हमले अक्सर अन्य मनोवैज्ञानिक लक्षणों के साथ आते हैं जिनमें सांस लेने में कठिनाई, धड़कन बढ़ाना, हाथ पैर कांपने जैसा अनुभव, सुस्ती तथा अपने ऊपर से पूर्ण नियंत्रण खोने की भावना शामिल है।

मानसिक विकृतियों में अगला स्थान 'फोबिया' या भय का है। मनुष्य अनेक अतार्किक फोबिया का शिकार हो सकते हैं। इनमें एक्रोफोबिया यानी ऊंचाई से भय, ग्लासोफोबिया यानी लोगों को संबोधित करने का भय, क्लास्ट्रोफोबिया यानी बंद स्थानों से भय तथा एवियोफोबिया यानी उड़ान से भय आदि आते हैं। ऐसी स्थितियों में मनुष्य अनेक प्रकार के विचारों से ग्रस्त हो सकता है जो सामान्य रूप से अतार्किक होते हैं।

मानसिक विकृतियों में अंत में 'पोस्ट ट्रामैटिक स्ट्रेस डिसआर्डर'-पीटीएसडी आता है, लेकिन यह भी भारी परेशानी का कारण बन सकता है। इससे पीड़ित व्यक्ति अक्सर बार-बार आने वाले भयानक सपनों, पुरानी यादों, ठीक से ध्यान न लगा पाने तथा भावनात्मक कमजोरी का शिकार बनते हैं जो अपरिहार्य रूप से आघात या तनाव का कारण बनी घटनाओं का परिणाम होते हैं। हमारा देश तीन प्रमुख समस्याओं-नशाखोरी, महिलाओं के मुद्दों तथा मनोवैज्ञानिक विकृतियों से पीड़ित है। आमतौर से नागरिक तांत्रिकों, बाबाओं और धोखेबाजों से चमत्कारी इलाज के लिए संपर्क करते हैं। लेकिन ऐसे में योग्य डाक्टर की सहायता बहुत जरूरी होती है। डाक्टर की सलाह से दवायें लेना पहला कदम है।

इसके बाद रोगी को स्वयंसहायता समूहों से संपर्क करना चाहिए जो इलाज को जारी रखने में सहायता करते हैं। 'आर्ट आफ लिविंग' के 'हैपीनेस कोर्स' में सुदर्शन क्रिया सिखाई जाती है जिससे समुचित तरीके से सांस लेकर शरीर और विचारों के बीच संतुलन स्थापित हो सकता है। गौतम बुद्ध ने कहा था, 'अतीत चाहे जितना कष्टदायक रहा हो, तुम हमेशा फिर से शुरुआत कर सकते हो।'

आप की बात

स्वागत योग्य फैसला

सर्वोच्च न्यायालय ने कहा है कि अनुसूचित जातियों की सूची में राज्यों को किसी छेड़छाड़ का अधिकार नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट कहा है कि केवल संसद द्वारा ही इस सूची में संशोधन और बदलाव किया जा सकता है। यह मामला बिहार से संबंधित था जब 2015 में कुछ जातियों को अति पिछड़ा वर्ग से हटाकर अनुसूचित जाति में शामिल करने का निर्णय लिया गया था। सुप्रीम कोर्ट ने राज्य सरकार की कार्यवाही को दुराग्रहपूर्ण और असंवैधानिक करार दिया है। राजनीतिक लाभ उठाने के लिए राज्य सरकारें ऐसे फैसले करती रही हैं। उत्तर प्रदेश में मायावती को छोड़ कर मुलायम सिंह यादव, अखिलेश यादव और भाजपा द्वारा भी 17 अति पिछड़ी जातियों को अनुसूचित जाति में शामिल करने के कई बार प्रयास किए गए थे। लेकिन कभी कोर्ट और कभी केंद्र सरकार द्वारा इनको खारिज किया गया। सर्वोच्च न्यायालय के इस फैसले के बाद ऐसे प्रयास बंद होने चाहिए। अनुसूचित जाति में किसी समूह के निर्धारण का आधार स्पष्ट रूप से अश्पृश्यता का एक खास स्तर है जिसे अंग्रेजों के समय ही हंटर आयोग ने परिभाषित किया था। पिछड़े वर्ग को कभी दलितों जैसी अश्पृश्यता का सामना नहीं करना पड़ा है। यह भी कटु सत्य है कि आज भी दलितों को अमानवीय अत्याचार झेलने पड़ते हैं।

- वीरेंद्र कुमार जाटव, दिल्ली

महाराष्ट्र में उथलपुथल

महाराष्ट्र में एनसीपी के अजीत पंवार गुट के चार नेताओं का निकल जाना अजीत गुट का गरीबी में आटा गीला करने जैसा है। महाराष्ट्र की राजनीति के रंग लोकसभा चुनाव के पहले से ही अपना रंग दिखाने लगे थे। शिवसेना के उद्धव और बीजेपी के बीच गठबंधन को जनता ने स्वीकार किया था। उसे तहस-नहस करने के बाद से ही बीजेपी और उद्धव5शिवसेना दोनों ही भुगत रहे हैं। इस प्रकार बिल्लियों की लड़ाई में बंदर रोटी खा रहे हैं। अब आगामी महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में भी सीटों के बंटवारे पर घमासान के आसार है। अब तो गठबंधन में चुनाव लड़ने के बाद भी अपने फायदे के लिए पार्टियां इसे तोड़ने में सारी नैतिकता को ताक में रख देती हैं। इससे मतदाता खुद को ठगा हुआ महसूस करते है। मगर विडंबना यह है कि वोट देने के बाद मतदाताओं का रोल खत्म हो जाता है। ऐसे में मतदाता चुनी हुई सरकारों के सामने अपनी मूलभूत सुविधाओं के लिए गिड़गिड़ाते रहने के सिवाय वह और कुछ नहीं कर सकता। वोट लेने के लिए कुछ भी करने को तैयार नेता चुनाव जीतने के बाद मतदाता को पहचानते तक नहीं हैं। इस प्रकार राजनीतिक पार्टियों व नेताओं द्वारा मतदाताओं की ठगी समाप्त करने के रास्ते खोजने होंगे।

- सुभाष बुडावन वाला, रतलाम

अग्निवीरों को अवसर

हरियाणा की भाजपा सरकार ने कांस्टेबल, वनरक्षक व जेल वार्डन की भर्ती के साथ अन्य पदों पर पूर्व अग्नि वीरों के लिए 10 प्रतिशत आरक्षण की घोषणा की है। हरियाणा के मुख्यमंत्री ने कहा है कि यदि कोई अग्निवीर अपना खुद का व्यवसाय शुरू करना चाहता है तो उसे राज्य सरकार 5 लाख रुपये तक का ब्याज मुक्त कर्ज उपलब्ध कराएगी। इसी तरह ग्रुप सी और डी के पदों पर आयु सीमा पर अग्निवीरों को 3 वर्ष की छूट दी जाएगी जो उनके पहले बैच के लिए 5 वर्ष होगी। इसी तरह अग्निवीरों को प्राथमिकता के आधार पर हथियारों के लाइसेंस भी दिए जाएंगे। इसके अलावा भी अग्निवीरों के लिए कई रियायतों का ऐलान हरियाणा सरकार ने किया है। देश की अन्य राज्य सरकारों को भी हरियाणा का अनुसरण करते हुए अग्निवीरों को नौकरियों व रोजगार के अधिकाधिक अवसर देने की दिशा में कदम उठाने चाहिए। भारतीय सैनिकों की तरह अग्निवीर भी सेना से बाहर आने के बाद देश और समाज की सेवा करने, उसमें अनुशासन की भावना भरने तथा अराजक व असामाजिक तत्वों के खिलाफ आदर्श भूमिका निभा सकेंगे। आने वाले दिनों में भारत का हर नागरिक निश्चित रूप से अपने अग्निवीरों पर गर्व करेगा।

-मनमोहन राजावत, शाजापुर

बजट से उम्मीदें

हर वर्ष आम बजट से आम जनता को महंगाई से राहत, टैक्स में छूट और जीवन की मूलभूत जरूरत की चीजें सस्ती होने की उम्मीद होती है। लेकिन विडंबना है कि गरीब-उत्थान के नाम पर मध्यम वर्ग को बजट में कोई महत्व नहीं दिया जाता है। मध्य वर्ग अपनी आमदनी से टैक्स देकर सरकार का खजाना भरता है, पर पिछले दस साल से अनेक वादों के बावजूद उसे समुचित राहत नहीं दी गई है। आय कर से कृषि को पूरी तरह छूट दी गई है जबकि आम आदमी को 7 लाख तक की छूट है। भारत में अमीर किसान अनेक प्रकार की सरकारी सुविधाओं व सब्सिडी का लाभ उठाते हैं, पर वे टैक्स नहीं देते हैं। अत: खेती से 10 लाख रुपये से अधिक कमाई वालों पर आयकर लगाया जाना चाहिए। अब खेती कालाधन छिपाने और टैक्स बचाने का माध्यम बनती जा रही है। रेलवे में लोकल डिब्बों व लोकल ट्रेनों की भारी कमी से छोटे कस्बों के लोगों को सार्वजनिक परिवहन की भारी कमी से जूझना पड़ता है। सरकार को अब हर ट्रेन में 50 प्रतिशत सामान्य डिब्बे और लोकल ट्रेनों की संख्या में पर्याप्त संख्या में इजाफा करने की जरूरत है।

- विभूति बुपक्या, खाचरोद

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

वृक्षारोपण को बनाएं जनांदोलनः मुख्यमंत्री

● गांव से लेकर जिला तक के जनप्रतिनिधियों के साथ सीएम योगी ने वर्चुअली किया संवाद

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पेड़ लगाओ-पेड़ बचाओ के संकल्प के साथ आगामी 20 जुलाई को आयोजित होने जा रहे वृक्षारोपण महाभियान के प्रति जनान्दोलन का स्वरूप देने के उद्देश्य से ग्राम प्रधान, क्षेत्र पंचायत अध्यक्ष, जिला पंचायत अध्यक्ष, नगर पंचायत अध्यक्ष, नगर पालिका परिषद अध्यक्ष, नगर निगमों के महापौर आदि जनप्रतिनिधियों से वर्चुअली संवाद किया। वर्चुअली हुए इस संवाद कार्यक्रम में जनप्रतिनिधियों ने अपनी-अपनी कार्ययोजना से मुख्यमंत्री को अवगत कराया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि इस वर्ष की गर्मी, हीटवेब लंबे समय तक कोई भूल नहीं पायेगा। भविष्य में इसकी पुनरावृत्ति न हो, इसके लिए 20 जुलाई के अभियान अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमारी धरती माता कंक्रीट के जंगलों से सुरक्षित नहीं रहेंगी, हमें उन्हें उनके मूल स्वरूप को देना होगा।

उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने पर्यावरण संरक्षण के कार्यों को शीर्ष प्राथमिकता में लेते हुए विगत 7 वर्ष में 168 करोड़ से अधिक पौधे रोपने का कार्य किया है। यह जानकार आपको सुखद अनुभव होगा कि थर्ड पार्टी ऑडिट में इनमें से 75-80 प्रतिशत पौधे सुरक्षित होने की पुष्टि हुई है। आगामी 20 जुलाई को एक बार पूरा प्रदेश वृक्षारोपण के महाभियान से जुड़ने जा रहा है। इस बार हमारा लक्ष्य 36 करोड़ 50 लाख पौधे लगाने का है। यह बड़ा लक्ष्य है, इसमें आपसभी की सहभागिता होनी आवश्यक है। सभी को प्रयास करना होगा। पेड़ लगाओ-पेड़ बचाओ के संदेश से को जन-जन को जोड़ने की आवश्यकता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि वृक्षारोपण महाभियान को सफल बनाने के लिए जनजागरूकता पहली आवश्यकता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हर देशवासी को 'एक पेड़ मां के नाम' लगाने की प्रेरणा दी है। उत्तर प्रदेश का हर नागरिक प्रधानमंत्री के भाव से जुड़कर इस वर्ष के 'वन महोत्सव' को अभूतपूर्व सफलता दिलाने में अपना योगदान करेगा। न केवल पेड़ लगाना है, बल्कि उसकी सुरक्षा भी हमारी जिम्मेदारी है।

वृक्षारोपण के लिए सभी विभागों/निकायों को लक्ष्य दिया जा चुका है। पूरे उत्साह और उमंग के साथ वृक्षारोपण करें। वृक्षारोपण को जनांदोलन बनाएं। पीएम/सीएम आवास योजना के लाभार्थियों को सहजन का पौधा लगाने को दें। सड़कों के किनारे-किनारे व डिवाइडर पर पौधे लगाए सकते हैं। नदियों के किनारे भी उपयुक्त स्थान पर पौधे लगाए जाने चाहिए। योगी ने कहा कि हमारी ऋ षि परंपरा बताती है कि 'नास्ति मूलं अनौषधं' यानी कोई ऐसा मूल नहीं,जिससे कोई औषधि न बने। इसीलिए विविध प्रकार के पौधे लगाएं। कहीं छायादार वृक्ष हों, कहीं फलदार तो कहीं इमारती लकड़ी वाले तो कहीं औषधीय पौधे लगाएं।

पेड़ लगाओ-पेड़ बचाओ अभियान 2024

यूपी के सभी एक्सप्रेस-वे के किनारे लगाए जाएंगे तीन लाख से अधिक पौधे

● डिफेंस कॉरिडोर में भी एक लाख पौधे लगाएगी योगी सरकार

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश में हरियाली बढ़ाने के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर बीते वर्षों की तरह इस साल भी 'पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ अभियान' के अंतर्गत 36 करोड़ से अधिक पौधे रोपे जाएंगे। वहीं इसी क्रम में प्रदेश के एक्सप्रेस-वे को भी हरा-भरा करने की कवायद शुरू हो गई है। योगी सरकार प्रदेश के चार एक्सप्रेस-वे पर दो लाख से अधिक वृक्षों के पौधे लगाएगी। इसके अलावा यूपी डिफेंस इंडस्ट्रियल कॉरिडोर में भी एक लाख पौधे रोपे जाएंगे। इसके लिए यूपी एक्सप्रेस-वेज़ इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट अथॉरिटी (यूपीडा) ने पहल शुरू कर दी है। इसके अलावा निर्माणाधीन गंगा एक्सप्रेस-वे के किनारे भी बड़े स्तर पर पौधरोपण की तैयारी है।

यूपीडा के अधिकारियों के अनुसार गंगा एक्सप्रेस-वे के कैरिज वे और सर्विस रोड के बीच दोनों तरफ 500 हेक्टेयर क्षेत्र में पौधरोपण एवं उनके 10 वर्षीय देख-रेख करने के लिए विभाग की ओर से उत्तर प्रदेश वन विभाग को 36 करोड़ रुपए से अधिक की धनराशि उपलब्ध कराई जा रही है। इसके अलावा 'पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ अभियान 2024' के अंतर्गत यूपीडा की ओर से संचालित चार अन्य एक्सप्रेस-वे पर भी 2 लाख 37 हजार से अधिक पौधे रोपे जाएंगे। इनमें आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस-वे पर 15 हजार, पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे पर 1 लाख 6 हजार, बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे पर 25 हजार, गोरखपुर लिंक एक्सप्रेस-वे पर 91 हजार 600 पौधे रोपे जाएंगे। इसके साथ ही यूपी डिफेंस इंडस्ट्रियल कॉरिडोर में 1 लाख पौधे रोपे जाएंगे। इनमें पीपल, पाकड़, बरगद, गूलर और नीम के 66 हजार 700 पौधे रोपे जाएंगे इसके अलावा बड़ी संख्या में फलदार वृक्षों के पौधे भी रोपे जाएंगे।

वहीं यूपीडा की ओर से गंगा एक्सप्रेस-वे परियोजना के अंतर्गत गंगा नदी में डॉल्फिन संरक्षण योजना के लिए वन विभाग को 16 करोड़ रुपए से अधिक की धनराशि प्रदान की जा रही है। वहीं पीलीभीत टाइगर रिजर्व के अंतर्गत माला नदी के पुनरुद्धार एवं जैवविविधता के संरक्षण के लिए यूपीडा द्वारा वन विभाग को पांच करोड़ रुपए की धनराशि उपलब्ध कराई जा रही है।

इस वर्ष 36.46 करोड़ पौधरोपण का लक्ष्य

उल्लेखनीय है कि सीएम योगी आदित्यनाथ की पहल पर उत्तर प्रदेश में 20 जुलाई को 'पेड़ लगाओ-पेड़ बचाओ जन अभियान-2024' महापर्व के रूप में मनाया जाएगा। योगी सरकार ने सबका साथ और सबके प्रयास की बदौलत इस वर्ष 36.46 करोड़ पौधरोपण का लक्ष्य तय किया है, जिसके सापेक्ष वन विभाग की ओर से 36.50 करोड़ पौधरोपण व उनके संरक्षण की तैयारी की है। प्रदेश के हरित क्षेत्र को 9 से बढ़ाकर 2026-27 तक 15 फीसदी तक ले जाना है।

एक लाख का ईनामी बदमाश शानू एसटीएफ के साथ मुठभेड़ में मारा गया

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

एसटीएफ की बरेली यूनिट ने शाहजहांपुर में बीते बुधवार की देर रात हुई मुठभेड़ के दौरान एक लाख रुपए के ईनामी बदमाश शाहनूर उर्फ शानू को मार गिराया। शानू के ऊपर हत्या, लूट और डकैती के दर्जनों मुकदमे दर्ज हैं। घटनास्थल से 9 एमएम की एक पिस्टल, एक रिवाल्वर वेव्ले स्कॉट और कारतूस व हीरो हांडा स्पलेंडर मोटरसाइकिल बरामद हुई।

एसटीएफ को सूचना मिली कि अपराधी शाहनूर उर्फ शानू जनपद शाहजहांपुर के तिलहर, कटरा तथा मदनापुर से जलालाबाद तक अपने साथी के साथ अपराध में सक्रिय है। क्षेत्र में भ्रमण के दौरान इस बात की पुष्टि हो गयी कि शाहनूर उर्फ शानू अपने एक अज्ञात साथी के साथ तिलहर एवं जलालाबाद क्षेत्र में मोटरसाइकिल पर घूमते हुये देखा गया है। इसी क्रम में 17 जुलाई को सूचना प्राप्त हुई कि आज शाहनूर उर्फ शानू अपने एक साथी के साथ काले रंग की हीरो स्पलेण्डर से दोपहर में बरेली से तिलहर गया है, जो आज रात्रि में तिलहर से चलकर बरखेडा जयपाल होते हुये मदनापुर जाकर किसी लूट की घटना को अंजाम देने वाला है। यदि तिलहर से बरखेडा जयपाल के मध्य कहीं पर गाडाबन्दी की जाए तो शाहनूर उर्फ शानू तथा उसके साथी को असलहों के साथ गिरफ्तार किया जा सकता है। इस सूचना पर तत्काल प्रतिक्रिया करते हुए टीम ने शाहजहांपुर में ग्राम बरखेडा जयपाल से ग्राम पिथनापुर के बीच नहर पुलिया पर पहुंचकर घेरा बन्दी की। थोड़ी देर बार एसटीएफ की टीम को मोटरसाइकिल पर 2 सवार आते हुए दिखायी दिए, जिन्हे रुकने को कहा गया तो एक व्यक्ति मोटरसाइकिल से उतर कर भागने लगा, जिसका एक टीम द्वारा पीछा किया गया परन्तु अंधेरे का लाभ लेते हुए वह भागने में सफल रहा। दूसरे अपराधी द्वारा अपनी मोटरसाइकिल को नहर पुलिया से पश्चिम दिशा की तरफ दौडा दिया गया, जिसका एसटीएफ की दूसरी टीम द्वारा पीछा किया गया और लगातार चेतावनी देने के बाद भी वह रुका नहीं। आगे जाकर दूसरा अपराधी मोटरसाइकिल अनियंत्रित होने पर गिर गया व पुलिस पार्टी पर जान से मारने की नीयत से फायरिंग शुरू कर दी। अपराधी द्वारा की गयी फायरिंग के दौरान एक गोली पुलिस उपाधीक्षक अब्दुल कादिर के सिर के ऊपर से निकल गयी, जिसमें वह बाल-बाल बचे व एक गोली उनि राशिद अली के बुलेटप्रूफ जैकेट पर लगी। एसटीएफ की ओर से की गई जवाबी फायरिंग में अपराधी शाहनूर उर्फ शानू घायल हो गया, जिस सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मदनापुर भेजा गया। जहां से हालत गंभीर होने के कारण उसे जिला अस्पताल शाहजहांपुर रेफर किया गया। जिला अस्पताल शाहजहांपुर में डाक्टरों द्वारा उसे मृत घोषित किया गया।

सरयू में स्नान कर सीधे रामलला के मंदिर पहुंच सकेंगे भक्त

● इसी साल बनकर तैयार हो जाएगा भ्रमण पथ, सरयू नदी से सीधे जुड़ जाएगा श्रीराम मंदिर

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ अयोध्या

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मंशा के अनुरूप सरकार ने नव्य-भव्य श्रीराम मंदिर तक पहुंचने वाले जन्मभूमि पथ, रामपथ और भक्ति पथ के बाद अब भ्रमण पथ का एक चौथाई कार्य पूरा कर लिया गया है। ये भ्रमण पथ अब काशी में गंगा और विश्वनाथ धाम को जोड़ने की तर्ज पर सरयू नदी से राम मंदिर को जोड़ेगा। इसके बन जाने के बाद रामभक्त सरयू स्नान के बाद सीधे रामलला के दर्शन के लिए पहुंच सकेंगे। इस योजना पर लगभग 23.38 करोड़ रुपए खर्च हो रहा है। यह पथ सरयू नदी के घाटों से होते हुए राजघाट तक, राजघाट से भगवान श्रीराम के मंदिर तक बनाया जा रहा है। इस पथ में हेरिटेज टाइल्स, पत्थरों की परत के साथ मार्ग की दीवारों पर भगवान राम के जीवन चरित्र के प्रसंगों को पेंटिंग के माध्यम से उकेरा जा रहा है। सुंदरीकरण और जीर्णोद्धार का यह कार्य यूपी प्रॉजेक्ट्स कॉर्पोरेशन लिमिटेड द्वारा किया जा रहा है।

पर्यटन विभाग की योजना है कि श्रद्धालु और पर्यटक सरयू नदी में स्नान करने के बाद कई मार्गों से मंदिर तक पहुंच सकें। इससे भीड़ का दबाव भी एक मार्ग पर कम हो जाएगा। अभी तक की योजना में राम पथ होते हुए भक्ति और जन्मभूमि पथ के जरिए श्रद्धालु और पर्यटक जा रहे हैं, लेकिन भ्रमण पथ बन जाने के बाद सरयू नदी में स्नान करने के बाद सीधे राम जन्मभूमि परिसर तक जाया जा सकेगा। जानकारी के मुताबिक इसके बीच में कुछ मीटर पंचकोसी परिक्रमा मार्ग भी पड़ता है।

समाज सेविका गजल अकबर समर्थकों सहित कांग्रेस में शामिल

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

● आज देश में भय व नफरत का माहौल व्याप्तः अजय राय

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की नीतियों एवं उसकी समावेशी विचारधारा से प्रेरित होकर चिल्ड्रेंस पैराडाइस मांटेसरी स्कूल की प्रधानाचार्या, समाजसेविका गजल अकबर ने अपने समर्थकों के साथ प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय पर प्रदेश अध्यक्ष अजय राय के समक्ष कांग्रेस पार्टी की प्राथमिक सदस्यता ग्रहण की। इस मौक पर राय ने समाजसेविका गजल अकबर के सहित उनके साथ आये सभी समर्थकों के गले में तिरंगा पट्टिका पहनाकर तथा पार्टी का सदस्यता कार्ड देकर विधिवत रूप से कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ग्रहण कराई तथा उन्हें उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी। इस मौके पर गोवा प्रदेश कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष मुख्तार अहमद भी मौजूद रहे।

सदस्यता ग्रहण कार्यक्रम में आये हुए सभी मेहमानों का कांग्रेस पार्टी में स्वागत करते हुए प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने कहा कि आज देश भय एवं नफरत का माहौल व्याप्त है। हिन्दू को मुस्लमान से लड़कार देश में अमन चैन तथा आपसी सौहार्द को बिगाड़ने का प्रयास किया जा रहा है। लेकिन अब देश और प्रदेश की जनता भाजपा की जनविरोधी नीतियों को समझ चुकी है और उसका विश्वास भाजपा से उठ चुका है, अब देश का जनमानस कांग्रेस पार्टी तथा नेता प्रतिपक्ष श्री राहुल गांधी की ओर आशा भरी निगाह से देख रहा और कांग्रेस पार्टी में अपनी आस्था दिखा रहा है। सदस्यता ग्रहण करने वालों में प्रमुख रूप से शबनम अंसारी, अबूज़र, सरफराज आलम अंसारी, वासिफ, शावेज सिद्दीकी, मो. बिलाल सगीर, मो. नाज़िम, रईस बानो अंसारी, नाज वारसी, जेबा वारसी आदि शामिल रहे।

भाजपा सामाजिक सद्भाव की दुश्मनः अखिलेश यादव

● अल्पसंख्यक वर्ग को समाज से अलग बांटने और उन्हें शक के दायरे में लाने की है सरकार की मंशा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा सामाजिक सद्भाव की दुश्मन है। समाज का भाईचारा बिगाड़ने का वह कोई न कोई बहाना ढूंढ़ती रहती है। भाजपा का उद्देश्य समाज को बांटना और परस्पर सौहार्द को क्षति पहुंचाना होता है। भाजपा की इन्हीं विभाजनकारी नीतियों के चलते प्रदेश का सामाजिक वातावरण प्रदूषित हो रहा है। यादव ने कहा कि कांवड़ यात्रा को लेकर मुजफ्फरनगर पुलिस ने नया फरमान जारी किया है कि ठेले-ढाबे सहित सभी दुकानदार अपना नाम बाहर जरूर लिखें। इसके पीछे सरकार की मंशा अल्पसंख्यक वर्ग को समाज से अलग बांटने और उन्हें शक के दायरे में लाने की है। जिसका नाम गुड्डू, मुन्ना, छोटू या फत्ते है, उसके नाम से क्या पता चलेगा? भाजपा सत्ता का दुरुपयोग हर स्तर पर करने में कतई संकोच नहीं करती है। सपा अध्यक्ष ने कहा कि वैसे भाजपा की नीति और नीयत दोनों विभाजनकारी हैं जिससे जनता पूरी तरह परिचित हो चली है। अब भाजपा की चालाकी को जनता अच्छी तरह पहचानने लगी है। वह चाहे जो हथकंडा अपना ले अब उसकी साजिशें कामयाब नहीं हो सकती है। जनता खूब समझती है कि भाजपा सरकार में कानून व्यवस्था पर संकट क्यों रहता है? अखिलेश ने कहा कि कायदे स न्यायालय स्वत: संज्ञान ले और प्रशासन के पीछे के शासन तक की मंशा की जांच करवाकर, उचित कार्यवाही करे।

राजीव गांधी वृक्षारोपण अभियान के तहत प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने किया पेड़ लगाए

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी के जन्मदिन के अवसर पर उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी द्वारा 'राजीव गांधी वृक्षारोपण' अभियान की शुरूआत की गई। जिसके तहत पूरे प्रदेश के सभी 1 लाख 62 हजार बूथों पर कांग्रेसजनों द्वारा पेड़ लगाया जाना सुनिश्चित किया गया था। गुरुवार को इसी क्रम में उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अजय राय ने प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय पर पेड़ लगाये। इसके पश्चात सदस्य एआईसीसी, बक्शी का तालब विधानसभा के पूर्व प्रत्याशी ललन कुमार द्वारा ग्राम अमरई, ब्लाक चिनहट, विधानसभा क्षेत्र बक्शी का तालाब में 'राजीव गांधी वृक्षारोपण' अभियान के तहत पेड़ लगाये गये। वृक्षारोपण कार्यक्रम में मुख्त अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पूर्व मंत्री श्री अजय राय जी ने भी पेड़ लगाया। इस मौके पर अजय राय ने कहा कि विकास के नाम पर केन्द्र एवं राज्य की भाजपा सरकारों ने लाखों पेड़ कटवा दिये हैं जिसका नतीजा यह है कि गर्मी के प्रकोप से पूरा देश एवं प्रदेश झुलस रहा है। इस यातना से निजात केवल वृक्षारोपण से ही मिल सकता है इसी क्रम में कांग्रेस पार्टी राजीव गांधी वृक्षारोपण अभियान के जरिए इस पुनीत कार्य को कर रही है। श्री राय ने कहा कि हमें ना सिर्फ पेड़ लगाने हैं बल्कि अगले तीन वर्षों तक उनका संरक्षण भी करना है।

वृक्षारोपण कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के कोषाध्यक्ष शिव पाण्डेय, प्रदेश सचिव अर्चना राठौर, मीडिया विभाग के वाइस चेयरमैन मनीष श्रीवास्तव हिंदवी, जिला कांग्रेस कमेटी लखनऊ के अध्यक्ष वेद प्रकाश त्रिपाठी, शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष डॉ. शहजाद आलम, मशहूर कलाकार राजीव निगम, महिला कांग्रेस मध्य जोन की अध्यक्ष ममता चौधरी, पुष्पेन्द्र श्रीवास्तव, एडवोकेट कृपाशंकर मिश्रा, प्रदेश प्रवक्ता डॉ. सुधा मिश्रा, महिला कांग्रेस की प्रदेश उपाध्यक्ष सुशीला शर्मा, शीला मिश्रा, सचिव अनामिका यादव, वीरेन्द्र मदान, द्विजेन्द्र त्रिपाठी, सिद्धार्थप्रिय श्रीवास्तव, प्रमोद सिंह, विनोद मिश्रा, सीमा चौधरी, महताब जायसी, सलमान बशर सहित आदि कांग्रेसजन सम्मिलित रहे।

सीएफसी से और परवान चढ़ेगा टेराकोटा शिल्प का कारोबार

● ओडीओपी में शामिल होने के बाद टेराकोटा शिल्प को मिली संजीवनी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ गोरखपुर

गोरखपुर की खास पहचान में टेराकोटा शिल्प के उत्पाद भी शामिल हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा सात साल पहले टेराकोटा को ओडीओपी (एक जिला एक उत्पाद) योजना में शामिल किए जाने के बाद से ही मिट्टी के इस शिल्प का कारोबार दिनोंदिन आगे बढ़ रहा है। अब कॉमन फैसिलिटी सेंटर (सीएफसी) के जरिये टेराकोटा कारोबार और परवान चढ़ेगा। जिला उद्योग केंद्र की तरफ से दो सीएफसी पहले से प्रकिया में हैं और अब सिडबी (भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक) के साथ मिलकर एक स्वयंसेवी संस्था सेफ सोसायटी ने भी इसके लिए पहल की है। सिडबी की तरफ से गुलरिहा के भरवलिया में सीएफसी खोले जाने पर काम शुरू हो चुका है। इससे टेराकोटा कारीगरों को काफी सहूलियत मिलेगी। जिला उद्योग केंद्र की तरफ से पादरी बाजार और औरंगाबाद में सीएफसी खोलने की प्रक्रिया जारी है।

भरवलिया में बन रहे टेराकोटा के कॉमन फैसिलिटी सेंटर के इस माह के अंत तक चालू हो जाने की उम्मीद है। यहां शिल्पकारों को हर तरह के काम के लिए सिंगल प्वाइंट ऑफ कॉन्टैक्ट होगा। सेफ सोसायटी के चेयरमैन वैभव शर्मा ने बताया कि टेराकोटा को लेकर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जो पहल की है, उसी से प्रेरित होकर सीएफसी बनाई जा रही है। इस सीएफसी पर पर इलेक्ट्रिक भट्ठी, कारीगरों को प्रशिक्षण और तैयार माल को बाजार उपलब्ध कराने की सुविधा मिलेगी। सिडबी लखनऊ रीजन के जनरल मैनेजर मनीष सिन्हा का कहना है कि टेराकोटा की सीएफसी खुलने से नए तरीके की ट्रेनिंग, नई तकनीक से उत्पाद को तैयार करने में सहूलियत होगी। यही नहीं कम लागत और कम समय में ज्यादा माल तैयार हो सकेगा। मिट्टी के बर्तन या अन्य उत्पाद को पुराने तरीके से पकाया जाता है तो तकरीबन 18 घंटे से ज्यादा समय लगता है और यदि इसे सीएफसी के टनलभट्ठी में पकाया जाता है तो एक ट्राली टेराकोटा तीस मिनट में पककर तैयार हो जाता है। उन्होंने बताया कि सीएफसी से काम कर रहे शिल्पकारों को कारोबारी लाभ होगा तो इस क्षेत्र में नए लोग भी ट्रेनिंग लेकर कारोबार से जुड़ सकेंगे। मनीष सिन्हा ने बताया कि सीएफसी का संचालन दो साल तक सिडबी की तरफ से किया जाएगा। इसके बाद एसपीवी (स्पेशल पर्पज व्हीकल) बनाकर इसे लाभार्थी शिल्पकारों को हैंडओवर कर दिया जाएगा। सात साल पहले तक रंगत खो रहे टेराकोटा शिल्प को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की महत्वाकांक्षी ओडीओपी योजना की संगत मिली तो इस मिट्टी का रंग और चटक होता गया। कभी अक्सर खाली बैठने वाले टेराकोटा शिल्पकारों के पास अब सालभर काम की भरमार है। दीपावली जैसे पर्व पर उन्हें छह माह पहले गई ऑर्डर मिल जाते हैं।

टेराकोटा शिल्प को उद्यम में बदलने के लिए सीएम योगी ने इसे बहुआयामी और महत्वाकांक्षी ओडीओपी योजना में शामिल किया। ओडीओपी में शामिल होने के बाद टेराकोटा शिल्पकारों को संसाधनगत, वित्तीय व तकनीकी मदद तो मिली ही, सीएम की अगुवाई में ऐसी जबरदस्त ब्रांडिंग हुई कि इसके बाजार का अपार विस्तार हो गया। मुख्यमंत्री खुद तमाम मंचों से टेराकोटा की ब्रांडिंग करते हैं। एक तरह से इसके ब्रांड एम्बेसडर खुद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ हैं। इलेक्ट्रिक चाक, पगमिल, डिजाइन टेबिल आदि मिलने से शिल्पकारों का काम आसान और उत्पादकता तीन से चार गुना हो गई। तीस फीसद से अधिक नए लोग जुड़े टेराकोटा के कारोबार से वर्तमान में टेराकोटा के मूल गांव औरंगाबाद के साथ ही गुलरिहा, भरवलिया, जंगल एकला नंबर-2, अशरफपुर, हाफिज नगर, पादरी बाजार, बेलवा, बालापार, शाहपुर, सरैया बाजार, झुंगिया, झंगहा क्षेत्र के अराजी राजधानी आदि गांवों में टेराकोटा शिल्प का काम वृहद स्तर पर चल रहा है। ओडीओपी में शामिल होने के बाद बाजार बढ़ने से करीब 30-35 फीसद नए लोग भी टेराकोटा के कारोबार से जुड़े हैं।

हाथरस हादसे में मृत 123 लोगों के परिजनों को अखिलेश यादव ने की एक-एक लाख की मदद

लखनऊ। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने मानवीय संवेदना का परिचय देते हुए 2 जुलाई 2024 को हाथरस में हुए दुखद हादसे में मृत 123 लोगों के शोकाकुल परिवारों को एक-एक लाख रूपए की आर्थिक सहायता दी हैं, यह दुर्घटना ग्राम फलरई मुगल गढ़ी तहसील सिकन्द्राराऊ, हाथरस में एक सत्संग के दौरान हुई थी।

हादसे में मृतकों के परिजनों को समाजवादी पार्टी द्वारा सहयोग देने के लिए जनपद हाथरस, फिरोजाबाद जाने वाले प्रतिनिधियों में रामजी लाल सुमन सांसद, अक्षय यादव सांसद, जसवंत सिंह पूर्व एमएलसी, ओमवती यादव पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष, कृष्णकन्हैया पाल राष्ट्रीय अध्यक्ष अधिवक्ता सभा, रीबू श्रीवास्तव प्रदेश अध्यक्ष महिला सभा, बृजमोहन राही पूर्व प्रत्याशी, गौरव बघेल, महेन्द्र सोलंकी, शिवराज सिंह यादव जिलाध्यक्ष फिरोजाबाद, देवेन्द्र कुमार कुशवाहा जिलाध्यक्ष हाथरस शामिल हैं।

चंडीगढ़ डिब्रूगढ़ एक्सप्रेस हादसे के पीछे साजिश की आशंका, रेलवे ने दिए जांच के आदेश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

● लोको पायलट ने कहा, हादसे से ठीक पहले सुनी धमाके की आवाज

गोंडा में चंडीगढ़ डिब्रूगढ़ एक्सेप्रेस के हादसे के पीछे साजिश की भी आशंका जताई जा रही है। इसके पीछे वजह यह है कि ट्रेन के लोको पायलट के अनुसार हादसे से ठीक पहले उसने धमाके की आवाज सुनी थी। लोको पायलट की सूचना के बाद रेलवे प्रशासन ने कई एंगल पर जांच शुरू कर दी है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने ट्रेन हादसे का संज्ञान लिया। उन्होंने अधिकारियों को तत्काल मौके पर पहुंचकर राहत कार्य में तेजी लाने और घायलों के समुचित उपचार के निर्देश दिए। सीएम के निर्देश पर आसपास के जिलों के सभी अस्पतालों, सीएचसी, पीएचसी को अलर्ट मोड पर रखा गया। एसडीआरएफ की टीम को मौके पर पहुंचकर राहत कार्यों में तेजी लाने के भी निर्देश दिए गए।

पूर्वोत्तर रेलवे के सीपीआरओ पंकज सिंह के अनुसार सीआरएस (कमिश्नर ऑफ रेलवे सेफ्टी) की जांच कराई जाएगी। हादसे में अब तक दो लोगों की मौत हो चुकी है। छह लोग गंभीर रूप से घायल हैं। सीएम योगी ने मामले का संज्ञान लिया है।

गोंडा-गोरखपुर रेलमार्ग पर मोतीगंज के रामपुर गांव के पास दोपहर करीब तीन बजे चंडीगढ़-डिब्रूगढ़ एक्सप्रेस की कई बोगियां पटरी से उतर गईं। इनमें पांच बोगियां पलट गई थीं। रेलवे व पुलिस फोर्स मौके पर पहुंच गई और घायलों को अस्पताल भेजा गया। गंभीर रूप से घायल लोगों को लखनऊ भेजा गया है। डीएम नेहा शर्मा भी मौके पर पहुंचीं। कई यात्रियों को डिब्बों से शीशे तोड़कर बाहर निकाला गया है। मनकापुर-गोंडा के बीच झिलाही स्टेशन के पास हादसा हुआ है। चंडीगढ़-डिब्रूगढ़ एक्सप्रेस को चला रहे लोको पायलट ने खुलासा किया है कि हादसे के पहले उन्होंने धमाके की आवाज सुनी थी। इसकी पुष्टि पूर्वोत्तर रेलवे के सीपीआरओ पंकज कुमार सिंह ने की है। दुर्घटना की कमिश्नर ऑफ रेलवे सेफ्टी जांच के आदेश दिए गए हैं। वहीं, रेल मंत्रालय ने मृतकों के परिजनों को 10-10 लाख, गंभीर रूप से घायल यात्रियों के लिए ढाई-ढाई लाख और सामान्य घायलों के लिए 50-50 हजार रुपये आर्थिक सहायता की घोषणा की है।

पूर्वोत्तर रेलवे के सीपीआरओ पंकज सिंह ने हादसे में दो यात्रियों के मरने की पुष्टि की है, जबकि 25 यात्री घायल हुए हैं। दो यात्रियों के पैर कट गए हैं। ज्यादातर घायल यात्री एसी कोच के हैं। जानकारी के अनुसार ट्रेन (15904) चंडीगढ़ से डिब्रूगढ़ जा रही थी। ट्रेन बुधवार रात 11.39 बजे चंडीगढ़ से रवाना हुई थी और गुरुवार दोपहर 2.37 बजे दुर्घटनाग्रस्त हो गई। हादसा झिलाही स्टेशन के गोसाई डिहवा में हुआ, जिसकी अयोध्या से 30 किलोमीटर और लखनऊ से 129 किलोमीटर दूरी है। दुर्घटना में एसी के तीन कोच समेत 15 बोगियां पटरी से उतरी हैं। इसमें से पांच डिब्बे पलट गए। इस बोगी पलटकर खेत में चली गई है। असम के मुख्यमंत्री ने भी घटना का संज्ञान लिया है। मुख्यमंत्री यहां के अधिकारियों के संपर्क में हैं। सीपीआरओ पंकज सिंह के अनुसार वहां पर रेलवे की मेडिकल टीम पहुंची है। लखनऊ और गोंडा के लिए हेल्पालाइन नंबर जारी किए गए हैं।

पायनियर
नई दिल्ली, शुक्रवार, 19 जुलाई, 2024

जिला अस्पताल: डिप्टी सीएम बृजेश पाठक करते रहे निरीक्षण, चेंबरों की होती रही सफाई

● कार्यदायी संस्था से स्पष्टीकरण तलब कर वेतन रोकने के निर्देश

●मरीज व तीमारदारों ने चिकित्सकों पर बाहरी दवा लिखने का मढ़ा आरोप जांच के निर्देश

फतेहपुर। जिला अस्पताल का हाल किसी से छिपा नहीं है। इसका नजारा आज स्वयं उप मुख्यमंत्री एवं स्वास्थ्य मंत्री बृजेश पाठक ने स्वयं देख लिया। एक तरफवह जिला अस्पताल का निरीक्षण कर रहे थे तो दूसरी तरफ सफाई कर्मी प्रात: दस बजे तक चेंबरों की सफाई में लगे हुए थे। अस्पताल में कई स्थानों पर गंदगी देख डिप्टी सीएम का पारा सातवें आसमान पर पहुंच गया। उन्होने कार्यदायी संस्था से स्पष्टीकरण तलब कर एक दिन का वेतन रोकने के निर्देश अधिकारियों को दिए। साथ ही मरीजों व तीमारदारों से बातचीत कर स्वास्थ्य सुविधाओं की हकीकत जानी। मरीजों का आरोप लगा रहा कि बाहरी दिखाएं लिखी जाती हैं, जिस पर डिप्टी सीएम ने सीएमएस को निर्देश देते हुए भंडारित दवाओं की हकीकत भी देखी।

गुरूवार की सुबह डिप्टी सीएम बृजेश पाठक लखनऊ से महोबा के लिए निकले थे। फतेहपुर पहुंचने पर वह सर्किट हाउस आए और अचानक काफ्लिा जिला अस्पताल की ओर मुड़ गया। डिप्टी सीएम के अस्पताल पहुंचते ही स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों व कर्मचारियों के होश फाख्ता हो गए। सभी अधिकारी व कर्मचारी व्यवस्थाओं को चाक-चौबंद बनाने में लग गए। डिप्टी सीएम सीधे वार्ड में भर्ती मरीजों से मिलने पहुंच गए। उन्होने मरीजों से बातचीत कर स्वास्थ्य सुविधाओं की हकीकत जानी। कई खामियां मिलने पर डिप्टी सीएम ने कहा कि मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया कराने के लिए सरकार कटिबद्ध है। इसलिए मरीजों का जिला अस्पताल में समुचित इलाज किया जाए। डिप्टी सीएम ने वार्ड का बारीकी से जायजा लिया। वार्ड में फैली गंदगी को देखकर साफ सफाई के लिए सीएमएस को निर्देश दिया, जब डिप्टी सीएम इमरजेंसी कक्ष पहुंचे तो एक बेड पर पड़ी चादर में खून देखा। उस बेड पर मरीज का इलाज करते देख वह भड़क गए और फटकार लगाई कि इस तरह की व्यवस्था में सुधार नहीं होने पर कड़ी कार्यवाही होगी।

डीएम ने की सीएम डैशबोर्ड पर प्रदर्शित फ्लैशिप विकास कार्यक्रमों तथा सीएमआईएस पोर्टल पर प्रदर्शित निर्माण कार्यों के प्रगति की समीक्षा

● सभी विभाग समय अंतर्गत पोर्टल पर फीड करें आंकड़े

कानपुर देहात। जिलाधिकारी आलोक सिंह के अध्यक्षता में सीएम डैशबोर्ड पर प्रदर्शित फ्लैशिप विकास कार्यक्रमों की प्रगति तथा सीएमआईएस पोर्टल पर प्रर्दशित निर्माण कार्यों की माह जून की प्रगति की समीक्षा बैठक मां मुक्तेश्वरी देवी सभागार कक्ष कलेक्ट्रेट में संपन्न हुई। बैठक में सर्वप्रथम जिलाधिकारी द्वारा सीडी एवं ई श्रेणी में आए हुए विभागों की समीक्षा की गई। जिलाधिकारी ने संबंधित सभी विभागों को निर्देशित किया कि सभी विभाग त्रुटि रहित आंकड़े समय से पोर्टल पर फीड कराये, यदि आंकड़ों से संबंधित कोई समस्या हो तो अपने निदेशालय से संपर्क कर तत्काल ठीक करायें। उन्होंने कहा कि किसी भी विभाग की परियोजना की रैंक आने वाले माह में नीचे नहीं जानी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि कोई भी विभाग पोर्टल पर गलत रिपोर्टिंग नहीं करेगा। उन्होंने कहा सभी विभाग नियमित अपने.अपने फ्लैगशिप योजनाओं की समीक्षा जरूर करें तथा योजनाओं की प्रगति से संबंधित आंकड़े अर्थ एवं संख्या अधिकारी कार्यालय में समय से उपलब्ध कराए। मुख्य विकास अधिकारी लक्ष्मी एन. द्वारा आंकड़ों की पुष्टि किए जाने पर ही डाटा पोर्टल पर फीड करें। बैठक में अन्य बिंदुओं पर भी विस्तार से चर्चा की गई।

तत्पश्चात पीओ नेडा द्वारा पीएम सूर्यघर योजना के बारे में जानकारी दी गई । उन्होंने बताया कि जनपद में विद्युत उपभोक्ताओं के घरों पर पीएम सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना के अन्तर्गत घरेलू सोलर रूफटॉप की स्थापना करायी जानी है। समस्त आवासीय विद्युत कनेक्शन धारक उपभोगता जिनका विद्युत बिल जमा है, इस योजना के पात्र हैं। उपभोक्ता विद्युत विभाग से स्वीकृत विद्युतभार के समतुल्य अथवा कम क्षमता का सोलर रूफटॉप संयंत्र अपने निज आवास पर लगवा सकते हैं। इस संयंत्र की स्थापना से उपभोक्ता के बिद्युत बिल में 60 से 70 प्रतिशत की मासिक बचत सम्भव है, इसके साथ ही पीएम सूर्यघर योजना के अन्तर्गत अनुदान भी अनुमन्य है।

सोलर रूफटॉप सयंत्र के अधिष्ठापन के लिये उपभोक्ता को अपना पंजीकरण (पोर्टल पर पंजकरण आदि प्रक्रिया का विवरण पत्रक) कर इस योजना का लाभ ले सकते हैं। इस योजना में विद्युत उपभोक्ता को पहले निज स्रोतध्बैंक ऋण के माध्यम से सोलर रूफटॉप पावर प्लाण्ट लगवाना होता हैए तदोपरान्त सयंत्र के नेटमीटरिंग सम्बन्धी कार्यवाही विद्युत विभाग के द्वारा पूर्ण की जाती है। नेटमीटरिंग कार्य पूर्ण होने पर उपभोक्ता स्वयं अथवा सोलर रूफटॉप वेण्डर द्वारा समस्त प्रपत्रों को अंतिम रूप से पोर्टल पर अनुदान प्राप्त किये जाने हेतु अपलोड कर दिया जाता है। अनुदान मांगपत्र प्रेषण के दो माह के अन्दर राज्य एवं भारत सरकार से अनुमोदित अनुदान की राशि अवमुक्त हो जाती है। इस मौके पर संबंधित विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

लोडर गाड़ी की टक्कर से बाइक सवार दो लोगों की दर्दनाक मौत

संवाददाता। बिंदकी (फ्तेहपुर)

तेज रफ्तार अनियंत्रित लोडर गाड़ी की टक्कर से एक ही बाइक में सवार दो लोगों में से एक की मौके पर मौत हो गई जबकि दूसरे गंभीर घायल व्यक्ति की अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई। दोनों की मौत के बाद परिजनों में हड़कंप मच गया। पुलिस ने दोनों के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

जानकारी के अनुसार नगर के निकट मुगल रोड पावर हाउस के समीप गुरुवार को दिन में करीब ढाई बजे तेज रफ्तार लोडर गाड़ी की टक्कर से बाइक सवार विनोद द्विवेदी उर्फ पुत्री उम्र 50 वर्ष पुत्र स्व. राम आसरे द्विवेदी निवासी मोहल्ला महजनी गली कस्बा बिंदकी की मौके पर दर्दनाक मौत हो गई। हालांकि जीवित होने की आशा पर उन्हें इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया जहां पर चिकित्सक ने मृत घोषित कर दिया। दूसरी ओर विनोद द्विवेदी के साथ ही बाइक में सवार सतीश चंद्र उम्र 40 वर्ष पुत्र रमेश चंद निवासी ग्राम पारादान कोतवाली बिंदकी गंभीर घायल हो गए, जिन्हें इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बिंदकी ले जाया गया।

थोड़ी देर उपचार के बाद सतीश चंद्र की भी मौत हो गई। बताया जाता है कि सतीश चंद्र अपने गांव से बाइक द्वारा आ रहे थे, तभी अपने खेत देखने गए विनोद द्विवेदी नहर पुल के पास खड़े थे। विनोद ने सतीश को बाइक में बैठने के लिए हाथ दिया, जिसके चलते विनोद भी बाइक में बैठ गए। आगे चलने पर पावर हाउस के समीप लोडर गाड़ी ने टक्कर मार दी जिसके चलते विनोद द्विवेदी की मौके पर मौत हो गई जबकि सतीश चंद्र की इलाज के दौरान सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र की में मौत हो गई।

आईटीआई में रोजगार मेला 19 से 30 जुलाई तक

फर्रूखाबाद। राजकीय औधोगिक प्रशिक्षण संस्थान ठंडी सड़क में 19 जुलाई को एवं 30 जुलाई को राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, अमृतपुर फर्रूखाबाद में 20 जुलाई एवम् राजकीय ओधोगिक प्रशिक्षण संस्थान कायमगंज में 23 जुलाई को प्रात: 10 बजे से रोजगार अप्रेंटिसशिप मेला का आयोजन किया जाएगा, जयभारत मारुति, टाटा ईवी कार मेनुफेकचरिंग, बजाज मोटर्स, एम आर एफटायर जैसी अन्य कंपनियां प्रतिभाग कर रही हैं। रिक्तियों की संख्या 800 है। इच्छुक अभ्यार्थी अपना दस्तावेज वायोडाटा हाईस्कूल, इंटरमिडियट, आईटीआई डिप्लोमा, स्नातक के अंकपत्र व प्रमाणपत्र, आधार कार्ड, पासपोर्ट साइज फोटो इत्यादि साक्षात्कार के समय सभी दस्तावेज के साथ उपरोक्त दी गई तिथियों के अनुसार रोजगार/ अप्रेंटिस शिप मेला में प्रतिभाग करना सुनिश्चित करे।

दो सगे भाईयों सहित तीन बालिका के साथ गैंगरेप में फंसे

फर्रूखाबाद। दलित नाबालिक के साथ गैंगरेप के मामले में पुलिस नें दो सगे भाईयों सहित तीन के खिलाफ मुकदमा पंजीकृत किया है। थाना मऊदरवाजा क्षेत्र के एक ग्राम निवासी 14 वर्षीय पीड़िता की माँ की तरफ से मुकदमा दर्ज कराया गया। जिसमे कहा गया कि उनकी नाबालिक पुत्री खेत में शौच के लिए दोपहर दो बजे गयी थी। उसी दौरान आरोपी सत्यवीर, बलवीर पुत्र जदुनाथ कुशवाहा, अंकित पुत्र मनोहर कुशवाहा नें उसे जबरदस्ती खीचकर गाँव में बने स्वास्थ्य केंद्र में ले गये। जहाँ आरोपियों नें गैंग रेप किया। उसको मारापीटा और जान से मारने की धमकी दी। जब काफी देर बाद उसकी तलाश की तो वह स्वास्थ्य केंद्र के शौचालय में बंद मिली। मुकदमा की विवेचना सीओ सिटी प्रदीप कुमार को दी गयी है।

विवाहिता ने ससुराल में फांसी लगाकर दी जान

फर्रूखाबाद। विवाह के महज 4 साल बाद ही विवाहिता फांसी के फंसे पर झूल गयी। जिससे उसकी मौत हो गयी। थाना मऊदरवाजा क्षेत्र के ग्राम हरसिंगपुर गोवा निवासी 25 वर्षीय सलोनी पत्नी गौरव यादव नें साड़ी के फंदे पर झूलकर आत्महत्या कर ली।

गौरव का विवाह बीते 4 साल पूर्व कन्नौज के इंदरगढ़ निकारिमपुर उमरदा से हुआ था। उसके एक पुत्री कांता, पुत्र जयकांत हैं। मृतका के पिता रामपाल नें बताया कि रात 11 बजे करीब दामाद गौरव ने जानकारी दी। मृतका की माँ रानी देवी का रो-रो कर बुरा हाल हो गया।आपसी समझौते के चलते मायके पक्ष नें कार्यवाही नही की।

आकाशीय विजली गिरने से सात बकरियों की मौत चरवाहा बाल बाल बचा

मौदहा (हमीरपुर)। गुरुवार की दोपहर बाद तेज चमक के साथ आकाशीय बिजली गिर जाने से एक ही गांव की सात बकरियों की घटना स्थल पर ही मौत हो गई और तीन बकरियां गंभीर रूप से घायल हो गई सूचना पर पहुंचे डॉक्टरों की टीम ने घायल बकरियों का उपचार किया। चरवाहा बाल बाल बच गया। विकास खंड के मदारपुर गांव में गुरुवार की दोपहर बाद बूंदाबांदी एवं तेज चमक के साथ आकाशीय बिजली गिर जाने से खेत में चर रही सात पांच बकरियां चुनुबाद पुत्र कल्लू, एक बकरी बुद्धू पुत्र सिराज एक बकरी निजामुद्दीन की घटना स्थल पर ही मौत हो गई तीन बकरियां गंभीर रूप से घायल हो गई सूचना पर पांच डॉक्टरों का पैनल घटनास्थल पर पहुंचकर घायल बकरियों का उपचार किया और ग्राम प्रधान अब्दुल्ला ने बताया दोपहर बाद बिजली गिर जाने से सात बकरियों की घटना स्थल पर ही मौत हो गई, तीन बकरियां का उपचार चल रहा है।

क्विक न्यूज

राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, अकबरपुर, कानपुर देहात में कल रोजगार मेले का होगा आयोजन

कानपुर देहात। राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, अकबरपुर, कानपुर देहात में 20 जुलाई को रोजगार मेले का आयोजन किया जा रहा है। उक्त के संबंध में जानकारी देते हुए प्रधानाचार्य औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान अकबरपुर ने बताया कि मेले में प्राइम सर्जिकल, रनिया, कानपुर देहात, आज़ाद वेंचर्स प्राइवेट लिमिटेड गुरुग्राम हरियाणाए इफिनिटी इंडस्ट्रियल सॉल्यूशन प्राइवेट लिमिटेडए अलवर राजस्थानए टीम पल्स एच आर सर्विस प्राइवेट लिमिटेड फरीदाबाद आदि अधिष्ठान प्रतिभाग कर रहे है। कंपनियों में आइटीआई के पास आउट अभ्यर्थी फिटर इलेक्ट्रीशियनए वेल्डर टर्नर मोटर मैकेनिक व्हीकल डीजल मैकेनिक मेकेनिक रेफ्रिजरेटर एवं एयर कंडीशन एवं अन्य मैकेनिक एवं इलेक्ट्रिकल व्यवसाय एवं अन्य व्यवसाय के पास आउट अभ्यर्थी मेले में प्रतिभाग कर सकते हैं। जिसमे 11635 से 12,672.00 प्रति माह का वेतन निर्धारित किया है। 18 से 35 वर्ष के अभ्यर्थियों का चयन साक्षात्कार के माध्यम से किया जाएगा।

टकराईं दो बाइके, एक मरा, तीन बच्चों समेत पांच घायल

संडीला (हरदोई)। दो मोटरसाइकिलों में हुई आमने सामने की टक्कर में एक बाइक सवार की मौके पर ही मौत हो गयी जबकि उसकी पत्नी तथा 3 बच्चे एवं दूसरी बाइक के दो सवार युवक घायल हो गए। यह दुर्घटना प्रतापनगर कोथावां मार्ग पर ग्राम बरगदियाखेड़ा के पास हुई, जहां दो बाइकों में आमने सामने टक्कर हो गयी। बताया गया है कि ग्राम हाथिया थाना नैमिष जनपद सीतापुर निवासी 30 वर्षीय लालू अपने साढ़ू के बेटे की शादी में भाग लेने के बाद 28 वर्षीय पत्नी केशू तथा पुत्रियों 10 वर्षीय शीलू, 8 वर्षीय आरुषी तथा 5 वर्षीय पुत्र हंयराज के साथ अपने घर वापस जा रहा था। पांचो लोग एक ही बाइक पर सवार थे। दूसरी ओर ग्राम अटिया मजगवां निवासी 25 वर्षीय पुष्पेन्द्र और 20 वर्षीय भोला अपने घर जा रहे थे। जब दोनों ग्राम बरगदियाखेड़ा के पास पहुंचे तो बाइकों में आमने.सामने टक्कर हो गयी। टक्कर इतनी भीषण थी कि लालू की मौके पर ही मौत हो गयी जबकि केशू, शीलू, आरुषी, हंसराज और भोला गंभीर रूप से घायल हो गए। पांचों को पहले सीएचसी कोथावां ले जाया गयाए जहां से शीलू, आरुषी और हंसराज की हालत गंभीर होने पर उन्हें जिला अस्पताल भेज दिया गया। उधर लालू के शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा गया है।

बाइक सवार मां बेटे को कंटेनर ने मारी टक्कर मां की हुई मौत

सुमेरपुर। थानाक्षेत्र के गोस्वामी ढाबा के पास हाईवे पर बाइक सवार मां बेटे को कंटेनर ने टक्कर मार दी। जिससे मां गंभीर रूप से घायल हो गई। जिसकी सदर अस्पताल ले जाते समय रास्ते में मौत हो गई। मौदहा के हुसैनगंज निवासी मोहम्मद हनीफ की पत्नी माजदा बेगम अपने पुत्र नफीस के साथ बाइक से बेटी से मिलने उसकी ससुराल सुमेरपुर आ रही थी। बुधवार देर शाम करीब आठ बजे गोस्वामी ढाबा के पास कंटेनर ने पीछे से ओवरटेक करते हुए टक्कर मार दी। जिससे माजदा बाइक से गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गई। नफीस ने बताया कि घायल मां को देखने के लिए कंटेनर चालक नीचे उतरा। उनकी हालत देखकर चालक कंटेनर को भगाने का प्रयास किया। लेकिन बैक गियर पड़ जाने से कंटेनर मां के ऊपर चढ़ गया। जिससे उनकी हालत नाजुक हो गई और कंटेनर मौके से भाग निकला। बेटे ने बताया कि उसने घटना की सूचना परिजनों को दी। उन्हें निजी साधन से सदर अस्पताल लाएं। जहां चिकित्सकों ने देखते ही मृत घोषित कर दिया।

ट्रेन से गिरकर युवक की मौत

फतेहपुर। थरियांव थाना क्षेत्र के बहरामपुर रेलवे ओवर ब्रिज के नीचे ट्रेन से गिरकर लगभग 20 वर्षीय युवक की दर्दनाक मौत हो गई। जीआरपी ने शव को विच्छेदन हेतु भेजा है। असोथर थाना क्षेत्र के मीरपुर गांव निवासी स्व. अरविंद का पुत्र करन मुंबई में नौकरी करता था। वह ट्रेन से घर आ रहा था। तभी अर्द्धरात्रि बहरामपुर रेलवे ओवर ब्रिज के समीप चलती ट्रेन से गिर गया। सुबह जानकारी होने पर जीआरपी ने मौके पर पहुंच शव को कब्जे में लेकर विच्छेदन गृह भेज दिया।

युवक की कानपुर ले जाते समय मौत

फतेहपुर। ससुराल गए युवक ने जहरीला पदार्थ खाकर आत्महत्या करने का प्रयास किया था जिसकी देर शाम कानपुर ले जाते समय रास्ते में मौत हो गई। बताते चलें कि खागा के खेमकरनपुर गांव निवासी केशन पासवान के पुत्र श्याम पासवान अपनी ससुराल असोथर थाने के सूबेदार का पुरवा मजरे सातों धरमपुर गया था। वहीं पत्नी से विवाद के बाद उसने जहर खा लिया था। उपचार के लिए जिला चिकित्सालय लाया गया। जहां हालत गंभीर होने पर कानपुर रेफर कर दिया गया था जिसकी रास्ते में मौत हो गई। पुलिस ने शव को विच्छेदन गृह भेज दिया।

ट्रक की टक्कर से बाइक सवार युवक की मौत

रसूलाबाद। ट्रक की टक्कर से बाइक सवार युवक की मौत हो गई जबकि बेटी व बेटा घायल हुआ। पुलिस ने शव का पंचनामा भर पोस्टमार्टम के लिए भेजा। रसूलाबाद थाना क्षेत्र के बिरिया गढेवा के निकट विपरीत दिशा से आ रहे ट्रक की टक्कर से बाइक सवार संजय 40 पुत्र स्व. राधे लाल निवासी केशव नगर रसूलाबाद की मौत हो गई। संजय कुमार घाटमपुर में स्थित अपनी ससुराल से बाइक द्वारा वापस अपने बेटे मोहन व बेटी प्रियांशी के साथ रसूलाबाद आ रहा था। बिरिया गढेवा के निकट तीव्र मोड़ के निकट विपरीत दिशा से आ रहे तेज डम्पर ने टक्कर मार दी। जिससे युवक की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। जबकि मृतक की बेटी और बेटा दोनों घायल हुए। घटना से पारिवारिक जनों का रो रोकर बुरा हाल था। वहीं पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा।

ईओ ने भ्रमण कर परखी सफाई व्यवस्था

गर्दाबाद का स्थलीय निरीक्षण करते ईओ व कर्मी।

● निजी भूमि पर लगे कूड़े को दो दिन में हटाने के निर्देश दिए

गुरसहायगंज (कन्नौज)। डीएम के आदेश के अनुपालन में नगर पंचायत समधन अधिसाषी अधिकारी सुनील कुमार सिंह ने पंचायत कर्मियों के साथ मोहल्ला गर्दा बाद में निरीक्षण दौरान पाया कि एक निजी भूमि तालाब की सूरत में है और बारिश का पानी भरा हुआ है। आसपास जानवरों के गोबर के ढेर लगे हुए हैं।

जिस पर अधिशासी अधिकारी ने तत्काल प्रभाव से उक्त भूमि की दो दिन में सफाई करने के लिए सफाई नायकों सुनील कुमार व नरेश कुमार एवं फिरोज को कड़े निर्देश देते हुए निजी भूमि पर लगे नागरिकों के कूड़े एवं गोबर के ढेर को हटाने की चेतावनी दी। न हटानें की स्थिति में नगर पंचायत द्वारा कब्जे में लेकर नीलामी कर देने सहित जुर्माना वसूल किए जाने की बात कही। पंचायत कर्मियों को संबंधित भू-स्वामियों को नोटिस देनें का निर्देश देनें के उपरान्त कहा कि भविष्य में कूड़े का ढेर लगा पाया गया तो उनके विरुद्ध सॉलिड बेस्ट नियमावली 2016 एवं एनजीटी के आदेशों का अनुक्रम में कड़ी कार्रवाई की जाएगी। इस दौरान वरिष्ठ लिपिक जिलेदार सिंह विवेक गुप्ता अशोक कुमार आदि मौजूद रहे।

शहर में पौधारोपण कार्यक्रम का हुआ भव्य आयोजन, जिलाधिकारी ने किया शुभारंभ

● पौधारोपण में यूवी प्रोटेक्टेड, बायोडिग्रेडेबल ट्रीगार्ड का हुआ प्रयोग

लखीमपुर खीरी। नगर पालिका परिषदए पर्यावरण मित्र समूहए वन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में गुरुवार को शहर में वृहद पौधारोपण अभियान कार्यक्रम हुआ। सौजन्या चौराहे से गुरु गोविंद सिंह चौक होते हुए हीरालाल धर्मशाला तक ट्रीगार्ड्स सहित वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम का डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने प्रभागीय वनाधिकारी दक्षिण संजय बिस्वाल के साथ 101वां पौधारोपित करते हुए शुभारंभ किया। डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने कहा कि ष्एक पेड़ मां के नाम लगाने की योजना के साथ साथ यहां तो स्वयं मातृ शक्ति पौध लगा रहीं और पर्यावरण मित्र समूह ने नि:संदेह एक अद्भुत कार्य किया है। पर्यावरण मित्र समूह के कार्यों की सराहना करते हुए पर्यावरण मित्र समूह को प्लांटेशन मेक सस्टेनेबिलिटी टैग लाइन दी।

डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने सभी को पेड़ो के योगदान को पहचानेए इस दिशा में जितना हो सके उतना योगदान करने को प्रेरित भी किया। डीएम ने एक पेड़ मां के नाम पर लगाने का संदेश दिया। कहा कि अगर प्रत्येक व्यक्ति एक.एक पेड़ अपनी माता के नाम पर लगाएं और उनकी सुरक्षा और देखभाल करे तो भी हम पर्यावरण संरक्षण और ग्लोबल वार्मिंग को कम करने में प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं।

पर्यावरण मित्र समूह संयोजक विशाल सेठ ने अवगत कराया कि ट्रीगार्ड पॉलिमर के हैंए शत प्रतिशत यूवी प्रोटेक्टेडए पूर्णतया बायोडिग्रेडेबल हैं। पर्यावरण मित्र समूह कोर कमेटी के सदस्य राम मोहन गुप्त के संचालन में आयोजित वृहद पौधारोपण कार्यक्रम, भविष्य की योजना पर कार्यक्रम संयोजक विशाल सेठ ने विस्तृत जानकारी प्रदान की। ईओ संजय कुमार ने नगर पालिका के प्रयासों, प्रभागीय वनाधिकारी दक्षिण संजय बिस्वाल ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में सिटी मांटसरी इंटर कालेज के छात्रों एवं पर्यावरण मित्र समूह कोरकमेटी का अति सराहनीय योगदान रहा।

20 को बृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजन

संवाददाता। बाँदा

जिला कलेक्टर नागेंद्र प्रताप की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में आगामी 20 जुलाई, 2024 को बृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजन हेतु जिला वृक्षारोपण समिति की बैठक सम्पन्न हुयी। बैठक में जिलाधिकारी ने सभी जिला स्तरीय अधिकारियों एवं खण्ड विकास अधिकारियों को निर्देश दिये कि शासन द्वारा निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप वृक्षारोपण कराये जाने हेतु सभी तैयारी समय से पूरी कर ली जायें। उन्होंने शत् प्रतिशत गड्ढों की खुदाएए पौध की उपलब्धता व उठान कराये जाने तथा वृक्षारोपण के पश्चात हरीतिमा एप को डाउनलोड कर उसमें वृक्षारोपण की फोटो सहित जीओ टैग शत प्रतिशत कराये जाने के निर्देश दिये।

उन्होंने निर्देशित किया कि ग्राम पंचायत व नगर विकास के अनुसार वृक्षारोपण किये जाने सूचना संकलित कर डीएसटीओ को भेजी जायेगी। उन्होंने कहा कि वृक्षारोपण दिनांक 20 जुलाई, 2024 को प्रात: 06 बजे से सायं 06 बजे तक जनपद के विभिन्न निर्धारित स्थलों में प्रभारी मंत्री, जनप्रतिनिधियों तथा नोडल अधिकारी सहित अन्य अधिकारियों द्वारा किया जायेगा, जिसके लिए अधिकारियों एवं कर्मचारियों की स्थलवार ड्यूटी लगायये जाने के निर्देश दिये।

वृक्षारोपण किये जाने हेतु एक कन्ट्रोल रूम की भी व्यवस्था की गयी है। उन्होंने वृक्षारोपण कार्यक्रम को व्यापक जनसहभागिता प्राप्त करते हुए एक जनआन्दोलन के रूप में उत्सव की भांति कराये जाने के निर्देश दिये। वृक्षारोपण के अन्तर्गत विरासत वृक्ष वाटिका, मित्र वन, वैटलैण्ड संरक्षण वन, बाल पौध रोपण भी किया जाये। उन्होंने वृक्षारोपण कार्यक्रम में समस्त सरकारीध्गैर सरकारी संस्थाओंए एनसीसी, एनएसएस महिला एवं युवक मंगल दलए व्यापार मण्डल व अन्य लोगों के जन सहयोग से अधिक से अधिक वृक्षों का रोपण लक्ष्य के अनुसार कराये जाने के निर्देश दिये।

बैठक में सीडीओ वेद प्रकाश मौर्य ने बताया कि वन विभाग के बाद ग्राम विकास विभाग द्वारा सबसे अधिक वृक्षों का रोपण किया जायेगा। उन्होंने समस्त खण्ड विकास अधिकारियों को निर्देश दिये कि अपने विकास खण्डों में निर्धारित स्थानों एवं अमृत सरोवरों में वृक्षारोपण बृहद स्तर पर करायें और उनकों सुरक्षित रखने के लिए भी व्यवस्थायें की जायें। प्रभागीय वनाधिकारी अरबिन्द कुमार ने बताया कि पेड़ लगाओ.पेड़.बचाओ जन अभियान 2024 के अन्तर्गत प्रत्येक व्यक्ति एक पेड मॉ के नाम समर्पित कर अवश्य रोपित करें। प्रदेश में 36.50 करोड़ का वृक्षारोपण का लक्ष्य निर्धारित किया गया है, जनपद में लगभग 67 लाख वृक्षारोपण किया जायेगा। वन विभाग के साथ 26 अन्य विभागों द्वारा इलेक्शन मोड पर वृक्षारोपण 20 जुलाई को किया जायेगा।

आंखे फोड़ने के बाद चाचा की हत्या की थी भतीजों ने, रिपोर्ट दर्ज

राठ (हमीरपुर)। संपत्ति के विवाद के लालच में आकर भाई और भतीजे ने मिलकर ईंट व लाठी से मिलकर हत्या कर दी थी। गुरुवार को पोस्टमार्टम रिपोर्ट में युवक की दोनों आंखें फुटी हुई थी और सीने व पैर में गंभीर चोटें आईं हैं। पुलिस ने दोनों भतीजों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज किया है। मुस्करा थाने के गहरौली गांव निवासी दशाराम खेत में अपने मवेशी चरा रहा था। तभी उसके भतीजे महेश रमेश व पिता सरजू उसे गांव के बाहर पीटना शुरू कर दिया था। सिर पर ईंट से प्रहार कर उसका चेहरा कुचल दिया था। साथ ही उसकी लाठी से पिटाई करते रहे। पिटाई से दशाराम की मौके पर ही मौत हो गई थी। गुरुवार को शव का पोस्टमार्टम हुआ। पोस्टमार्टम के दौरान किसान की दोनों आंखें कुचली हुई थी और सीने व पैर में चोटें आईं हैं। मुस्करा पुलिस ने दोनों भतीजों के विरुद्ध हत्या का मामला दर्ज किया है।

मारपीट की रिपोर्ट दर्ज

कुरारा (हमीरपुर)। थाना क्षेत्र के कुसमरा गांव निवासी ग्रामीण ने गाली गलौज करने व मना करने पर मारपीट करने की तहरीर थाने में दी है। पीड़ित की तहरीर पर पुलिस ने मारपीट करने का मुकदमा दर्ज किया है।क्षेत्र के कुसमरा गांव निवासी राहुल पुत्र छोटेलाल ने थाने में तहरीर देकर बताया कि बीती रात पड़ोस में शादी का कार्यक्रम था। रात्रि आठ बजे घर शादी में शामिल होने के लिए घर से निकल कर जा रहा था। तभी गांव निवासी बबलू पुत्र लल्लू व बउआ पुत्र देवलाल ने गाली गलौज करने लगे मना करने पर दोनो ने मारपीट किया। जिससे सिर पर चोट आई है। शोर सुनकर लोग आए तो दोनो जान से मारने की धमकी देकर मौके से भाग गए। पीड़ित की तहरीर पर पुलिस ने मारपीट करने का मुकदमा दर्ज किया है।

किसानों की समस्याओं का समयबद्ध निस्तारण हो: डीएम

● किसानों के हितों को संरक्षित करने के लिए संकल्पित होकर काम कर रहा प्रशासन: डीएम

लखीमपुर खीरी। किसानों की समस्याओं के त्वरित निस्तारण के उद्देश्य से गुरुवार को कलेक्ट्रेट में डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल की अध्यक्षता में ष्किसान दिवसष् का आयोजित हुआ। इस दौरान किसानों ने अधिकारियों के सामने समस्याएं रखीं। डीएम ने अफसरों को किसानों की समस्याओं का समय से व गुणवत्तापरक निस्तारण कराने का निर्देश दिए।

डीएम ने कहा कि किसानों की समस्याओं का निदान शासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है।यह भी बताया कि प्रसाशन के समक्ष अन्नदाता किसानों की समस्या का समाधान सर्वोच्च प्राथमिकता का है। किसानों की समस्याओं को तत्काल एवम दीर्घकालिक समाधान की कैटेगरी में प्रस्तुत करें। किसान दिवस किसानों की समस्याओं के निस्तारण के लिए एक बेहतर मंच प्रदान करता है। इस दिवस पर किसान अपनी समस्याओं को न केवल निस्तारण करा सकते हैं बल्कि विशेषज्ञों से अपनी सभी जिज्ञासाओं को भी शांत कर सकते हैं। किसानों के हितों को संरक्षित करने के लिए शासन.प्रशासन करते संकल्पित होकर काम कर रहा। केंद्र एवं प्रदेश सरकार किसानपरक योजनाओं के जरिए उन्हें समृद्ध बनाने के लिए नित नए कदम उठा रही है। डीएम ने मौजूद किसानों की न केवल समस्याएं सुनी बल्कि निराकरण के संबंध में मौजूद अफसरों को निर्देश दिए डीडी कृषि अरविंद मोहन मिश्रा एवम बीमा कम्पनी के प्रतिनिधि द्वारा फसलों को प्राकृतिक आपदा से नुकसान की क्षतिपूर्ति के लि फसल बीमा की विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराई। बैठक में जिला कृषि अधिकारी अरविंद कुमार चौधरी, डीसीओ वेद प्रकाश सिंह, भूमि संरक्षण अधिकारी, उप सम्भागीय कृषि प्रसार अधिकारी, डीएचओ मृत्युंजय सिंह, अध्यक्ष/ वरिष्ठ वैज्ञानिक केवीकेएअन्य अधिकारी एवं कृषक उपस्थित रहें।

पायनियर
नई दिल्ली, शुक्रवार, 19 जुलाई, 2024

कानून में प्रतिबंधात्मक वैधानिक प्रावधान अदालतों को आरोपी को जमानत देने से नहीं रोकते: न्यायालय

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम (यूएपीए) के तहत गिरफ्तार एक व्यक्ति को जमानत देते हुए बृहस्पतिवार को कहा कि कानून में प्रतिबंधात्मक वैधानिक प्रावधान अदालतों को किसी आरोपी को जमानत देने से नहीं रोकते हैं। न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला और न्यायमूर्ति उज्जल भुइयां की पीठ ने कहा कि संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत प्रदत्त जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार सर्वव्यापी और पवित्र है। पीठ ने कहा, किसी संवैधानिक अदालत को दंडात्मक कानून में प्रतिबंधात्मक वैधानिक प्रावधानों के कारण किसी आरोपी को तब जमानत देने से नहीं रोका जा सकता जब उसे पता चलता है कि संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत आरोपी-विचाराधीन कैदी के

अधिकार का उल्लंघन किया गया है। इसने कहा, ऐसी स्थिति में ऐसे वैधानिक प्रतिबंध आड़े नहीं आएंगे। यहां तक कि किसी दंडात्मक कानून की व्याख्या के मामले में, चाहे वह कितना भी कठोर क्यों न हो, एक संवैधानिक न्यायालय को संवैधानिकता और कानून के शासन के पक्ष में झुकना होगा, जिसमें स्वतंत्रता एक मूलभूत हिस्सा है।

शीर्ष अदालत ने कहा कि किसी विशेष मामले के दिए गए तथ्यों के मद्देनजर एक संवैधानिक अदालत जमानत देने से इनकार कर सकती है, लेकिन यह कहना गलत होगा कि किसी विशेष कानून के तहत जमानत नहीं दी जा सकती। न्यायालय ने नेपाल निवासी शेख जावेद इकबाल की अपील को स्वीकार करते हुए यह टिप्पणी की। इसने इकबाल को जमानत पर रिहा कर दिया। पुलिस के अनुसार, इकबाल ने स्वीकार किया था कि वह नेपाल में नकली भारतीय मुद्रा नोटों के अवैध व्यापार में शामिल था। उसके खिलाफ भारतीय दंड संहिता के विभिन्न प्रावधानों तथा बाद में गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम (यूएपीए) के तहत मामला दर्ज किया गया था।

इकबाल की ओर से पेश वकील एम एस खान ने कहा कि अपीलकर्ता नौ साल से अधिक समय से हिरासत में है। खान ने कहा कि निकट भविष्य में आपराधिक मुकदमे के समाप्त होने की कोई संभावना नहीं है और इसलिए इकबाल को जमानत पर रिहा कर दिया जाना चाहिए। उत्तर प्रदेश सरकार की अतिरिक्त महाधिवक्ता गरिमा प्रसाद ने दलील का विरोध किया और कहा कि अपीलकर्ता के खिलाफ आरोप बहुत गंभीर हैं और चूंकि वह एक विदेशी नागरिक है, इसलिए उसके भागने का खतरा है। उन्होंने कहा कि इसलिए आरोपी को जमानत पर रिहा नहीं किया जा सकता और निचली अदालत को मुकदमे में तेजी लाने का निर्देश दिया जा सकता है। शीर्ष अदालत ने कहा, केवल इस आधार पर जमानत से इनकार नहीं किया जा सकता कि आरोप बहुत गंभीर हैं, हालांकि मुकदमे के समाप्त होने की कोई संभावना नहीं है। पीठ ने कहा कि जमानत देते हुए निचली अदालत अपीलकर्ता का पासपोर्ट औराया नागरिकता दस्तावेज जब्त कर लेगी।

उच्च न्यायालय ने रसोई गैस सिलेंडर पर सब्सिडी को लेकर दाखिल याचिका पर केंद्र से तलब किया

नई दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय ने बृहस्पतिवार को केंद्र से एक महिला की याचिका पर जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया जिसने दावा किया है कि अति गरीब पृष्ठभूमि के साथ राशन कार्ड होने के बावजूद उसे उज्ज्वला योजना के तहत रसोई गैस सिलेंडर पर सब्सिडी नहीं मिल रहा है क्योंकि पहले से उसके पास गैस कनेक्शन था। न्यायमूर्ति संजीव नरूला ने नोटिस जारी किया और सरकार से उस याचिका पर जवाब दाखिल करने को कहा जिसमें कहा गया है कि सब्सिडी उन्हें भी दी जानी चाहिए। याचिकाकर्ता ने दलील दी है कि अपेक्षित मानदंडों को पूरा करने के बावजूद वह प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना (पीएमयूवाई) में नामांकित नहीं हो सकी और लाभार्थी नहीं बन सकी क्योंकि यह योजना केवल उन लोगों पर लागू होगी जिनके पास गैस कनेक्शन नहीं है।

अदाणी की खावड़ा में नवीकरणीय ऊर्जा परियोजना को देखने पहुंचे अमेरिकी राजदूत गार्सेटी

भाषा। नई दिल्ली

भारत में अमेरिका के राजदूत एरिक गार्सेटी अदाणी समूह की खावड़ा नवीकरणीय ऊर्जा परियोजना देखने पहुंचे। यह दुनिया में सबसे बड़ी नवीकरणीय ऊर्जा परियोजना है। यह इस बात का संकेत है कि समूह हिंडनबर्ग के आरोपों से आगे निकल गया है और उसे पूरा समर्थन मिल रहा है। गार्सेटी ने 16 जुलाई को खावड़ा का दौरा करने के बाद सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा, गुजरात में खावड़ा नवीकरणीय ऊर्जा परियोजना को देखने के बाद मुझे प्रेरणा मिली। मैंने भारत के शुद्ध रूप से शून्य कार्बन उत्सर्जन लक्ष्यों को आगे बढ़ाने वाली अदाणी ग्रीन की अनूठी परियोजनाओं के बारे में जाना और देखा। पर्यावरण अनुकूल विकास के लिहाज से स्वच्छ ऊर्जा महत्वपूर्ण है। साथ ही हमारी द्विपक्षीय साझेदारी क्षेत्र और दुनिया के लिए स्वच्छ और हरित भविष्य के समाधान को आकार देने को लेकर महत्वपूर्ण है।

अदाणी ग्रीन एनर्जी लि. गुजरात के कच्छ के खावड़ा में बंजर भूमि पर 30,000 मेगावाट क्षमता की दुनिया की सबसे बड़ी नवीकरणीय ऊर्जा परियोजना विकसित कर रही है। 538 वर्ग किलोमीटर में निर्मित, यह परियोजना पेरिस के आकार से पांच गुना और लगभग मुंबई शहर जितनी बड़ी है। कंपनी ने काम शुरू करने के 12 महीनों के भीतर 2,000 मेगावाट क्षमता चालू की है। 30,000 मेगावाट क्षमता की पूरी परियोजना के 2030 तक पूरा होने की उम्मीद है।

समूह के चेयरमैन गौतम अदाणी ने एक्स पर गार्सेटी के साथ एक तस्वीर डाली और इस यात्रा के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। उन्होंने लिखा है, खावड़ा में अदाणी की 30 गीगावाट (एक गीगावाट बराबर 1,000 मेगावाट) क्षमता के नवीकरणीय ऊर्जा परियोजना स्थल और मुंदड़ा बंदरगाह पर आने के लिए भारत में अमेरिकी राजदूत का अभारी हूं...।

अमेरिकी राजदूत का अदाणी समूह की परियोजना स्थल पर जाना और उसे सार्वजनिक करने के कदम को भारत के सबसे बड़े बुनियादी ढांचा समूह में अमेरिकी सरकार के भरोसे के संकेत के रूप में देखा जा रहा है। अमेरिकी निवेश और शोध कंपनी हिंडनबर्ग रिसर्च के अदाणी समूह पर धोखाधड़ी और कंपनियों के शेयरों में हेराफेरी के आरोप के लगभग डेढ़ साल बाद गार्सेटी का यह दौरा महत्वपूर्ण है। अदाणी हिंडनबर्ग के सभी आरोपों को खारिज करते हुए उसे पूरी तरह बेबुनियाद बताया है। समूह की कंपनियां अब हिंडनबर्ग की रिपोर्ट से हुए नुकसान से बाहर आ गई हैं।

गढ़चिरौली मुठभेड़ में 12 नक्सली मारे गए उन पर कुल 86 लाख रुपए का था इनाम

भाषा। गढ़चिरौली

महाराष्ट्र के गढ़चिरौली जिले में सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ में 12 नक्सलियों को मार गिराया गया। मरने वाले नक्सलियों पर कुल 86 लाख रुपए का नकद इनाम था। पुलिस ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने दावा किया कि अभियान की सफलता के कारण माओवादियों के कोरची-टीपागढ़ दलम एवं चटगांव-कासनसूर दलम का सफाया हो गया है। बुधवार को छत्तीसगढ़ सीमा के पास हुई मुठभेड़ में पांच महिला उग्रवादियों समेत कुल 12 नक्सली मारे गए थे। मुठभेड़ में तीन सुरक्षाकर्मी घायल हो गए।

एक अधिकारी ने बताया कि दोनों पक्षों के बीच गोलीबारी दोपहर में शुरू हुई और करीब छह घंटे तक चली। गढ़चिरौली के पुलिस अधीक्षक कार्यालय से जारी एक बयान में कहा गया है, कल सुबह विश्वसनीय सूचना मिली कि कोरची-टीपागढ़ एवं चटगांव-कासनसूर के संयुक्त स्थानीय संगठन दस्ते (एलओएस) के 12 से 15 सदस्य वंडोली गांव में छत्तीसगढ़ की सीमा के पास वन क्षेत्र में डेरा डाले हुए हैं। इनका उद्देश्य नक्सलियों द्वारा मनाए जाने वाले आगामी शहीद सप्ताह (28 जुलाई से तीन अगस्त) के मद्देनजर विध्वंसकारी गतिविधियों को अंजाम देना है। इसमें कहा गया है, पुलिस उपाधीक्षक (ऑपरेशन) विशाल नागरगोजे के नेतृत्व में माओवादी विरोधी सी-60 दस्ते की सात इकाइयों को तत्काल क्षेत्र में तलाशी अभियान के लिए भेजा गया। जब टीमें अभियान में लगी हुई थीं, तब माओवादियों ने उन पर अंधाधुंध गोलीबारी की, जिसका सी-60 टीमों ने मुहंतोड़ जवाब दिया।

पुलिस अधीक्षक नीलोत्पल ने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि पुलिस का दबाव बढ़ता देख माओवादी घने जंगल की ओर भाग गए। उन्होंने बताया कि गोलीबारी के बाद इलाके की तलाशी ली गई, जिसमें सात पुरुष और पांच महिला माओवादियों के शव बरामद हुए। अधिकारी ने बताया कि शवों के अलावा, पुलिस ने मौके से सात स्वचालित हथियार, तीन एके 47 राइफल, दो इंसास राइफल, एक कार्बाइन गन और एक सेल्फ लोडिंग राइफल (एसएलआर), माओवादी साहित्य, विस्फोटक, डेटोनेटर और अन्य सामान बरामद किया।

नीलोत्पल ने बताया, मुठभेड़ में नक्सलियों के कोरची-टीपागढ़ एवं चटगांव-कासनसूर इलाके के डिवीजनल कमेटी के तीन कुख्यात कैडर, पांच एरिया कमेटी सदस्य और चार दलम सदस्य मारे गए, जिन पर कुल 86 लाख रुपए का इनाम था। उन्होंने बताया, उत्तरी गढ़चिरौली के ज्यादातर हिस्से से सशस्त्र माओवादी समूहों का सफाया हो गया है। पुलिस ने बताया कि मुठभेड़ में मारे गए माओवादियों की पहचान योगेश तुलावी उर्फ नरेंद्र (36), विशाल अतराम उर्फ लक्ष्मण (43) और प्रमोद कचलामी (31) के रूप में हुई है। तीनों चटगांव-कासनसूर दलम के थे और प्रत्एक पर 16-16 लाख रुपए का इनाम था।

उन्होंने बताया कि अन्य मृतक, महारू गावड़े (31), अनिल दर्रो (28), सरिता परसा (37), रज्जो गावड़े (35) और विज्जू, सभी चटगांव-कासनसूर और कोरची-टीपागढ़ एलओएस के एरिया कमेटी सदस्य थे और प्रत्एक पर 6-6 लाख रुपए का इनाम था। चंदा पोद्याम, सीता हॉके, रोजा और सागर - सभी चटगांव-कासनसूर और कोरची-टीपागढ़ एलओएस के सदस्य थे, जिन पर दो-दो लाख रुपए का इनाम था। नीलोत्पल ने कहा, 2021 से गढ़चिरौली में 80 कट्टर माओवादियों को मार गिराया गया है, 102 माओवादियों को गिरफ्तार किया गया है और 29 अन्य ने गढ़चिरौली पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर दिया है।

छत्तीसगढ़ में मुठभेड़, महिला नक्सली ढेर

दंतेवाड़ा। छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित दंतेवाड़ा जिले में सुरक्षाबलों ने मुठभेड़ में एक महिला नक्सली को मार गिराया है। पुलिस अधिकारियों ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि जिले के किरंदुल थाना क्षेत्र के अंतर्गत पुरंगेल और इरालगुडेम गांव के मध्य जंगल में सुरक्षाबलों ने मुठभेड़ में एक महिला नक्सली को मार गिराया है। उन्होंने बताया कि दंतेवाड़ा जिले के किरंदुल-अरनपुर, सुकमा जिले के जगरगुंडा और बीजापुर जिले के गंगालूर और बासागुड़ा थाना क्षेत्र के अंतर्गत डोडी, तुमनार, पीडिया और तामोडी गांव के आसपास के जंगल और पहाड़ियों में जगदीश, दिनेश और वेल्ला जैसे नक्सलियों की उपस्थिति की सूचना मिली थी। अधिकारियों ने बताया कि सूचना के आधार पर दो दिन पहले 16 जुलाई को दंतेवाड़ा, बीजापुर और सुकमा जिले के डीआरजी, बस्तर फाइटर्स, एसटीएफ, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की कोबरा बटालियन तथा सीआरपीएफ की ही 111 वीं वाहिनी, 230 वीं वाहिनी, 231 वीं वाहिनी और 195 वीं वाहिनी के संयुक्त दल को नक्सल विरोधी अभियान के तहत रवाना किया गया था। उन्होंने बताया कि अभियान के दौरान आज किरंदुल थाना क्षेत्र के अंतर्गत पुरंगेल और इरालगुडेम गांव के मध्य डीआरजी और बस्तर फाइटर्स के दल पर नक्सलियों ने गोलीबारी शुरू कर दी। अधिकारियों ने बताया कि सुरक्षाबलों ने जब जवाबी कार्वाई की तब कुछ देर बाद नक्सली वहां से भाग गए। उन्होंने बताया कि गोलीबारी रुकने के बाद जब घटनास्थल की तलाशी ली गई तब वहां एक महिला नक्सली का शव, हथियार और अन्य सामान बरामद किए गए। मृतक नक्सली की पहचान अभी नहीं हो पाई है। अधिकारियों ने बताया कि मुठभेड़ में कई अन्य नक्सलियों के घायल होने की संभावना है। इससे पहले बुधवार देर रात राज्य के बीजापुर जिले में नक्सलियों ने बारूदी सुरंग में विस्फोट कर दिया, जिससे एसटीएफ के दो जवान शहीद हो गए और चार अन्य घायल हो गए।

सनातन संस्कृति को आगे बढ़ा रहे पीएम और सीएम योगी: भाजपा सांसद

भाषा। कानपुर (उप्र)

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सांसद देवेन्द्र सिंह ने बृहस्पतिवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बिना किसी भेदभाव के काम करके सनातन संस्कृति को आगे बढ़ा रहे हैं। उत्तर प्रदेश की अकबरपुर सीट से भाजपा सांसद देवेन्द्र सिंह ने किट फॉर किड्स इंडिया अभियान के तहत बच्चों को स्कूल बैग तथा अन्य सामान वितरित करने के अवसर पर यह बात कही। अमेरिका में पढ़ रहे भारतीय मूल के 11वीं के छात्र विराज सिंह द्वारा भी किट फॉर किड्स इंडिया अभियान के तहत कानपुर स्थित एक विद्यालय में सामान वितरित किया गया।

सांसद ने कहा कि जरूरतमंदों की मदद करना हमारी सनातन संस्कृति का हिस्सा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में चल रही सरकारें इस संस्कृति को आगे बढ़ा रही हैं। भाजपा के शासन में किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं किया जा रहा है। यही सरकार की कार्य संस्कृति है।

पूर्व मुख्य सूचना आयुक्त भावेश कुमार सिंह ने जरूरतमंद छात्रछात्राओं को स्कूल बैग व अन्य सामान वितरित करने पर छात्र विराज सिंह की सराहना की और कहा कि उसने एक छात्र के रूप में अपना प्रयास किया और आगे भी ऐसे कार्यक्रम जारी रहने चाहिए।

अमेरिका के मैरीलैंड स्थित एचवुड हाईस्कूल में 11वीं कक्षा में पढ़ने वाले छात्र विराज सिंह ने बताया कि किट फॉर किड्स इंडिया का उद्देश्य जरूरतमंद भारतीय बच्चों को पढ़ने के लिए आवश्यक चीजों की आपूर्ति करना है। इस परियोजना के माध्यम से यह सुनिश्चित करने का लक्ष्य रखा गया है कि हर बच्चे के पास उसकी पढ़ाई के लिए जरूरी चीजें उपलब्ध हों।

फतेहपुर सीकरी में मुहर्रम के जुलूस में फलस्तीन समर्थक नारे लागाए गए, सात गिरफ्तार

आगरा। उत्तर प्रदेश में आगरा के मिश्रित आबादी वाले कस्बे फतेहपुर सीकरी में मुहर्रम के जुलूस के दौरान फलस्तीन के समर्थन में नारेबाजी करने पर पुलिस ने बुधवार देर रात सात युवकों को गिरफ्तार किया। नारेबाजी का वीडियो इंटरनेट पर प्रसारित किए जाने पर पुलिस ने मामला दर्ज किया है। पुलिस आयुक्त (डीसीपी) सोनम कुमार ने बताया कि मुहर्म के जुलूस के दौरान फतेहपुर सीकरी में माहौल बिगाड़ने की कोशिश की गई। बुधवार देर शाम कस्बे के मुख्य बाजार से मुहर्रम का जुलूस निकाला जा रहा था। जुलूस के दौरान कुछ युवक एक स्थान पर रुककर फलस्तीन जिंदाबाद के नारे लगाने लगे। सोशल मीडिया पर वायरल 1.15 मिनट के इस वीडियो में युवक एक घर के सामने खड़े होकर ऊंची आवाज में नारे लगाते दिख रहे हैं। पुलिस ने मामला दर्ज करके सात युवकों को गिरफ्तार कर लिया है और अन्य युवकों को चिह्नित कर उनकी गिरफ्तारी के लिए दबिश दी जा रही है।

एनजीटी ने गंगा, यमुना नदियों में पूजा-पाठ की सामग्री फेंकने से रोकने के लिए उपाय सुझाए

नई दिल्ली। गंगा और यमुना नदियों में पूजा पाठ की सामग्री फेंकने से रोकने के लिए राष्ट्रीय हरित अधिकरण ने समारोह, अनुष्ठान और मूर्ति विसर्जन के लिए खास स्थान विकसित करने सहित अतिरिक्त कदम उठाने का सुझाव दिया है। एनजीटी ने गढ़मुक्तेश्वर, कानपुर, बिठूर, प्रयागराज, वाराणसी, आगरा और मथुरा के जिलाधिकारियों को उन स्थानों को चिह्नित करने और उन पर निगरानी रखने का भी निर्देश दिया, जहां ऐसी वस्तुएं फेंकने या विसर्जित करने की संभावना है।

एनजीटी एक मामले की सुनवाई कर रहा था, जिसमें उसने यमुना और गंगा नदियों में पॉलीथीन की थैलियों में पैक किए गए फूल और मालाओं को फेंकने के संबंध में एक समाचार पत्र की रिपोर्ट पर स्वत: संज्ञान लिया था। एक आदेश में एनजीटी अध्यक्ष न्यायमूर्ति प्रकाश श्रीवास्तव की पीठ ने कहा कि अधिकरण के पूर्व निर्देशों और केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी), दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी) तथा यमुना प्रदूषण से निपटने के लिए गठित उच्च स्तरीय समिति के विभिन्न निर्णयों के बावजूद पूजा सामग्री और मालाएं फेंकने के कारण प्रदूषण की समस्या बनी हुई है।

पीठ में न्यायिक सदस्य न्यायमूर्ति अरूण कुमार त्यागी और विशेषज्ञ सदस्य ए सेंथिल वेल भी शामिल थे। पीठ ने डीपीसीसी की 26 जून की रिपोर्ट पर गौर किया जिसके अनुसार इस वर्ष 31 मई तक समिति ने यमुना डूब क्षेत्र में निर्माण अपशिष्ट डालने और अवैध पार्किंग के लिए 3,916 चालान जारी किए थे और लगभग 1.06 रुपए जुर्माने के रूप में वसूले गए थे। पीठ ने कहा कि यमुना और गंगा नदियों में प्रदूषण को रोकने के लिए एनजीटी के पहले के आदेशों के उचित क्रियान्वयन के लिए कुछ अतिरिक्त कदम उठाए जा सकते हैं। इनमें पूजा-पाठ की सामग्री नहीं फेंकने का उल्लेख करने वाले डिस्प्ले बोर्ड लगाना और निर्देश का उल्लंघन करने पर जुर्माना लगाने के बारे में जानकारी देना शामिल है।

एनजीटी ने कहा, स्कूल स्तर पर नदियों में इन सामग्रियों को फेंके जाने के प्रभाव के बारे में व्यापक जागरूकता बढ़ानी चाहिए तथा नदी के डूब क्षेत्र के संरक्षण के लिए नदी के किनारे से 100 मीटर दूर तथा तट पर धार्मिक अनुष्ठानों को प्रतिबंधित करने का प्रयास किया जाना चाहिए। एनजीटी ने कहा कि संबंधित अधिकारी समारोह, अनुष्ठान और मूर्तियों व पूजा पाठ की सामग्री के विसर्जन के लिए विशेष घाट विकसित करने को लेकर उपयुक्त स्थान की पहचान कर सकते हैं। एनजीटी ने कहा कि प्रत्एक घाट पर मूर्ति विसर्जन, फूल, नारियल और अन्य सामग्री के संग्रह और प्रसंस्करण के संबंध में एक अलग योजना बनाई जा सकती है। साथ ही पुलों, नालों और अन्य स्थानों से नदियों में पूजा पाठ की सामग्री के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष निपटान को नियंत्रित और रोका जा सकता है।

तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने कृषि ऋण माफी योजना शुरू की

हैदराबाद। तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी ने बृहस्पतिवार को कृषि ऋण माफी योजना की शुरुआत की। पहले चरण में योजना के तहत उन किसानों के खातों में 6,098 करोड़ रुपए जमा किए गए जिन पर एक लाख रुपए तक का कर्ज है। रेड्डी ने राज्य सचिवालय में आयोजित कार्यक्रम में कुछ किसानों को चेक दिया। उन्होंने वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए कुछ किसानों से बात भी की। मुख्यमंत्री के मुताबिक, 11 लाख किसानों को लाभ पहुंचाने के लिए 6,098 करोड़ रुपए बैंक को जारी किए गए है। कृषि ऋण माफी योजना कुल तीन चरणों में पूरी होगी। दूसरे चरण में जुलाई के अंत तक 1.5 लाख रुपए तक के फसल ऋण माफ कर दिए जाएंगे जबकि तीसरे चरण में अगस्त में दो लाख रुपए तक के ऋण माफ किए जाएंगे। मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि 31 हजार करोड़ रुपए की ऋण माफी योजना तीन चरणों में लागू की जाएगी और अगस्त तक यह पूरी होगी। पिछली भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) सरकार ने दो कार्यकाल तक सत्ता में रहने के बावजूद कृषि ऋण माफी के अपने वादे को ठीक से लागू नही किया। मुख्यमंत्री ने दावा किया कि कांग्रेस सरकार पूर्ववर्ती सरकार के दौरान लिए गए सात लाख करोड़ रुपए के कर्ज पर हर महीने करीब 7,000 करोड़ रुपए का ब्याज चुका रही है। रेड्डी ने कहा कि कांग्रेस सरकार लोकसभा के मौजूदा नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी द्वारा 2022 में तेलंगाना में एक जनसभा में और बाद में कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी द्वारा 2023 में राज्य में एक रैली में किए गए वादे के अनुसार ऋण माफी शुरू कर रही है। वह जल्द ही दिल्ली जाएंगे और राहुल गांधी को इस महीने के अंत में राज्य में आयोजित होने वाली एक जनसभा में हिस्सा लेने के लिए आमंत्रित करेंगे ताकि उनका आभार व्यक्त किया जा सके।

गुंडा एक्ट के तहत हिरासत में लिए गए यूट्यूबर सवुक्कू शंकर को रिहा करें : न्यायालय

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने बृहस्पतिवार को यूट्यूबर सवुक्कू शंकर को रिहा करने का आदेश दिया, जिन्हें मई में तमिलनाडु पुलिस ने गुंडा अधिनियम के तहत हिरासत में लिया था। कोयंबटूर केंद्रीय कारागार में बंद शंकर को अंतरिम राहत प्रदान करते हुए न्यायमूर्ति सुधांशु धूलिया और न्यायमूर्ति अहसानुद्दीन अमानुल्लाह की पीठ ने कहा कि वह मामले का गुण-दोष के आधार पर निर्णय नही करेगी, क्योंकि मद्रास उच्च न्यायालय इस मामले पर विचार कर रहा है। पीठ ने पक्षों की ओर से उपस्थित वकीलों की यह दलील दर्ज की कि वे मामले की सुनवाई में तेजी लाने के लिए सोमवार या मंगलवार को उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश या उचित पीठ के समक्ष मामला उठाएंगे। उन्होंने कहा, हमारा निश्चित रूप से मानना है कि मामले में जो देरी हुई है, उसमें याचिकाकर्ता का कोई हाथ नही है। पीठ ने कहा, विशिष्ट तथ्यों को देखते हुए, याचिकाकर्ता को तब तक रिहा किया जाए जब तक कि हिरासत के खिलाफ मामला उच्च न्यायालय द्वारा तय नही कर लिया जाता। पीठ ने स्पष्ट किया कि उसका आदेश केवल निवारक हिरासत के मामलों से संबंधित है। पीठ ने कहा कि यदि याचिकाकर्ता किसी अन्य मामले में जेल में है तो यह आदेश उस पर प्रभाव नही डालेगा। शीर्ष अदालत मद्रास उच्च न्यायालय के उस आदेश को चुनौती देने वाली अपील पर सुनवाई कर रही थी जिसमें बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका को स्थगित कर दिया गया था। यह याचिका शंकर की मां ने गुंडा अधिनियम के तहत उसकी हिरासत को चुनौती देते हुए दायर की थी। चेन्नई पुलिस की प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, चेन्नई पुलिस की केंद्रीय अपराध शाखासाइबर अपराध में शंकर के खिलाफ सात मामले लंबित हैं, जिनमें से तीन की जांच चल रही है, दो में आरोप पत्र दायर किए जा चुके है और शेष मामलों में सुनवाई लंबित है। शंकर (48) को कोयंबटूर पुलिस ने चार मई को दक्षिणी थेनी में एक यूट्यूब चैनल को दिए साक्षात्कार में महिला पुलिस कर्मियो पुलिस अधिकारियो के बारे में कथित अपमानजनक बयान देने के आरोप में गिरफ्तार किया था।

धन शोधन मामला में अदालत 22 जुलाई को सेंथिल बालाजी पर आरोप तय करेगी

चेन्नई। तमिलनाडु के चेन्नई में एक सत्र न्यायालय धन शोधन के एक मामले में 22 जुलाई को पूर्व मंत्री वी. सेंथिल बालाजी के खिलाफ आरोप तय करेगा। बालाजी को पिछले वर्ष प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने गिरफ्तार किया था। प्रधान सत्र न्यायाधीश एस. अली ने अभियोजन पक्ष को आरोप तय किए जाने वाले दिन द्रमुक नेता को अदालत में पेश करने का निर्देश दिया। अभियोजन पक्ष ने बृहस्पतिवार को मामले की सुनवाई शुरू होने पर बालाजी को केंद्रीय पुझल जेल से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए अदालत में पेश किया। न्यायाधीश ने बालाजी की रिमांड और न्यायिक हिरासत 22 जुलाई तक बढ़ा दी। न्यायाधीश ने इस बीच मामले में बरी करने के अनुरोध वाली बालाजी की याचिका खारिज कर दी। बालाजी को 14 जून, 2023 को ईडी ने नकदी के बदले नौकरी घोटाले से जुड़े धन शोधन के एक मामले में गिरफ्तार किया था। वह पूर्ववर्ती ऑल इंडिया अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कषगम (अन्नाद्रमुक) सरकार में परिवहन मंत्री थे।

पेज 1 का शेष

एनटीए...

जांच के मुद्दे पर पीठ ने कहा, सीबीआई जांच कर रही है। सीबीआई ने हमें जो बताया है अगर उसका खुलासा कर दिया जाता है तो इससे जांच पर असर पड़ेगा। उच्चतम न्यायालय 40 से अधिक याचिकाओं पर सुनवाई कर रहा है। इनमें राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) की याचिका भी शामिल है, जिसमें उसने, परीक्षा में कथित अनियमितताओं को लेकर विभिन्न उच्च न्यायालयों में उसके खिलाफ लंबित मामलों को उच्चतम न्यायालय में स्थानांतरित करने का अनुरोध किया है। उच्चतम न्यायालय ने 11 जुलाई को नीट-यूजी 2024 से जुड़ी याचिकाओं पर सुनवाई 18 जुलाई तक टाल दी थी। इन याचिकाओं में नीट-यूजी 2024 के आयोजन में कथित अनियमितताओं एवं कदाचार की जांच करने, परीक्षा रद्द करने और नए सिरे से परीक्षा आयोजित करने का निर्देश देने का अनुरोध किया गया है। पांच मई को 23.33 लाख से अधिक छात्रों ने 571 शहरों के 4,750 केंद्रों पर नीट-यूजी परीक्षा दी थी। इन शहरों में 14 विदेशी शहर भी शामिल थे। केंद्र और एनटीए ने उच्चतम न्यायालय में दाखिल अपने हलफनामों में कहा था कि बड़े पैमाने पर गोपनीयता के उल्लंघन के किसी भी सबूत के अभाव में परीक्षा को रद्द करना प्रतिकूल होगा और यह लाखों ईमानदार उम्मीदवारों को गंभीर रूप से खतरे में डालेगा।

गोंडा...

घटनास्थल पर पहुंची गोंडा की जिला मजिस्ट्रेट नेहा शर्मा ने बताया कि घायलों को अस्पताल पहुंचाया गया है। घटनास्थल पर राहत कार्य जारी है। राहत आयुक्त कुमार ने बताया कि 40 सदस्यीय मेडिकल टीम और 15 एंबुलेंस मौके पर हैं और अधिक मेडिकल टीमें और एंबुलेंस वहां भेजी गई हैं। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि बोगी के पटरी से उतरने और बाईं ओर गिरने की तेज आवाज के बाद यात्रियों खासकर बच्चों की तेज चीखें सुनाई दीं। स्लीपर कोच में यात्रा कर रहे संदीप कुमार ने कहा, मुझे एक लड़के की तेज चीखें याद हैं जो मेरे सामने वाली बर्थ पर बैठा था। एक पल के लिए कोच धूल से भर गया और चारों तरफ अंधेरा छा गया। मुझे याद नहीं कि अगले कुछ सेकंड में क्या हुआ। मुझे सिर्फ चीखें याद हैं। यह भी याद है कि किसी यात्री ने मेरा हाथ खींचा और मुझे खिड़की के शीशे तोड़कर बाहर निकलने में मदद की। यात्रियों को पास की रोड तक पहुंचने के लिए ट्रैक के दोनों ओर खेतों में घुटनों तक पानी से होकर गुजरना पड़ा। दुर्घटना से सदमे में आए या घायल हुए अन्य लोग ट्रैक पर ही बैठकर राहत व बचाव दल का इंतजार कर रहे थे। जब पुलिस की टीमें मौके पर पहुंचीं, तो अधिकारियों ने लोगों से क्षतिग्रस्त डिब्बों से दूर रहने की अपील की। बचाव कर्मियों ने इलाके की घेराबंदी कर दी और क्षतिग्रस्त डिब्बों में घुसकर यह सुनिश्चित किया कि कोई यात्री अंदर न छूट जाए। जिला प्रशासन ने यात्रियों को उनके संबंधित स्थानों तक पहुंचाने के लिए बसों की भी व्यवस्था की। रेलवे और स्थानीय प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी बचाव कार्यों की निगरानी के लिए लखनऊ से करीब 150 किलोमीटर दूर मौके पर पहुंचे। उन्होंने कहा कि फिलहाल उनकी प्राथमिकता घायलों की जान बचाना और उन्हें बेहतरीन इलाज देना है।

जम्मू...

2.00 बजे हुआ। सैनिक ज़ादान लोअर गवर्नमेंट हाई स्कूल, काश्तीगढ़, डोडा के अंदर डेरा डाले हुए थे, जब आतंकवादियों ने उन्हें निशाना बनाया। सेना के जवानों द्वारा की गई त्वरित जवाबी कार्रवाई ने आतंकवादियों को इलाके से भागने पर मजबूर कर दिया। रक्षा प्रवक्ता ने बताया कि गंभीर रूप से घायल एक सैनिक को चुनौतीपूर्ण मौसम की स्थिति के बावजूद उन्नत हल्के हेलीकॉप्टर (एएलएच) द्वारा उधमपुर स्थित कमांड अस्पताल पहुंचाया गया। वायु सेना स्टेशन, उधमपुर से एएलएच द्वारा त्वरित कार्रवाई ने डोडा (जम्मू और कश्मीर) में एक गंभीर रूप से घायल सैनिक की जान बचाई। पीआरओ डिफेंस जम्मू ने एक्स पर पोस्ट किया, चुनौतीपूर्ण मौसम के बावजूद, निकासी सफल रही, जिससे कमांड अस्पताल, उधमपुर में समय पर चिकित्सा देखभाल सुनिश्चित हुई। टीम को उनके समर्पण और बहादुरी के लिए बधाई। अलग से, एक अग्रिम चौकी की रखवाली कर रहे सुरक्षा बलों ने बुधवार देर रात राजौरी जिले के सुंदरबनी सेक्टर में नियंत्रण रेखा (एलओसी) के पास संदिग्ध गतिविधि देखने के बाद गोलीबारी की। अधिकारियों ने कहा कि बृहस्पतिवार की सुबह इलाके की तलाशी ली गई, लेकिन जमीन पर संदिग्ध गतिविधि से जुड़ी कोई चीज नहीं मिली।

विवादित...

आरोपी मनोरमा, उनके पति दिलीप और पांच अन्य लोगों का पता लगाने के लिए कई टीम गठित की गई थीं। पूजा खेडकर आईएएस परीक्षा के समय दिए गए दिव्यांगता और ओबीसी प्रमाण पत्र को लेकर सवालों के घेरे में हैं। पुणे कलेक्टर कार्यालय में तैनाती के दौरान किए गए आचरण को लेकर भी उनके खिलाफ जांच की जा रही है। विवाद के बीच सरकार ने मंगलवार को खेडकर के जिला प्रशिक्षण कार्यक्रम को स्थगित कर दिया और उन्हें 23 जुलाई तक लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी में रिपोर्ट करने को कहा गया है। एक वरिष्ठ अधिकारी ने बुधवार को बताया कि पुणे की भ्रष्टाचार रोधी इकाई को शिकायत मिली है जिसमें पूर्व सरकारी कर्मचारी और पूजा के पिता दिलीप खेडकर के खिलाफ कथित आय से अधिक संपत्ति के मामले में खुली जांच करने का अनुरोध किया गया है। उन्होंने बताया कि एसीबी की नासिक इकाई पहले ही उनके खिलाफ कथित आय से अधिक संपत्ति मामले की जांच कर रही है। इसलिए पुणे की भ्रष्टाचार रोधी इकाई ने मुख्यालय से नई शिकायत को भी पूर्व की शिकायत से जोड़ने या नए सिरे से जांच को लेकर व्यवस्था मांगी है।

बांग्लादेश...

छात्र प्रदर्शनकारियों ने बृहस्पतिवार को राष्ट्रव्यापी बंद करने का निर्णय लिया है। मौजूदा आरक्षण प्रणाली के तहत 1971 के बांग्लादेश मुक्ति संग्राम के नायकों की संतानों और पौत्र-पौत्रियों के लिए 30 फीसदी नौकरियां, प्रशासनिक जिलों के लिए 10 प्रतिशत, महिलाओं के लिए 10 प्रतिशत, जातीय अल्पसंख्यक समूहों के लिए पांच प्रतिशत और दिव्यांगों के लिए एक प्रतिशत नौकरियां आरक्षित हैं। हर साल लगभग तीन हजार सरकारी नौकरियां के लिए लगभग चार लाख स्नातक छात्र आवेदन करते हैं। प्रदर्शनकारी इस व्यवस्था में बदलाव के लिए आवाज उठा रहे हैं और उनका कहना है कि मौजूदा व्यवस्था मेधावी छात्रों को प्रथम श्रेणी और द्वितीय श्रेणी की सरकारी नौकरियों से वंचित करती है।

पीएम मोदी...

विशेष रूप से, उत्तर प्रदेश के महत्वपूर्ण राज्य में, पार्टी की सीटों की संख्या पिछले कार्यकाल में 61 से घटकर इस चुनाव में 33 हो गई। 2 जुलाई को, राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) संसदीय दल की बैठक राष्ट्रीय राजधानी में हुई, जब भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए ने लोकसभा चुनावों में लगातार तीसरी बार जीत हासिल की। जुलाई के अंत में भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों की बैठक होने की संभावना है। बैठक में पीएम मोदी, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा और गृह मंत्री अमित शाह मौजूद रहेंगे।

कांवड़...

जनता दल (यूनाइटेड) जैसे एनडीए सहयोगियों से भी कड़ी आलोचना का सामना करना पड़ा, जिन्होंने सांप्रदायिक तनाव पैदा करने वाले इस भेदभावपूर्ण आदेश को तत्काल वापस लेने की मांग की। यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री और सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि मुजफ्फरनगर पुलिस का कांवड़ यात्रा मार्ग पर स्थित भोजनालयों को अपने मालिकों के नाम प्रदर्शित करने का आदेश एक सामाजिक अपराध है और उन्होंने अदालतों से मामले का स्वत: संज्ञान लेने को कहा। उत्तर प्रदेश पुलिस की आलोचना करते हुए एआईएमआईएम प्रमुख और हैदराबाद के सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने इस कदम की तुलना दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद और हिटलर के जर्मनी में यहूदियों के बहिष्कार से की। ओवैसी ने ट्वीट किया, उत्तर प्रदेश पुलिस के आदेश के अनुसार, अब हर खाद्य दुकान या ठेले वाले को अपना नाम बोर्ड पर लिखना होगा ताकि कोई कांवड़ियां गलती से मुस्लिम दुकान से कुछ न खरीद ले। कांग्रेस ने भी इसे भारत की संस्कृति पर हमला बताया। भाजपा-आरएसएस पर निशाना साधते हुए कांग्रेस ने कहा कि इस तरह के आदेश का उद्देश्य मुसलमानों के आर्थिक बहिष्कार को सामान्य बनाना है। कांग्रेस के मीडिया और प्रचार विभाग के प्रमुख पवन खेड़ा ने कहा कि इसके पीछे उद्देश्य यह पता लगाना है कि कौन हिंदू है और कौन मुसलमान।

मानव महत्वाकांक्षा का कोई अंत नहीं : भागवत

लोगों को मानवता के लिए काम करना चाहिए

भाषा। गुमला (झारखंड)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के प्रमुख मोहन भागवत ने बृहस्पतिवार को कहा कि आत्म-विकास करते समय एक मनुष्य अतिमानव (सुपरमैन) बनना चाहता है, इसके बाद वह देवता और फिर भगवान बनना चाहता है और विश्वरूप की भी आकांक्षा रखता है लेकिन वहां से आगे भी कुछ है क्या, यह कोई नहीं जानता है। उन्होंने कहा कि कुछ लोगों में मनुष्य होने के बावजूद मानवीय गुणों का अभाव होता है और उन्हें सबसे पहले अपने अंदर इन गुणों को विकसित करना चाहिए। यहां गैर-लाभकारी संगठन विकास भारती द्वारा आयोजित ग्राम स्तरीय कार्यकर्ता बैठक को संबोधित करते हुए भागवत ने कहा कि लोगों को मानव जाति के कल्याण के लिए अथक प्रयास करना चाहिए, क्योंकि विकास और मानव महत्वाकांक्षा का कोई अंत नहीं है। उन्होंने कहा, मानवीय गुणों को विकसित करने के बाद एक मनुष्य अलौकिक बनना चाहता है, सुपरमैन बनना चाहता है, लेकिन वह वहां रुकता नहीं है। इसके बाद उसे लगता है कि देवता बनना चाहिए लेकिन देवता कहते है कि हमसे तो बड़ा भगवान है और फिर वह भगवान बनना चाहता है। भगवान कहता है कि वह तो विश्वरूप है तो वह विश्वरूप बनना चाहता है। वहां भी कुछ है क्या रुकने की जगह, ए कोई नहीं जानता है। लेकिन विकास का कोई अंत नहीं है। बाहर का विकास भी और अंदर का विकास भी, यह निरंतर चलने वाली एक प्रक्रिया है। उन्होंने कहा कि मनुष्य को मानवता के लिए अथक परिश्रम करना चाहिए। साथ ही कहा कि एक कार्यकर्ता को अपने काम से कभी संतुष्ट नहीं होना चाहिए। भागवत ने कहा, काम जारी रहना चाहिए, पर्यावरण, शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्रों में निरंतर कार्य करने का प्रयास करना चाहिए...इसका कोई अंत नहीं है और विभिन्न क्षेत्रों में निरंतर कार्य करना ही एकमात्र समाधान है...हमें इस विश्व को एक सुंदर स्थान बनाने का प्रयास करना चाहिए जैसी की भारत की प्रकृति है। उन्होंने कहा कि सनातन धर्म मानव जाति के कल्याण में विश्वास करता है। उन्होंने कहा, सनातन संस्कृति और धर्म राजमहलों से नहीं, बल्कि आश्रमों और जंगलों से आए हैं। बदलते समय के साथ हमारे कपड़े तो बदल सकते हैं लेकिन हमारा स्वभाव कभी नहीं बदलेगा। उन्होंने कहा, बदलते समय में अपने काम और सेवाओं को जारी रखने के लिए हमें नए तौर-तरीके अपनाने होंगे। जो लोग अपने स्वभाव को बरकरार रखते हैं, उन्हें विकसित कहा जाता है। भागवत ने कहा, सभी को समाज के कल्याण के लिए अथक प्रयास करना चाहिए और जो लोग सही मायने में काम कर रहे हैं, उन्हें मंच से बोलना चाहिए जबकि हमें बैठकर सुनना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि आदिवासी पिछड़े हुए हैं और उनके लिए शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में काफी काम किए जाने की जरूरत है।

बिहार में अगर राजद सत्ता में आया तो आरक्षण का लाभ मुसलमानों को दे देगा : तावड़े

भाषा। पटना

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय महासचिव विनोद तावड़े ने बृहस्पतिवार को दावा किया कि अगर बिहार में राष्ट्रीय जनता दल (राजद) सत्ता में आया तो पिछड़े वर्गों को आरक्षण के लाभ से वंचित कर देगा और इसका लाभ मुसलमानों को दे देगा। भाजपा के बिहार मामलों के प्रभारी तावड़े ने राज्य कार्यकारिणी की बैठक को संबोधित करते हुए यह टिप्पणी की। भाजपा नेता ने आरोप लगाया, कांग्रेस ने कर्नाटक में ओबीसी से आरक्षण का लाभ छीनकर मुसलमानों को दे दिया है। अगर तेजस्वी यादव अगला विधानसभा चुनाव जीत जाते हैं, तो बिहार में भी यही होगा। हमारी पार्टी के कार्यकर्ताओं को लोगों को यह समझाना चाहिए। उन्होंने कहा कि लोगों को यह भी बताया जाना चाहिए कि लोकसभा चुनाव के दौरान यह झूठा प्रचार किया गया था कि भाजपा संविधान बदलना चाहती है और दावा किया कि यह नरेन्द्र मोदी को सत्ता में वापस आने से रोकने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय साजिश का हिस्सा था। अरबपति जॉर्ज सोरोस ने इस उद्देश्य के लिए लगभग 6,000 करोड़ रुपए खर्च किए थे। तावड़े ने कहा, इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि निर्वाचन आयोग द्वारा चुनाव के दौरान की गई छापेमारी में 9,000 करोड़ रुपए से अधिक की बेहिसाब नकदी बरामद की गई। इन सबके बावजूद भाजपा ने जितनी सीट जीती हैं, उनकी संख्या पूरे इंडिया गठबंधन की संयुक्त संख्या से अधिक है। भाजपा नेता ने राष्ट्रपति पद के चुनाव में आदिवासी महिला द्रौपदी मुर्मू का विरोध करने के लिए कांग्रेस और राजद की भी आलोचना की। तावड़े ने यह भी विश्वास जताया कि भाजपा के नेतृत्व वाला राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन बिहार में अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव में शानदार जीत हासिल करेगा ।

गुजरात में निर्माण श्रमिकों को पांच रुपए प्रतिदिन किराए पर आवास देने की योजना शुरू

अहमदाबाद। गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने बृहस्पतिवार को करीब 15 हजार निर्माण श्रमिकों को पांच रुपए प्रतिदिन की मामूली दर पर अस्थाई आवास उपलब्ध कराने की योजना शुरू की। आधिकारिक विज्ञप्ति के मुताबिक, मुख्यमंत्री ने श्रमिक बसेरा योजना के लिए अहमदाबाद, गांधीनगर, वड़ोदरा और राजकोट शहरों में श्रमिकों के रहने के लिए 17 आवासीय संरचनाओं का भूमिपूजन किया। पटेल अहमदाबाद के जगतपुर इलाके में एक श्रमिक बसेरा की आधारशिला रखने के लिए मौजूद थे।उन्होने डिजिटल तरीके से अन्य जगहो पर योजना की शुरुआत की।मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि इन आवासो के बनकर तैयार होने के बाद करीब 15 हजार निर्माण श्रमिकों को लाभ होगा। निर्माण श्रमिकों को एक दिन के लिए पांच रुपए प्रति व्यक्ति के हिसाब से आवास मुहैया कराया जाएगा।

एचएसबीसी ने डिजिटल अभियान का शुभारंभ किया

मुंबई। एचएसबीसी म्यूचुअल फंड ने अपने एस आई पी को दो प्रमोशन नामक एक अनोखे डिजिटल अभियान का शुभारंभ किया है, जो एसआईपी टॉप-अप और दीर्घकालीन धनोपार्जन में इसकी भूमिका के बारे में निवेशकों को जागरूक करने और इस बारे में उन्हें जानकारी देने के लिए है, यह अभियान 30 सेकंड की तीन लघु फिल्मों की एक श्रृंखला है, जिसका उद्देश्य निवेशकों को अपने सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) पर टॉप-अप सुविधा का विकल्प चुनकर अपने पैसे को भलीभाँति बढ़ावा देने की भावना को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना है, इस अभियान के शुभारंभ पर अपने विचार व्यक्त करते हुए, एचएसबीसी म्यूचुअल फंड के सीईओ, कैलाश कुलकर्णी ने कहा, कि एसआईपी रीटेल निवेशकों के लिए अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने का एक बेहतरीन साधन बन रहा है। अपने एस आई पी को दो प्रमोशन अभियान के माध्यम से, हम एसआईपी टॉप-अप से मिलने वाली चक्रवृद्धि ब्याज की शक्ति पर जोर देना चाहते हैं, जिससे लंबी समयावधि में अच्छा धनोपार्जन करने में सहायता मिलती है। बॉर्नहाई डिजिटल के वॉइस प्रेसिडेंट संदीप श्रीकुमार ने कहा कि इस क्षेत्र के डेटा का विश्लेषण करने से हमें पता चलता है कि 31 मार्च, 2024 तक भारत में 484.6 मिलियन से अधिक लोगों ने एसआईपी को अपनाया है, लेकिन केवल 0.50 प्रतिशत (लगभग 240,000 एसआईपी) लोगों ने ही टॉप-अप सुविधा की शक्ति का उपयोग किया है।

सीड्स ने 8. 5मिलियन डॉलर से अधिक पूँजी जुटाई

नई दिल्ली। नॉन.बैंकिंग फाईनेंशल कंपनी सीड्स फिनकैप प्राईवेट लिमिटेड ने लोक कैपिटल एवं मैट्रिक्स पार्टनर्स इंडिया उर्फ जैड47 के नेतृत्व में 8.5 मिलियन डॉलर से अधिक की सीरीज़ फंडिंग प्राप्त की है। इस फंड द्वारा सीड्स फिनकॉर्प को अपनी लेंडिंग क्षमताएं बढ़ानेए अपना टेक्नोलॉजिकल इन्फ्रास्ट्रक्चर मजबूत बनाने और अपनी शाखाओं का विस्तार करने में मदद मिलेगी। भारत में माईक्रो, स्मॉल, और मीडियम एंटरप्राईज़सेगमेंट में 8 ट्रिलियन डॉलर से ज्यादा क्रेडिट घाटा है। एमएसएमई बिज़नेस मैनुफैक्चरिंग, ट्रेडिंग, और सहयोगी सेवाओं के क्षेत्रों में काम करते हैं। उन्हें अक्सर पारंपरिक वित्तीय संस्थानों, जैसे बैंकों और बड़े एनबीएफसी से क्रेडिट नहीं मिल पाता है। इसलिए इस सेगमेंट को क्रेडिट देने वाले विशेष संस्थानों की जरूरत है, जिनके पास शाखाओं का बड़ा नेटवर्क होए और जो असंगठित क्षेत्र से होने वाली आय पर क्रेडिट को अंडरराईट कर सकें तथा जिनके पास ऑन.ग्राउंड कलेक्शन की क्षमताएं हों। इस फर्म ने छोटे से समय में ही 8 राज्यों में 90 शाखाओं का नेटवर्क स्थापित कर लिया है। सीड्स फिनकॉर्प की स्थापना साल 2021 में सुभाष आचार्य और अविशेक सरकार द्वारा की गई थी।

पीएम के खिलाफ हिंसा भड़काने वाले बयानों का इस्तेमाल किया गया

भाषा। नई दिल्ली

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने बृहस्पतिवार को कांग्रेस पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के खिलाफ अक्सर हिंसा भड़काने वाले बयानों का इस्तेमाल करने का आरोप लगाया और कहा कि भाषणों में राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों को निशाना बनाने के लिए हत्या और हिंसा जैसे शब्दों का इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए।केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि सार्वजनिक जीवन में शब्दों का चयन बेहद महत्वपूर्ण होता है। उन्होंने कहा, विपक्ष जिस प्रकार के शब्दों का चयन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के लिए कर रहा है, वह बेहद चिंताजनक है। हिंसा और हत्या जैसे शब्दों के प्रयोग से समाज में अनावश्यक तनाव पैदा होता है। भाजपा प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने एक पूर्व आईपीएस अधिकारी के एक लेख का हवाला देते हुए कहा कि अल्पकालिक राजनीतिक लाभ के लिए इस्तेमाल की जाने वाली बयानबाजी कई बार हिंसा को उकसाती है। इस क्रम में उन्होंने जापान के पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे की हत्या और हाल ही में पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की हत्या के प्रयास का जिक्र किया।वैष्णव ने कहा कि आज एक पूर्व आईपीएस (भारतीय पुलिस सेवा) अधिकारी ने जैसा लिखा है, उसका एक मनोवैज्ञानिक असर होता है जो हिंसात्मक व्यवहार को बढावा देता है।उन्होंने कहा, विपक्ष को इस प्रकार के शब्दों का चयन न करते हुए अपनी गरिमा को बनाए रखना चाहिए। उन्हें अपने शब्दों और व्यवहार में संजीदापन लाते हुए संयम बरतना चाहिए। कांग्रेस पर निशाना साधते हुए त्रिवेदी ने कहा कि उसके नेता राहुल गांधी ने संसद में हिंसा और हत्या जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया था और चुनाव प्रचार के दौरान मोदी के काफिले पर कुछ फेंके जाने की घटना पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा था कि अब मोदी से कोई नहीं डरता है।उन्होंने कहा कि पंजाब में एक कार्यक्रम में शामिल होने के लिए गए प्रधानमंत्री मोदी की सुरक्षा खतरे में पड़ गई थी जबकि उस समय वहां कांग्रेस की सरकार थी। त्रिवेदी ने कहा कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी जब कश्मीर और मणिपुर जैसे संवेदनशील स्थानों पर गए थे तो उनकी सुरक्षा के व्यापक इंतजाम किए गए थे।उन्होंने कहा, हम साफ शब्दों में कहना चाहेंगे कि मौत और हिंसा जैसे शब्दों का प्रयोग बयानों में नहीं होना चाहिए। कांग्रेस के कई वरिष्ठ नेताओं ने मोदी जी के लिए इस प्रकार की मौत और उस प्रकार की मौत जैसे शब्दों का प्रयोग किया है। उन्होंने कहा, कांग्रेस के नेताओं ने कब्र खुदेगी, मर जा, सर फोड़ देंगे जैसे शब्दों का प्रयोग किया और ए बात आज की नहीं है, ए विगत कई वर्षों से की जा रही है।

फास्टैग नहीं होने पर दोगुना टोल शुल्क लेगा एनएचएआई

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजमार्गो पर लोगो को वाहन के विडस्क्रीन पर जानबूझकर फास्टैग न लगाने से रोकने के लिए भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) कई कदम उठा रहा है। बृहस्पतिवार को जारी एक आधिकारिक बयान के अनुसार, एनएचएआई ने ऐसे वाहनों से दोगुना टोल वसूलने के लिए दिशानिर्देश जारी किए है। ऐसे वाहन जिनमे अंदर से सामने की विडशील्ड पर फास्टैग नही लगा होगा, और वे टोल लेन मे प्रवेश करते है, तो उन्हें दोगुना टोल देना होगा। एनएचएआई ने कहा कि विडस्क्रीन पर जानबूझकर फास्टैग न लगाने से टोल प्लाजा पर अनावश्यक देरी होती है, जिससे अन्य वाहनो को असुविधा होती है।एनएचएआई ने कहा, सभी उपयोगकर्ता शुल्क संग्रह एजेंसियों और रियायतियों को विस्तृत मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) जारी की गई है, ताकि सामने की विडशील्ड पर फास्टैग न लगाए जाने की स्थिति मे दोगुना उपयोगकर्ता शुल्क वसूला जा सके। बयान के अनुसार, यह सूचना सभी टोल प्लाजा पर भी प्रमुखता से प्रदर्शित की जाएगी, जिसमे लोगो को विडशील्ड पर फास्टैग लगाए बिना टोल लेन मे प्रवेश करने पर लगने वाले जुर्माने के बारे मे जानकारी दी जाएगी।बयान मे कहा गया है कि टोल प्लाजा पर वाहन पंजीकरण संख्या (वीआरएन) के साथ सीसीटीवी फुटेज को गैर-फास्टैग मामलो मे दर्ज किया जाएगा। इससे शुल्क वसूले जाने और टोल लेन मे वाहन की मौजूदगी के बारे मे उचित रिकॉर्ड बनाए रखने मे मदद मिलेगी।

ढाई हजार करोड़ के क्रिप्टो घोटाले का प्रमुख आरोपी गिरफ्तार : हिमाचल पुलिस

शिमला। हिमाचल प्रदेश पुलिस ने 2022 मे राज्य मे सामने आए 2,500 करोड़ रुपए के क्रिप्टोकरंसी घोटाले के सरगनाओं में से एक को कोलकाता से गिरफ्तार किया है। अधिकारियों ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। उन्होने बताया कि उत्तर प्रदेश के मेरठ निवासी मिलन गर्ग (35) को बुधवार रात कोलकाता के नेताजी सुभाष चंद्र बोस अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से उस समय गिरफ्तार किया गया जब वह थाईलैंड के बैंकॉक भागने की कोशिश कर रहा था। उत्तरी रेंज के पुलिस उपमहानिरीक्षक अभिषेक धुल्लर ने पीटीआई-भाषा को बताया कि गर्ग कथित रूप से नकली क्रिप्टोकरंसी की डिजाइनिंग और विपणन मे शामिल था। मामले की जांच कर रही एसआईटी का नेतृत्व कर रहे धुल्लर के मुताबिक, घोटाले के सामने आने के बाद गर्ग दुबई भाग गया था। वह जून मे भारत लौटा था और फिर से देश छोड़कर भाग रहा था कि तभी उसे कोलकाता हवाई अड्डे पर हिरासत मे ले लिया गया। आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है और शिमला लाया गया है। धुल्लर ने बताया कि आरोपी अब तक फरार मुख्य सरगना सुभाष शर्मा का प्रमुख सहयोगी है और वह क्रिप्टोकरंसी की डिजाइनिंग, सॉफ्टवेयर विकास और विपणन में शामिल था। हजारो लोगो को शिकार बनाने वाला क्रिप्टोकरंसी घोटाला 2018 मे शुरू हुआ था, लेकिन 2022 मे यह प्रकाश मे तब आया जब ठगी करने वालो ने निवेशकों को अपना मुंह बंद नही रखने पर पैसा गंवाने की धमकी दी। इस संबंध मे अब तक 300 शिकायतें दर्ज कराई गई है। पुलिस ने अब तक इस मामले मे 26 लोगो को गिरफ्तार किया है और 70 लोगो के खिलाफ आरोपपत्र दाखिल किया है। प्रमुख आरोपियों मे मंडी निवासी हेमराज और सुखदेव तथा ऊना जिला निवासी अरुण गुलेरिया और अभिषेक शामिल है।

जिगर सरैया और आदित्य गढ़वी लुभाएंगे

अहमदाबाद। संगीत प्रेमियों को लुभाने के लिए सचिन-जिगर की बेहतरीन जोड़ी एक बार फिर शानदार वापसी कर रही हैं, अपने नए गीत डायमंड नी के साथ। पिछले साल 'खलासी' के साथ चार्ट पर धूम मचाने वाले जिगर सरैया और आदित्य गढ़वी की मनमोहक आवाज़ों में यह नया ट्रैक आप सभी को बहुत पसंद आने वाला है। अगर आपको याद हो तो ओरी ने हाल ही में अंबानी की शादी के गाने की एक रील पोस्ट की थी, जो वायरल हो गई थी। नेटिज़न्स बड़ी बेकरारी से पूछ रहे थे कि उन्हें यह गाना कहाँ मिलेगा? तो खुशखबरी यह है कि यह गाना अब आ गया है! समृद्ध गुजराती लोक संगीत को आधुनिक पॉप के साथ बड़ी ही खुबसूरती से मिश्रित करते हुए, 'डायमंड नी' हमारे चारों ओर की साधारण पर अविस्मरणीय प्राकृतिक सुंदरता की सराहना करने के बारे में है। यह जीवंत बिट्स और एक आकर्षक राग से सजा हुआ है। संगीत के महारथी सचिन-जिगर द्वारा निर्मित इस लुभावने ट्रैक की शुरुआत एक आकर्षक हुक के साथ होती है, जिसे सुनते ही आपके पैर खुद-ब-खुद थिरकाने लग जाएंगे और आप अपनेआप झूमने लगेंगे। मशहूर प्रिया सरैया द्वारा लिखा गया हृदयस्पर्शी गीत आपके दिल में उतर जाएगा। अपनी आवाज से इस रचना में जादू भरने वाले जिगर सरैया कहते हैं, पहली बार जब हमने यह राग सुना हम तभी समझ गए थे कि 'डायमंड नी' बहुत खास है।

और आसानी ये लोकल दुकानों को जोड़ेगा अमेजन

बेंगलुरू । अमजन इंडिया ने लोकल शॉप्स प्रोग्राम में विक्रेताओं के जुड़ने की प्रक्रिया को सरल बनाने और अमेजन मोबाइल ऐप पर स्टोरफ्रंट आधारित दृष्टिकोण के साथ ग्राहकों के लिए खरीदारी के अनुभव को बेहतर बनाने के लिए दो नए फीचर लॉन्च किए हैं। ये दो नए फीचर ठीक समय पर आए हैं, ताकि स्थानीय दुकानों के विक्रेताओं को भारत में अमेजन के 8वें प्राइम डे सेल समारोह के लिए तैयार होने में मदद मिल सके, जो 20 जुलाई और 21 जुलाई को आयोजित होने वाला है। हजारों स्थानीय दुकानों के विक्रेता आगामी प्राइम डे के लिए शानदार डील, क्यूरेटेड चयन और नए लॉन्च की पेशकश करने के लिए तैयार हो रहे हैं। अमेजन सेलर मोबाइल ऐप पर 1-क्लिक 'लोकल शॉप्स ऑन अमेजन' विक्रेता ऑनबोर्डिंग अनुभव एक महत्वपूर्ण कमी को दूर करता है, जिसका सामना विक्रेताओं को पहले करना पड़ता था यानी, इस लॉन्च से पहले, विक्रेताओं को प्रोग्राम में नामांकन के लिए अपने डेस्कटॉप पर सेलर सेंट्रल पर जाना पड़ता था। इस लॉन्च के साथ, उत्तर प्रदेश और पूरे भारत में नए विक्रेता अब बस एक क्लिक के ज़रिए मोबाइल ऐप के ज़रिए प्रोग्राम में शामिल हो सकते हैं, जिससे उनके शहर में 2-दिन की डिलीवरी संभव हो सकेगी। यह सुविधा उन विक्रेताओं के लिए भी उपलब्ध है, जिन्होंने पहले इस कार्यक्रम से बाहर निकलने का विकल्प चुना था और अब वे अपने शहर में ग्राहकों को अपने उत्पाद बेचना चाहते हैं। 1-क्लिक बटन अब ऐप पर हेल्प लोकल शॉप्स के अंतर्गत हमेशा उपलब्ध है, जिससे इसे ढूंढना आसान हो जाता है। दूसरे अपग्रेड से अमेजन.इन मोबाइल ऐप पर सेलर स्टोरफ्रंट बेहतर बना है।

देधिया फाउन्डेशन युवा शास्त्रीय संगीतकारों को करेगा पुरस्कृत

मुंबई। जायकस के सीईओ आतिश देधिया द्वारा स्थापित गैर-लाभ संगठन देधिया म्युजिक फाउन्डेशन जो हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के संरक्षण के लिए समर्पित है, ने युवा सर सरताज 2024 की घोषणा की है। अपनी तरह की अनूठी यह टैलंट हंट हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रतिभाशाली युवाओं की पहचान करेगी। इसका उद्देश्य उभरते हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीतकारों को उचित मार्गदर्शन तथा विकास के लिए मंच प्रदान करना और उन्हें पहचान देना है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में जाने-माने नाम जैसे श्रीमति कौशिकी चक्रवर्ती, राहुल देशपाण्डे और संजीव अभ्यंकर जजों के पैनल में शामिल होंगे। युवा सर सरताज हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीतकारों को एक्सपोजर प्रदान करने के साथ-साथ अपना कौशल दर्शाने का मौका भी देगी। इस अवसर पर देधिया म्युजिक फाउन्डेशन के संस्थापक आतिश देधिया ने कहा, ''आज के दौर में ज़्यादातर प्रतिभा पश्चिमी संगीत पर ही ध्यान केन्द्रित करती है, देधिया म्युजिक फाउन्डेशन में हम युवाओं में देश के समृद्ध संगीत की धरोहर को बढ़ावा देना चाहते हैं। युवा सर सरताज के माध्यम से हम हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के सौंदर्य को बरकरार रखने और युवाओं को इस कला के प्रति समर्पित होने के लिए प्रोत्साहित करना चाहते हैं।'प्रतियोगिता को तीन चरणों में बांटा जाएगा- कॉल फॉर एंट्री, वर्चुअल ऑडिशन और अंत में 15 अक्टूबर 2024 को मुंबई के नेहरू ऑडिटोरियम में ग्राण्ड फिनाले होगा। जिसकी लाईव-स्ट्रीमिंग सभी सोशल मीडिया चैनलों पर की जाएगी।

युद्ध से सबक लेना जरूरी, वही गलतियां नहीं दोहरानी चाहिए: सीडीएस

नई दिल्ली। प्रमुख रक्षा अध्यक्ष (सीडीएस) जनरल अनिल चौहान ने बृहस्पतिवार को करगिल संघर्ष में भारतीय बहादुरों की वीरता की सराहना की और कहा कि युद्ध की यादों को संजो कर रखने के अलावा, इसके बाद की स्थिति को देखना और भविष्य के लिए सही सबक लेना भी महत्वपूर्ण है। करगिल युद्ध की 25वीं वर्षगांठ के अवसर पर यहां आयोजित एक कार्यक्रम में उन्होंने कहा, हमें वही गलतियां नहीं दोहरानी चाहिए। युद्ध और युद्ध-पद्धति बहुत ही तेजी से विकसित हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रौद्योगिकी में परिवर्तन और भू-राजनीतिक उतार-चढ़ाव के कारण इनका चरित्र और प्रकृति तेजी से बदल रही है।जनरल चौहान ने कहा, हमारे सैनिकों द्वारा दिए गए बलिदान की यादें हमारी राष्ट्रीय लोककथा का हिस्सा बननी चाहिए, जैसा कि करगिल युद्ध के साथ हुआ है। सीडीएस ने कहा कि वीरता, साहस और धैर्य की गाथा से भावी पीढ़ी के युवाओं के साथ-साथ भारतीय सशस्त्र बलों में शामिल होने वाले सैनिकों को भी प्रेरणा मिलती रहेगी। उन्होंने कहा कि युद्ध की स्मृतियों को संजोने के अलावा, इसके परिणामों पर गौर करना और भविष्य के लिए उपयोगी सबक लेना भी महत्वपूर्ण है।

निजी क्षेत्र में आरक्षण विधेयक को लेकर मंत्रिमंडल की अगली बैठक में चर्चा : सिद्धरमैया

भाषा। बेंगलुरु

कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धरमैया ने बृहस्पतिवार को कहा कि उनकी सरकार ने निजी क्षेत्र में कन्नड भाषियों को आरक्षण देने संबंधी विधेयक को लेकर उत्पन्न कुछ भ्रम की स्थिति के मद्देनजर फिलहाल इसे टालने का फैसला किया है। सिद्धरमैया ने कहा कि आशंकाओं को दूर करने के लिए मंत्रिमंडल की अगली बैठक में विधेयक पर चर्चा की जाएगी। मुख्यमंत्री ने विधानसभा में कहा, सोमवार को मंत्रिमंडल की बैठक में (विषय पर)पूरी चर्चा नहीं हो सकी। तभी मीडिया में इस संबंध में खबरें आने लगी। विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष आर.अशोक ने विधेयक पर सरकार से रुख स्पष्ट करने की मांग की। इसपर सिद्धरमैया ने कहा, इसे लेकर कुछ भ्रम है। हम मंत्रिमंडल की अगली बैठक में उन भ्रम को दूर करेंगे। हमें विस्तृत चर्चा करने दें। अशोक ने कहा कि मुख्यमंत्री ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर तीन बार अपना संदेश बदला। नेता प्रतिपक्ष ने याद दिलाया कि सिद्धरमैया ने अपनी पहली पोस्ट में बताया कि मंत्रिमंडल ने निजी क्षेत्र में कन्नड़ भाषियों के लिए शत प्रतिशत आरक्षण का फैसला लिया है और बाद में उसे हटा दिया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री ने फिर एक और संदेश जारी किया जिसमें कहा कि निजी क्षेत्र में प्रबंधन श्रेणी की नौकरियों में 50 प्रतिशत और गैर प्रबंधन श्रेणी की नौकरियों में 75 प्रतिशत कन्नड भाषियों के लिए आरक्षित होंगी। अशोक ने कहा, अंततः आपने (सिद्धरमैया) ने घोषणा की कि विधेयक को ठंडे बस्ते में डालने का फैसला किया गया। ऐसा लगता है कि कर्नाटक में तुगलकी सरकार है। इसका जवाब देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा, (यहां) कोई तुगलक सरकार नहीं है बल्कि सिद्धरमैया सरकार है। हम इस मुद्दे पर मंत्रिमंडल की अगली बैठक में चर्चा करेंगे। राज्य मंत्रिमंडल ने सोमवार को कर्नाटक राज्य उद्योग, कारखाने और अन्य प्रतिष्ठानों में स्थानीय उम्मीदवारों को रोजगार देने संबंधी विधेयक, 2024 को मंजूरी दी थी। इसमें निजी कंपनियों के लिए अपने प्रतिष्ठानों में कन्नड़ भाषी लोगों को आरक्षण देना अनिवार्य करने का प्रावधान है।

राजस्थान के शिक्षा मंत्री दिलावर ने विधानसभा में खेद प्रकट किया

जयपुर। राजस्थान के शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने आदिवासियों को लेकर की गई अपनी टिप्पणी को लेकर बृहस्पतिवार को विधानसभा में खेद प्रकट किया। दिलावर ने सदन की बैठक शुरू होने पर कहा, ए (आदिवासी) हिंदू समाज का श्रेष्ठ अंग हैं। मेरे शब्दों से विपक्ष को या किसी आदिवासी बंधु को, जो मेरी जाति के हैं, कोई कष्ट हुआ हो तो मैं खेद प्रकट करता हूं। उल्लेखनीय है कि दिलावर की टिप्पणी को लेकर कांग्रेस सहित इंडिया गठबंधन के विधायक उनका सदन में विरोध कर रहे थे। विपक्ष दिलावर के माफी मांगने और उन्हें पद से हटाने की मांग कर रहा था।सदन की कार्यवाही बृहस्पतिवार को जैसे ही शुरू हुई विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा कि शिक्षा मंत्री अपनी बात रखना चाहते हैं। दिलावर ने विपक्ष के कुछ विधायकों की टोकाटाकी के बीच अपनी बात रखी और खेद प्रकट किया। दिलावर और बांसवाड़ा के नवनिर्वाचित सांसद राजकुमार रोत के बीच 22 जून को जुबानी जंग छिड़ गई ।

अलग भीलप्रदेश बनाने की मांग को लेकर आदिवासी समुदाय के लोग बांसवाड़ा के मानगढ़ धाम में एकत्र हुए

जयपुर। अलग भील राज्य की मांग को लेकर पड़ोसी राज्यों से बड़ी संख्या मे आदिवासी समुदाय के लोग बृहस्पतिवार को राजस्थान के बांसवाड़ा जिले के मानगढ़ धाम मे एकत्र हुए। आदिवासियो के लिए पूजनीय स्थल मानगढ़ धाम मे आदिवासी नेताओ द्वारा आयोजित एक सार्वजनिक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए नवनिर्वाचित सांसद राजकुमार रोत ने कहा कि भील राज्य की मांग लंबे समय से लंबित है और भारतीय आदिवासी पार्टी (बीएपी) इस मुद्दे को जोर-शोर से पूरी ताकत के साथ उठा रही है। रोत ने सभा को संबोधित करते हुए कहा,"भील प्रदेश की मांग नई नही है। बीएपी इस मांग को जोरदार ढंग से उठा रही है।

सांप के काटे का सस्ता उपाय हो सकती है खून को पतला करने वाली दवा : अध्ययन

भाषा। नई दिल्ली

खून को पतला करने वाली एक सामान्य दवा सर्पदंश के इलाज के लिए एक संभावित सस्ता उपाय हो सकती है। ऑस्ट्रेलिया स्थित सिडनी विश्वविद्यालय से संबद्ध लेखक ग्रेग नीली ने कहा कि हेपेरिन नामक दवा कोबरा के काटने से होने वाले नुकसान को काफी हद तक कम कर सकती है और यह जहर फैलने की गति को धीमा भी कर सकती है जिससे जीवित रहने की दर में सुधार हो सकता है। अनुसंधानकर्ताओं के अनुसार, वर्तमान सर्प विष रोधी उपचार सर्पदंश वाली जगह पर ऊतकों और कोशिकाओं के निष्क्रिय होने का प्रभावी समाधान नहीं करता जिसका परिणाम कभी-कभी अंग विच्छेद के रूप में निकलता है। मानव जीन को संशोधित करने के लिए सीआरआईएसपीआर प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए टीम ने उन विभिन्न तरीकों की पहचान की जिनसे कोबरा के जहर को रोका जा सकता है। अनुसंधानकर्ताओं ने हेपरिन सहित रक्त को पतला करने वाली दवाओं का उपयोग किया और मानव कोशिकाओं तथा चूहों पर परीक्षण के बाद पाया कि वे कोबरा के काटने से होने वाले ऊतक एवं कोशिका क्षय को रोकने में सक्षम हैं। अध्ययन रिपोर्ट साइंस ट्रांसलेशनल मेडिसिन पत्रिका में प्रकाशित हुई है। सिडनी विश्वविद्यालय के प्रमुख लेखक तियान डू ने कहा, सफल मानव परीक्षणों के बाद (हेपरिन दवा) को कोबरा के काटने के इलाज के लिए एक सस्ती, सुरक्षित और प्रभावी दवा बनाने के लिए अपेक्षाकृत तेजी से पेश किया जा सकता है।

जगन्नाथ मंदिर के बहुमूल्य सामान को रत्न भंडार से अस्थाई भंडार कक्ष में स्थानांतरित किया गया

भाषा। पुरी।

पुरी स्थित 12वीं सदी के जगन्नाथ मंदिर के प्रतिष्ठित खजाने रत्न भंडार (कोषागार) में रखी गई मूल्यवान सामग्री और आभूषणों को एक अस्थाई भंडार कक्ष में स्थानांतरित करने का कार्य बृहस्पतिवार को सात घंटों के भीतर पूरा हो गया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।उन्होंने बताया कि रत्न भंडार को इस सप्ताह दूसरी बार खोला गया ताकि बहुमूल्य चीजों को मंदिर परिसर के भीतर एक अस्थाई स्ट्रॉन्ग रूम में रखा जा सके।श्री जगन्नाथ मंदिर प्रशासन (एसजेटीए) के प्रमुख अरविंद पाढ़ी ने संवाददाताओं को बताया, रत्न भंडार के आंतरिक कक्ष से सभी कीमती सामान को सफलतापूर्वक मंदिर परिसर के भीतर एक अस्थाई स्ट्रांग रूम में स्थानांतरित कर दिया गया है। लकड़ी और स्टील की अलमारियों और संदूकों सहित सात कंटेनरों को स्थानांतरित करने की पूरी प्रक्रिया में सात घंटे लगे। पाढ़ी ने कहा कि प्रक्रिया सफलतापूर्वक पूरी हो गई है और मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) के दिशा-निर्देशों के अनुसार आंतरिक कक्ष और अस्थाई स्ट्रांग रूम दोनों को बंद कर सील कर दिया गया है।पर्यवेक्षण समिति के अध्यक्ष एवं उड़ीसा उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति विश्वनाथ रथ ने कहा कि आंतरिक कक्ष के अंदर आभूषण और कीमती सामान सात कंटेनरों में रखे गए, जिनमें तीन लकड़ी की अलमारियां, दो लकड़ी की पेटियां, एक स्टील की अलमारी और एक लोहे की पेटी शामिल है।उन्होंने कहा कि सभी कीमती सामान को नए कंटेनरों में सावधानी से रखा गया और बाद में मंदिर परिसर के अंदर अस्थाई स्ट्रांग रूम में स्थानांतरित कर दिया गया।रथ ने कहा कि स्ट्रांग रूम को सील कर चाबियां पुरी जिलाधिकारी को दे दी गई।चाबियां खजाने में रखी जाएंगी।न्यायमूर्ति रथ ने खजाने के बारे में पूछे गए सवालों का जवाब देते हुए कहा, आंतरिक कक्ष के अंदर हमने जो कुछ देखा उसका विवरण गोपनीय है।

पश्चिम बंगाल के मालदा में बिजली कटौती के विरोध में प्रदर्शन हिंसक हुआ, कई घायल

मानिकचक। पश्चिम बंगाल के मालदा जिले में बिजली कटौती के विरोध में स्थानीय लोगों द्वारा बृहस्पतिवार को किया गया प्रदर्शन हिंसक हो गया और पुलिस से हुई झड़प में कई लोग घायल हो गए। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। पुलिस अधीक्षक प्रदीप कुमार यादव ने बताया कि इलाके में लगातार बिजली कटौती के विरोध में स्थानीय लोगों ने सुबह मानिकचक के इनायतपुर में राजमार्ग जाम कर दिया। उन्होंने कहा कि जब पुलिस लोगों को सड़क से हटाने के लिए वहां गई तो लोगों ने पुलिसकर्मियों पर पथराव शुरू कर दिया। उन्होंने बताया कि भीड़ ने पुलिस वाहनों में भी तोड़फोड़ की और हमले में तीन पुलिसकर्मी घायल हो गए।

इजराइल-हमास संघर्ष बेहद चिंताजनक : भारत

●संरा में भारत ने रखी अपनी बात

भाषा। युक्त राष्ट्र

इजराइल-हमास संघर्ष के कारण जारी मानवीय संकट को बेहद चिंताजनक बताते हुए भारत ने एक बार फिर तनाव कम करने का आह्वान किया तथा बातचीत और कूटनीति के माध्यम से संघर्ष के शांतिपूर्ण समाधान पर जोर दिया। पश्चिम एशिया पर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की खुली बहस में भारत का वक्तव्य देते हुए संयुक्त राष्ट्र में भारत के उप स्थाई प्रतिनिधि एवं प्रभारी राजदूत आर. रविंद्र ने कहा कि भारत उन देशों में शामिल है, जिन्होंने पिछले वर्ष सात अक्टूबर को इजराइल पर हुए आतंकी हमलों की कड़ी एवं स्पष्ट रूप से निंदा की थी। वह गाजा स्थित हमास उग्रवादियों द्वारा इजराइल में किए गए घातक हमले का जिक्र कर रहे थे। रविंद्र ने बुधवार को कहा, इजराइल–हमास संघर्ष को नौ महीने हो चुके हैं, और जारी मानवीय संकट बेहद चिंताजनक है। उन्होंने कहा, हमने जारी इजराइल–हमास संघर्ष में नागरिकों की जान जाने की भी निंदा की है। भारत ने तनाव कम करने का आह्वान किया है तथा बातचीत और कूटनीति के माध्यम से संघर्ष के शांतिपूर्ण समाधान पर जोर दिया है।

अमेरिकी संसद में भाषण से कुछ दिन पहले नेतन्याहू ने दक्षिणी गाजा का औचक दौरा किया

यरुशलम। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने अमेरिकी संसद में अपने भाषण से कुछ दिन पहले बृहस्पतिवार को दक्षिणी गाजा का औचक दौरा किया और अपने सैनिकों से मुलाकात की। नेतन्याहू के कार्यालय ने यह जानकारी दी। नेतन्याहू की रफह यात्रा की घोषणा इजराइल के धुर दक्षिणपंथी राष्ट्रीय सुरक्षा मंत्री इतामार बेन-गविर के यरुशलम के सबसे संवेदनशील पवित्र स्थल के दौरे के कुछ घंटों बाद की गई। यह एक ऐसा कदम है जो नाजुक गाजा संघर्षविराम वार्ता को बाधित कर सकता है।

इजराइल के धुर-दक्षिणपंथी मंत्री यरुशलम के संवेदनशील धार्मिक स्थल गए, वार्ता रुकवाने की चेतावनी दी

यरुशलम। इजराइल के धुर दक्षिणपंथी राष्ट्रीय सुरक्षा मंत्री इतामार बिन-ग्वीर ने बृहस्पतिवार की सुबह यरुशलम के सबसे संवेदनशील धार्मिक स्थल का दौरा किया और गाजा युद्ध विराम वार्ता को बाधित करने की चेतावनी दी। उन्होंने कहा कि वह बिना किसी बेतुके समझौते के, बंधकों की वापसी के लिए प्रार्थना करने यरुशलम में पहाड़ी क्षेत्र में स्थित अल-अक्सा मस्जिद गए थे। बेन-ग्वीर के इस कदम से नौ महीने से जारी इजराइल-हमास युद्ध में संघर्ष विराम समझौते के लिए की जा रही संवेदनशील वार्ता बाधित होने का खतरा है। कुछ दिन बाद इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू अमेरिका जाने वाले हैं, जहां वह अमेरिकी संसद को संबोधित करेंगे। इससे पहले कुछ देशों ने फ्लस्तीन को एक राष्ट्र के तौर पर मान्यता देने का फैसला किया था, जिसके खिलाफ विरोध के तौर पर बेन-ग्वीर मई में अल-अक्सा गए थे।

डोनाल्ड ट्रंप फिर से रिपब्लिकन नामांकन स्वीकार करेंगे

मिलवाउकी। डोनाल्ड ट्रंप बृहस्पतिवार को रिपब्लिकन राष्ट्रीय सम्मेलन में मंच पर अपनी पार्टी का नामांकन पुनः स्वीकार करेंगे। पेनसिल्वेनिया में एक रैली में हुए जानलेवा हमले के प्रयास बाद बीच में ही अपना संबोधन छोड़ने को मजबूर हुए पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति हमले के बाद अपना पहला भाषण भी देंगे ट्रम्प के संबोधन के साथ मिलवाउकी में चार दिवसीय सम्मेलन का समापन होगा। वह पहले तीन दिनों में अपने कान पर सफेद पट्टी बांधकर आए थे, जिससे शनिवार की गोलीबारी में उन्हें लगा घाव ढका हुआ था। सम्मेलन आयोजकों ने इस बात पर जोर दिया कि वे गोलीबारी के 48 घंटे से भी कम समय बाद अपनी योजना के अनुसार कार्यक्रम जारी रखेंगे।

पेन्सिलवेनिया में मंच पर जब गोली चलने के बाद सुरक्षाकर्मी चोटिल ट्रंप को लेकर जा रहे थे तो पूर्व राष्ट्रपति ने खड़े होकर अपनी मुट्ठी बांधते हुए कहा था लड़ो। सम्मेलन में वक्ताओं और प्रतिनिधियों ने ट्रंप के शब्दों के सम्मान में बार–बार लड़ो, लड़ो, लड़ोउ के नारे लगाए। यहां तक कि उनके कुछ समर्थक सम्मेलन स्थल पर ट्रंप के प्रति समर्थन जताने के लिए अस्थाई पट्टियां लगाकर पहुंचे थे।

चीन में एक मॉल में आग लगने से 16 लोगों की मौत

बीजिंग। चीन के दक्षिण पश्चिम में सिचुआन प्रांत में एक शॉपिंग मॉल में आग लगने से कम से कम 16 लोगों की मौत हो गई। चीन के सरकारी मीडिया के अनुसार, बुधवार की शाम करीब छह बजे सिचुआन प्रांत के जिगोंग शहर के हाई–टेक जोन में स्थित 14 मंजिला इमारत में आग लग गई। तस्वीरों और वीडियो में इमारत से धुएं का गुबार उठता दिख रहा है, कई लोग बालकनी पर भी दिखाई दे रहे हैं। स्थानीय अग्निशमन विभाग ने बताया कि बचाव अभियान बृहस्पतिवार को पूरा हो गया। इमारत के अंदर फंसे करीब 75 लोगों को बाहर निकाल लिया गया। सरकारी समाचार एजेंसी शिन्हुआ के अनुसार, कुल 16 लोग मारे गए हैं और शेष लोगों को इमारत से बाहर निकाल लिया गया। प्राथमिक जांच के अनुसार आग निर्माण कार्य के कारण लगी थी।

पॉप गायिका स्विफ्ट का पीछा करने वाले संदिग्ध को हिरासत में लिया गया

बर्लिन। जर्मन पुलिस ने बृहस्पतिवार को कहा कि उन्होंने पश्चिमी गेलसेनकिर्चेन शहर में मशहूर पॉप गायिका टेलर स्विफ्ट के कार्यक्रम से पहले उनका पीछा करने के संदेह में एक व्यक्ति को हिरासत में लिया है। पुलिस ने एक बयान में बताया कि कार्यक्रम के आयोजकों से मिली सूचना के बाद संदिग्ध को हिरासत में लिया गया है। जर्मन समाचार एजेंसी डीपीए के अनुसार, पुलिस ने बताया कि संदिग्ध ने पहले भी गायिका को धमकियां दी थी। उन्होंने संदिग्ध या घटना की पृष्ठभूमि के बारे मे और कोई जानकारी नही दी। पुलिस ने बताया कि बुधवार को शांतिपूर्ण रूप से हुए कंसर्ट में करीब 60,000 लोग शामिल हुए।

श्रीलंका से आतंकवाद अधिनियम को खत्म करने का आग्रह किया

कोलंबो। अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन ह्यूमन राइट्स वॉच ने श्रीलंका से आतंकवाद निरोधक अधिनियम (पीटीए) को समाप्त करने का आग्रह करते हुए दावा किया है कि द्वीपीय राष्ट्र ने विश्वसनीय साक्ष्यो के बिना कथित विरोधियो और अल्पसंख्यक समुदायों को निशाना बनाने के लिए इस कानून का दुरुपयोग किया है। न्यूयॉर्क स्थित मानवाधिकार समूह ने अमेरिका, ब्रिटेन और यूरोपीय संघ से भी आग्रह किया है कि वे श्रीलंका पर इस कानून को समाप्त करने के लिए दबाव डाले, जिसे उसने इसे खत्म करने का बार-बार वादा किया लेकिन इस पर अमल नही कर सका है। ह्यूमन राइट्स वॉच (एचआरडब्ल्यू) ने बुधवार को एक बयान मे कहा, जहां कुछ पीड़ितो को कई सालो तक मनमाने ढंग से हिरासत मे रखा गया और यातनाएं दी गईं, वही अन्य को उनके खिलाफ मामला समाप्त होने के बाद भी सताया गया। संगठन की ओर से बयान जारी करने के बारे मे किसी भी तात्कालिक कारण का उल्लेख नही है।

उत्तर कोरिया ने दक्षिण कोरिया की ओर गुब्बारे छोड़े

सियोल। दक्षिण कोरिया ने बृहस्पतिवार को कहा है कि उत्तर कोरिया ने उसकी ओर गुब्बारे छोड़े है, जिनमे कचरा हो सकता है। दक्षिण कोरिया के ज्वाइंट चीफ्स ऑफ स्टाफ ने एक बयान मे कहा कि गुब्बारे सियोल के उत्तरी इलाके के ऊपर उड़ रहे है जो सीमा से करीब एक घंटे की दूरी पर है। माना जाता है कि उत्तर कोरिया ने नागरिको के लिए पर्चे गिराने के दक्षिण कोरिया के अभियान की प्रतिक्रिया मे उसकी ओर गुब्बारे छोड़े है।उत्तर कोरिया ने मई के अंत मे दक्षिण कोरिया की ओर अनेक गुब्बारे छोड़े थे जिनमे कचरा और सिगरेट के टोटे आदि थे। उत्तर कोरिया ने कहा था कि यह दक्षिण कोरिया की ओर से गुब्बारों के माध्यम से राजनीतिक पर्चे भेजे जाने की प्रतिक्रिया थी। इनमे कोई भी खतरनाक सामग्री नही मिली।

नेपाल का भविष्य उज्ज्वल है: नवनियुक्त प्रधानमंत्री ओली

काठमांडू। नेपाल के नवनियुक्त प्रधानमंत्री के पी शर्मा ओली ने बृहस्पतिवार को कहा कि देश का भविष्य उज्ज्वल है, लेकिन लगातार राजनीतिक उथल-पुथल के बीच इसके वर्तमान परिदृश्य को बदलने की जरूरत है। द राइजिंग नेपाल अखबार के अनुसार, चौथी बार नेपाल के प्रधानमंत्री के रूप मे सोमवार को शपथ लेने वाले ओली ने कहा कि देश का वर्तमान परिदृश्य अच्छा नही है। नेपाल को लगातार राजनीतिक उथल-पुथल का सामना करना पड़ा है क्योंकि गणतंत्र लागू होने के बाद पिछले 16 वर्षों मे देश ने 14 सरकारें देखी है।

नेपाल में भूस्खलन बस हादसे में अभी तक 19 शव बरामद

काठमांडू। नेपाल के चितवन जिले मे पिछले सप्ताह दो बसो के भूस्खलन के मलबे के साथ नदी मे बहने के बाद बचावकर्मियो ने अब तक 19 शव बरामद किए है, जिनमे चार भारतीय भी शामिल है। सूत्रो ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। भूस्खलन की यह घटना शुक्रवार को चितवन जिले के नारायणघाट-मुगलिंग मार्ग पर सिमलताल इलाके मे हुई थी।

बांग्लादेश में आरक्षण विरोधी आंदोलन के दौरान झड़पों में 11 और लोगों की मौत

भाषा। ढाका

बांग्लादेश में बृहस्पतिवार को सरकारी नौकरियों के लिए आरक्षण प्रणाली में सुधार की मांग को लेकर छात्रों के विरोध प्रदर्शन के दौरान राजधानी ढाका तथा अन्य जगहों पर हिंसा भड़कने से कम से कम 11 और लोगों की मौत हो गई। इस तरह विरोध प्रदर्शन शुरू होने के बाद से मरने वालों की संख्या 18 हो गई है।ढाका और अन्य शहरों में विश्वविद्यालय के छात्र 1971 में पाकिस्तान से देश की आजादी के लिए लड़ने वाले युद्ध नायकों के रिश्तेदारों के लिए सार्वजनिक क्षेत्र की कुछ नौकरियों को आरक्षित करने की प्रणाली के खिलाफ कई दिनों से रैलियां कर रहे हैं। प्रोथोम अलो अखबार ने अपनी खबर में कहा, कुल मिलाकर 11 लोगों की मौत की खबर है। इनमें नौ लोगों की मौत ढाका, एक व्यक्ति की मौत राजधानी के बाहरी इलाके सावर तथा एक व्यक्ति की मौत दक्षिण–पश्चिमी मदारीपुर जिले में हुई है। मौतों की संख्या का यही आंकड़ा बताते हुए निजी सोमॉय टेलीविजन चैनल ने कहा कि पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को तितर–बितर करने के लिए रबड़ की गोलियों, आंसू गैस और ध्वनि ग्रेनेड का इस्तेमाल जारी रखा। इससे पहले, मंगलवार को छह लोगों की मौत हो गई थी, जिनमें ज्यादातर छात्र थे। वहीं, बीती रात एक और मौत की सूचना मिली जिससे एक सप्ताह से अधिक समय पहले शुरू हुए विरोध प्रदर्शन के बाद से मरने वालों की कुल संख्या 18 हो गई है। हालांकि, पुलिस ने अभी तक हताहतों की संख्या पर कोई बयान जारी नहीं किया है।

भारत ने बांग्लादेश में अपने नागरिकों से हिंसा के मद्देनजर यात्रा से बचने को कहा

ढाका। भारत ने बांग्लादेश में हो रहे विरोध-प्रदर्शन के मद्देजनर यहां रहने वाले अपने नागरिकों के लिए बृहस्पतिवार को परामर्श जारी करते हुए कहा कि वे यात्रा करने से बचें और कम से कम बाहर निकलें। सरकारी नौकरियो मे आरक्षण प्रणाली मे सुधार की मांग को लेकर जारी विरोध प्रदर्शनो मे हिसा फैलने से देशभर में कम से कम छह लोगों की जान जा चुकी है। हिंसा के कारण सरकार ने मंगलवार देर रात बांग्लादेश में सभी सरकारी और निजी विश्वविद्यालयों के साथ-साथ स्कूलों और कॉलेजों को अनिश्चितकाल के लिए बंद कर दिया तथा छात्रों से छात्रावास खाली करने को कहा गया। भारतीय उच्चायोग ने यहां एक बयान में कहा, बांग्लादेश में मौजूदा हालात को देखते हुए बांग्लादेश में रहने वाले भारतीय समुदाय के सदस्यो और भारतीय छात्रो को यात्रा से बचने और अपने निवास स्थान से बाहर कम से कम आवाजाही की सलाह दी जाती है। मिशन ने किसी भी सहायता के लिए 24 घंटे चालू रहने वाले कई आपातकालीन नंबर भी जारी किए है। उच्चायोग की वेबसाइट के अनुसार बांग्लादेश में लगभग सात हजार भारतीय है। ए झड़पे सोमवार को शुरू हुईं, जब सत्तारूढ़ अवामी लीग के छात्र मोर्चे के कार्यकर्ता प्रदर्शनकारियों के सामने आ गए। प्रदर्शनकारी इस बात पर जोर दे रहे थे कि मौजूदा आरक्षण व्यवस्था सरकारी सेवाओं मे मेधावी छात्रो के नामांकन को काफी हद तक रोक रही है।प्रदर्शनकारियो ने सत्तारूढ़ पार्टी की छात्र शाखा, बांग्लादेश छात्र लीग पर पुलिस के समर्थन से उनके शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन पर हमला करने का आरोप लगाया।छात्र प्रदर्शनकारियों ने बृहस्पतिवार को राष्ट्रव्यापी बंद करने का निर्णय लिया है।

पाकिस्तान में फेसबुक और इंस्टाग्राम पर लगाई गईं बंदिशें

लाहौर। पाकिस्तान की सरकार ने सोशल मीडिया मंच एक्स को करीब छह महीने तक सफलतापूर्वक प्रतिबंधित रखने के बाद फेसबुक और इंस्टाग्राम जैसे मंचों को भी निशाना बनाया और आम लोगो तक इनकी पहुंच रोक दी है। सरकार के इस कदम को सोशल मीडिया पर पूर्ण रोक की योजना के तौर पर देखा जा रहा है। पाकिस्तान मे बुधवार से फेसबुक और इंस्टाग्राम पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। इससे उपयोगकर्ताओं को विभिन्न इंटरनेट सेवा प्रदाताओं (आईएसपी) के सोशल मीडिया मंच तक पहुंच बनाने मे मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। कुछ उपयोगकर्ताओं को मेटा के स्वामित्व वाले अन्य ऐप, जैसे व्हाट्सऐप के साथ भी समस्याएं आ रही है।पाकिस्तान की सरकार ने आम जनता तक फेसबुक और इंस्टाग्राम की पहुंच रोकने के संबंध मे अब तक कोई आधिकारिक बयान नही दिया है। यह प्रतिबंध उच्च न्यायपालिका, पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) और शक्तिशाली सैन्य प्रतिष्ठान के बीच चल रही खींचतान के बीच लगाया गया है। माना जाता है कि पाकिस्तान मे सरकार सेना चला रही है। मुख्यमंत्री मरयम नवाज के नेतृत्व वाली पंजाब सरकार ने संघीय सरकार से छह से 11 मुहर्म (13 से 18 जुलाई) तक पंजाब प्रांत मे सभी सोशल मीडिया मंच जैसे यूट्यूब, एक्स, व्हाट्सऐप, फेसबुक, इंस्टाग्राम, टिक्टॉक आदि पर प्रतिबंध लगाने का अनुरोध किया था ताकि पवित्र महीने के दौरान सांप्रदायिक हिसा को उकसाने वाली घृणा सामग्री, गलत सूचना आदि को नियंत्रित किया जा सके। पंजाब प्रांत मे पाकिस्तान की सबसे अधिक 12 करोड़ आबादी रहती है। दूरसंचार कंपनी नयाटेल ने बृहस्पतिवार को एक्स पर कहा, पिछले दो दिन से देश भर मे सभी सेवा प्रदाताओ द्वारा मुहैया कराई जा रही फेसबुक और इंस्टाग्राम सेवाएं बाधित है। यह रुकावट पहले से ही अवरुद्ध ट्विटराएक्स के अतिरिक्त है।

दुबई में बच्चों को मिलेगा भरपूर मनोरंजन

दुबई। दुबई समर सरप्राइज (डीएसएस) ने एक और साल के लिए अद्भुत किड्स गो फ्री ऑफर लेकर वापस लाया है, जिससे परिवारों को सबसे किफायती अनुभवों के साथ गर्मी के मौसम का अधिकतम लाभ उठाने में मदद मिलती है। पूरे शहर में, परिवार अब दुबई के विश्वस्तरीय रिसॉर्ट्स, आकर्षण और मनोरंजन स्थलों में वॉलेट-फ्रेंडली स्टेकेशन्स और दिन की यात्राओं का आनंद ले सकते हैं। साल का सबसे बढ़िया समय बेहतरीन अनुभव पाने का है, परिवार गर्मियों में नई और रोमांचक चीजें करने के लिए उत्सुक हो सकते हैं। डीएसएस के हिस्से के रूप में दुबई फेस्टिवल्स एंड रिटेल इस्टैब्लिशमेंट (डीएफआई) द्वारा आयोजित, किड्स गो फ्री परिवारों को बेहतरीन कीमतों पर शहर का सबसे बेहतरीन अनुभव करने में मदद करता है। परिवार और भी अधिक बचत डीएसएस एंटरटेनर संस्करण के साथ पा सकते हैं, जो दुबई के सबसे अच्छे भोजन, आकर्षण, सुंदरता, और फिटनेस के लिए 7,000 से अधिक बाय-वन-गेट-वन-फ्री ऑफर खोलता है। परिवार शहर की प्रमुख मनोरंजन सुविधाओं और बच्चों के आकर्षण पर अनुमानित हजारों दिरहम की बचत का आनंद ले सकते हैं, बचत ऑफर के अधिकतम लाभ उठाने पर बढ़ती है। डीएसएस एंटरटेनर की कीमत एईडी 195 है, जिसमें विशेष ऑफर हर हफ्ते 1 सितंबर तक रोज़ाना रिडीम किए जा सकते हैं। साथ ही, उपयोगकर्ता इस पैकेज को तीन दोस्तों के साथ साझा कर सकते हैं। ऐसी बड़ी बचत का मतलब है कि सभी के पास अतिरिक्त मजा करने और खोजने के लिए और भी कारण हैं। दुबई समर सरप्राइज 2024 का समर्थन प्रमुख प्रायोजकों द्वारा किया गया है, जिसमें अल फुतैम (दुबई फेस्टिवल सिटी मॉल और दुबई फेस्टिवल प्लाजा), माजिद अल फुतैम (सिटी सेंटर डीरा, सिटी सेंटर मिर्दिफ, और मॉल ऑफ एमिरेट्स), दुबई होल्डिंग एसेट मैनेजमेंट (अल सैफ, ब्लूवॉटर्स, सिटी वॉक, द बीच, और द आउटलेट विलेज), मर्काटो शॉपिंग मॉल, मेरिक्स इन्वेस्टमेंट, नक़ील (इब्न बतूता, नक़ील मॉल, और द व्यू एट द पाम); साथ ही ए डब्ल्यू रोस्तमानी, एमिरेट्स एयरलाइंस, ईएनओसी, ईएंड, और तालाबत शामिल हैं।

बाइडन फिर कोविड-19 से संक्रमित हुए : व्हाइट हाउस

मिलवाउकी।अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन एक बार फिर कोविड–19 से संक्रमित हो गए हैं। हालांकि, उनमें संक्रमण के हल्के लक्षण हैं। व्हाइट हाउस ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी।इसके साथ, राष्ट्रपति चुनाव प्रचार के महत्वपूर्ण मोड़ पर उन्हें अपना अभियान रोकना पड़ा है। बाइडन (81) ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा, मैं बीमार हूं। बाइडन बुधवार को कोविड–19 से संक्रमित हो गए जिसके कारण लास वेगास में उनका एक महत्वपूर्ण प्रचार अभियान बाधित हो गया। व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरिन जीन–पियरे ने एक बयान में कहा, उन्हें कोविड–19 रोधी टीका लगा हुआ है और उन्होंने बूस्टर डोज भी ले रखी है। उनमें हल्के लक्षण नजर आ रहे हैं। बाइडन अपने आवास डेलावेयर लौट आए हैं, जहां वह एकांतवास में रहेंगे। हालांकि, इस दौरान वह अपने सभी दायित्वों का निर्वहन करेंगे। प्रेस सचिव ने कहा कि व्हाइट हाउस राष्ट्रपति की स्थिति के बारे में नियमित जानकारी उपलब्ध कराता रहेगा, क्योंकि वह एकांतवास में रहते हुए भी अपने कार्यालय के दायित्वों का निर्वहन जारी रखेंगे। व्हाइट हाउस ने कहा, बाइडन में हल्के लक्षण हैं। उनकी श्वसन दर 16, शरीर का तापमान 97.8 डिग्री फारेनहाइट और पल्स ऑक्सीमेट्री 97 प्रतिशत है, जिसे सामान्य माना जाता है।

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री स्टॉर्मर का यूरोपीय संघ के साथ देश के बेहतर संबंध पर जोर

लंदन। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री केअर स्टॉर्मर ने ब्रेक्जिट के बाद 27 देशों के समूह यूरोपीय संघ (ईयू) के साथ संबंध बेहतर करने के लिए दक्षिण–पूर्व इंग्लैंड के ऑक्सफोर्डशायर में ईयू के नेताओं के साथ बैठक की। ब्रिटेन 2016 में ईयू से बाहर निकलने के पक्ष में जनमत संग्रह के बाद से इस समूह का सदस्य नहीं है। ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल की जन्मस्थली ब्लेनहेम पैलेस में यूरोपीय राजनीतिक समुदाय (ईपीसी) की बैठक में स्टॉर्मर ने ब्रेक्जिट के बाद यूरोप के साथ देश के संबंधों के लिए एक नई दिशा निर्धारित करने पर जोर दिया ताकि अवैध प्रवासन और रूस–

यूक्रेन संघर्ष जैसे मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया जा सके। कंजरवेटिव पार्टी के नेतृत्व वाली पूर्ववर्ती सरकार की नीतियों से मौजूदा सरकार को अलग करते हुए, लेबर पार्टी के नेता स्टॉर्मर ने दोहराया कि रवांडा में अवैध प्रवासियों को निर्वासित करने की अव्यावहारिक योजना को रद्द कर दिया गया है। उन्होंने यह भी कहा कि ब्रिटेन कभी भी मानवाधिकारों पर यूरोपीय सम्मेलन (ईसीएचआर) से पीछे नहीं हटेगा। स्टॉर्मर ने कहा, ईपीसी की बैठक इस सरकार के यूरोप के प्रति नए दृष्टिकोण की शुरुआत करेगी, जिससे न केवल हमें अभी लाभ होगा, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी लाभ होगा। इसके तहत यूरोप में लोगों की तस्करी करने वाले नेटवर्क को खत्म करना, यूक्रेन में (रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर) पुतिन की बर्बर कार्वाइयों और पूरे यूरोप में अस्थिरता पैदा करने वाली गतिविधियों के खिलाफ खड़ा होना शामिल है।

ब्रिटेन सरकार ने कोविड के दौरान जनता को किया निराश : जांच रिपोर्ट

लंदन। बृहस्पतिवार को सामने आई एक स्वतंत्र सार्वजनिक जांच रिपोर्ट मे कहा गया कि ब्रिटिश सरकार ने 2020 की शुरुआत में कोविड महामारी के प्रकोप के दौरान जनता को योजनाओं और प्रक्रियाओ से निराश किया। रिपोर्ट मे भविष्य की असैन्य आपात स्थितियो के लिए आमूलचूल सुधार का आह्वान किया गया। यूके कोविड-10 इंक्वायरी द्वारा प्रकाशित की जाने वाली नौ रिपोर्टों में से पहली रिपोर्ट मे, अध्यक्ष बैरोनेस हीथर हैलेट ने कहा कि सरकार ने गलत महामारी के लिए तैयारी की और भविष्य की असैन्य आपात स्थितियो के लिए तैयार रहने के लिए ब्रिटेन की संरचनाओ और प्रक्रियाओं में आमूलचूल सुधार का आह्वान किया। ब्रिटेन मे आधिकारिक तौर पर 2023 के अंत तक कोविड-19 से 2,35,000 से अधिक मौत हुईं और जांच रिपोर्ट में पाया गया है कि यदि देश इस घातक प्रकोप के लिए बेहतर तरीके से तैयार होता तो मौत के इन आंकड़ो से कुछ हद तक बचा जा सकता था। हैलेट ने कहा, किसी बीमारी के कारण इतनी मौत और इतनी पीड़ा कभी नही होने दी जाएगी। उन्होने कहा, मुझे इस निष्कर्ष पर पहुंचने मे कोई संकोच नही है कि समूचे ब्रिटेन मे नागरिक आकस्मिक संरचनाओ की प्रक्रिया, योजना और नीति ने सभी चार देशो के नागरिको को निराश किया है। सरकार की ओर से गंभीर गलतियां हुई है और हमारी आपातकालीन प्रणालियों मे गंभीर खामियां है। ऐसा दोबारा नही होने दिया जा सकता। प्रमुख सिफारिशो मे प्रणालियो का मौलिक सरलीकरण, कम से कम हर तीन साल मे ब्रिटेन-व्यापी महामारी प्रतिक्रिया अभ्यास आयोजित करना और संपूर्ण प्रणाली की तैयारी और प्रतिक्रिया के लिए जिम्मेदार एकल, स्वतंत्र वैधानिक निकाय का निर्माण करना शामिल है।

मॉरीशस में भारत के पहले विदेशी जन औषधि केंद्र का उद्घाटन

पोर्ट लुई। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने मॉरीशस में पहले विदेशी जन औषधि केंद्र का उद्घाटन किया। जयशंकर 16 से 17 जून तक दो दिवसीय यात्रा पर मॉरीशस में थे। विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि मॉरीशस के प्रधानमंत्री प्रविंद कुमार जगन्नाथ के साथ भारत के पहले विदेशी जन औषधि केंद्र का उद्घाटन दोनों देशों के बीच विशेष रूप से स्वास्थ्य के महत्वपूर्ण क्षेत्र में घनिष्ठ सहयोग का प्रमाण है। सभी को सस्ती जेनेरिक दवाइयां उपलब्ध कराने के लिए जन औषधि केन्द्र स्थापित किए गए हैं। जयशंकर ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, प्रधानमंत्री कुमार जगन्नाथ के साथ मॉरीशस में पहले विदेशी जन औषधि केंद्र का उद्घाटन करते हुए प्रसन्नता हो रही है। यह औषधि केंद्र प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के वादे के तहत शुरू किया गया है। उन्होंने कहा, भारत–मॉरीशस स्वास्थ्य साझेदारी परियोजना के तहत सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा को बेहतर बनाने के लिए किफायती, भारत में निर्मित दवाओं की आपूर्ति की जाएगी।

उर्सुला वॉन डेर होंगे यूरोपीय आयोग के अध्यक्ष

भाषा। स्ट्रासबर्ग (फ्रांस)

यूरोपीय संसद के सांसदों ने बृहस्पतिवार को उर्सुला वॉन डेर लेएन को दूसरी बार पांच साल के लिए यूरोपीय संघ के कार्यकारी आयोग की अध्यक्ष के रूप में चुना। यूरोपीय संसद के अध्यक्ष रोबर्टा मेत्सोला ने परिणाम की घोषणा की। उर्सुला के फिर से चुने जाने से 27 देशों के इस समूह के नेतृत्व की निरंतरता सुनिश्चित हो गई है।पिछले महीने 720 सदस्ईय यूरोपीय संसद के चुनाव में धुर दक्षिणपंथियों की संख्या बढ़ने से यूरोपीय आयोग के अध्यक्ष पद का चुनाव दिलचस्प हो गया था। वॉन डेर लेएन को कुल 707 मतों में से 401 मत मिले। उनकी उम्मीदवारी के खिलाफ 284 मत पड़े, 15 ने मतदान में हिस्सा नहीं लिया और सात मत निरस्त कर दिए गए।लेएन ने उन्हें पद पर बनाए रखने के संबंध में यूरोपीय संसद में होने वाले मतदान से पहले संकट और ध्रुवीकरण के समय यूरोप के लिए एक मजबूत नेता बने रहने का संकल्प लिया था। पिछले पांच साल में लेएन ने कई संकटों से निपटने में यूरोपीय संघ का नेतृत्व किया है, जिनमें ब्रिटेन का यूरोपीय संघ से बाहर निकलना, कोविड–19 महामारी और रूस द्वारा यूक्रेन पर हमला शामिल हैं। लेएन ने कहा, मैं अपने समाज में ध्रुवीकरण को कभी भी स्वीकार्य नहीं होने दूंगी।

हूज़ योर गायनेक की शूटिंग शुरू

हालीवुड। अमेज़न मिनीटीवी ने अपने प्रशंसकों के प्रिय मेडिकल कॉमेडी-ड्रामा हूज़ योर गायनेक की वापसी की घोषणा करते हुए उत्साहित है। अपने पहले सीज़न की ज़बरदस्त सफलता के बाद, यह पसंदीदा सीरीज़ एक और अध्याय के साथ लौटने के लिए तैयार है, जिसमें और भी अधिक हास्य, ड्रामा, और दिल को छू लेने वाले क्षण शामिल होंगे, इसके बहुप्रतीक्षित दूसरे सीज़न की शूटिंग शुरू हो गई है। द वायरल फीवर द्वारा रचित और निर्मित, दूसरे सीज़न में सबा आज़ाद, करिश्मा सिंह, आरोन अर्जुन कौल, कुणाल ठाकुर और विभा छिब्बर जैसे कलाकार वापस आ रहे हैं। सबा आज़ाद ने विदुषी की भूमिका को दोबारा निभाने के बारे में अपनी उत्सुकता व्यक्त की, उन्होंने साझा किया,सीजन 1 के लिए हमें जो प्यार मिला वह अद्भुत था। मैं बहुत खुश हूँ कि हम विदुषी की कहानी को और आगे बता सकते हैं। मैं सीजन 2 में उसकी यात्रा के उतार-चढ़ाव को निभाने के लिए और इंतजार नहीं कर सकती। विदुषी के संघर्षों और सफलताओं के बारे में सबसे अच्छी बात यह है कि वे कितनी वास्तविक और संबंधित हैं, मुझे लगता है कि हर कोई उसकी कहानी में खुद का थोड़ा सा हिस्सा देख सकेगा। हमारे प्रशंसकों से मिली अनुकंपा और समर्थन बहुत ही शानदार रहा है और हम इस नए सीजन के साथ उन्हें और भी हंसी, आंसू और यादगार पल लाने के लिए उत्साहित हैं।

चीन की कम्युनिस्ट पार्टी का अर्थव्यवस्था के लिए चिनफिंग का समर्थन

बीजिंग। चीन की सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी ने बृहस्पतिवार को शीर्ष स्तरीय बैठक में देश की तकनीकी शक्ति के निर्माण और राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत करने के उद्देश्य से बनाई जाने वाली नीतियों का समर्थन किया। बैठक समाप्त होने पर जारी किए गए बयान में निर्णयों का केवल एक व्यापक सारांश दिया गया। अधिक विवरण कुछ दिनों बाद सामने आने की संभावना है। बैठक का एजेंडा ऐसे समय में आत्मनिर्भर आर्थिक विकास के लिए रणनीतियों पर केंद्रित था जब चीन को अत्याधुनिक कंप्यूटर चिप्स और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी उन्नत पश्चिमी प्रौद्योगिकी तक पहुंच पर कड़े प्रतिबंधों का सामना करना पड़ रहा है। विदेशी निवेशक और बाजार यह देखने के लिए नजर रख रहे थे कि पार्टी चीन के रियल एस्टेट क्षेत्र में मंदी और उपभोक्ताओं के डगमगाते विश्वास का मुकाबला करने के लिए क्या कर सकती है, जिसने कोविड–19 महामारी के बाद चीन की अर्थव्यवस्था के पटरी पर लौटने में बाधा उत्पन्न की है। अप्रैल से जून तिमाही में आर्थिक वृद्धि दर वार्षिक आधार पर धीमी होकर 4.7 प्रतिशत रह गई, क्योंकि परिवारों को आवास खरीदने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से किए गए अनेक उपायों के बावजूद रियल एस्टेट और संपत्ति की बिक्री में निवेश में गिरावट जारी रही। सरकारी मीडिया में हाल की रिपोर्टों और पहले के सरकारी नीति वक्तव्यों से पता चलता है कि बीजिंग प्रौद्योगिकियों में निवेश को प्राथमिकता देना जारी रखेगा और कंपनियों को उनके उपकरण और तकनीकी जानकारी को उन्नत करने के लिए प्रोत्साहित करेगा, जो कि नेता शी चिनफिंग के उच्च गुणवत्ता वाले विकास के आह्वान के अनुरूप है। पार्टी के अखबार ग्लोबल टाइम्स ने एक टिप्पणी में कहा, विभिन्न प्रमुख बैठकों में सुधार और खुलेपन पर शी की हालिया टिप्पणियां सत्र में अपनाए गए रुख की महत्वपूर्ण झलक प्रदान करती हैं, चीन के सुधार एजेंडे की प्राथमिकता और सुधार को और गहरा करना तथा चीनी आधुनिकीकरण को आगे बढ़ाना समग्र लक्ष्य है।

बेल्ट एंड रोड परियोजनाओं पर आगे बढ़ना चाहता है चीन : प्रधानमंत्री ली कियांग

काठमांडू-बीजिंग। चीन के प्रधानमंत्री ली कियांग ने चीन-नेपाल बेल्ट एंड रोड कोआपरेशन के तहत सहयोग करने के लिए पूर्व मे शीर्ष नेताओ तथा दोनो देशो के बीच बनी सहमति को लागू करने तथा द्विपक्षीय संबंधों को आगे बढ़ाने के लिए अन्य क्षेत्रों मे भी सहयोग को बढ़ावा देने की अपनी इच्छा जताई। नेपाल के नव नियुक्त प्रधानमंत्री के पी शर्मा ओली को दिए संदेश मे ली ने उन्हे चीन सरकार तथा उनकी ओर से हार्दिक बधाई दी। उन्होने चीन-नेपाल बेल्ट एंड रोड कोआपरेशन के तहत सहयोग करने के लिए पूर्व मे शीर्ष नेताओ तथा दोनो देशो के बीच बनी सहमति को लागू करने तथा द्विपक्षीय संबंधों को आगे बढ़ाने के लिए अन्य क्षेत्रों मे भी सहयोग को बढ़ावा देने की अपनी इच्छा जताई। नेपाल और चीन ने बेल्ट एंड रोड पहल (बीआरआई) पर समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए है। यह चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग की महत्वाकांक्षी पहल है। इसके तहत, दोनो देशो द्वारा अर्थव्यवस्था, पर्यावरण, प्रौद्योगिकी और संस्कृति सहित अन्य क्षेत्रो मे सहयोग के लिए कनेक्टिविटी, व्यापार, विकास रणनीतियो और नीति संवाद पर ध्यान केंद्रित करने की उम्मीद है।

पूर्व विदेश और रक्षा मंत्रियों को शीर्ष निकाय से हटाया

बीजिंग। चीन की सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी ने बृहस्पतिवार को अपनी केंद्रीय समिति से बर्खास्त विदेश मंत्री किन गांग का इस्तीफा स्वीकार कर लिया तथा पूर्व रक्षा मंत्री ली शांगफू और दो अन्य शीर्ष जनरलो को पार्टी से निष्कासित करने के निर्णय का समर्थन किया।यह निर्णय बृहस्पतिवार को यहां संपन्न हुई पार्टी की केंद्रीय समिति की शीर्ष स्तरीय बैठक के दौरान लिया गया।चीन की कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीसी) की केंद्रीय समिति के तीसरे पूर्ण अधिवेशन नामक चार दिवसीय सत्र के अंत में जारी विज्ञप्ति के अनुसार, अर्थव्यवस्था मे सुधार के उपायो पर चर्चा करने के लिए बुलाई गई बैठक मे कॉमरेड किन गांग का इस्तीफा स्वीकार कर लिया गया है।

यूक्रेन की सेना रूस के हमले के बाद एक और पूर्वी गांव से पीछे हटी

कीव। यूक्रेन की सेना पूर्वी दोनोत्सक क्षेत्र के उरोझाइन गांव से पीछे हट गई है और उसने एक अन्य अग्रिम मोर्चे पर भी आत्मसमर्पण कर दिया है। वही दूसरी ओर रूस की सेना लगातार हमले कर यूक्रेन की सुरक्षा दीवार को ध्वस्त कर रही है। स्थानीय स्तर पर लड़ रही थल सेना के प्रवक्ता नजर वोलोशिन ने एसोसिएटेड प्रेस को एक लिखित संदेश में बताया कि गांव मलबे में तब्दील हो गया है, जिससे वहां मोर्चे पर डटे रहना असंभव हो गया है। हालांकि, उन्होंने यह नही बताया कि सेना कब पीछे हटी। रूस ने फरवरी 2022 मे युद्ध के शुरुआती दिनो में उरोझाइन पर कब्जा कर लिया था। यूक्रेनी के सैनिको ने लगभग एक साल पहले इसपर फिर से कब्जा कर लिया था। रूस के रक्षा मंत्रालय ने दावा किया था कि उसकी सेना ने कई दिन पहले इस गांव को फिर से अपने कब्जे मे ले लिया था।

टी-20 में भारत की अगुआई करेंगे सूर्यकुमार

● रोहित और कोहली ने वनडे खेलने का फैसला किया

भाषा। नई दिल्ली

टीम :टी20 अंतरराष्ट्रीय टीम: सूर्यकुमार यादव (कप्तान), शुभमन गिल, यशस्वी जायसवाल, रिंकू सिंह, रियान पराग, ऋषभ पंत, संजू सैमसन, हार्दिक पंड्या, शिवम दुबे, अक्षर पटेल, वाशिंगटन सुंदर, रवि बिश्नोई, अर्शदीप सिंह, खलील अहमद और मोहम्मद सिराज।
एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय टीम: रोहित शर्मा (कप्तान), शुभमन गिल, विराट कोहली, केएल राहुल, ऋषभ पंत, श्रेयस अय्यर, शिवम दुबे, कुलदीप यादव, मोहम्मद सिराज, वाशिंगटन सुंदर, अर्शदीप सिंह, रियान पराग, अक्षर पटेल, खलील अहमद, हर्षित राणा।

आक्रामक बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव को श्रीलंका के खिलाफ 27 जुलाई से शुरू होने वाली तीन मैचों की श्रृंखला के लिए बृहस्पतिवार को भारतीय टी20 टीम का कप्तान बनाया गया जबकि एकदिवसीय कप्तान रोहित शर्मा और विराट कोहली ने अगले महीने इसी टीम के खिलाफ 50 ओवर की श्रृंखला के लिए स्वयं को उपलब्ध रखा है। शुभमन गिल को दोनों प्रारूपों की टीम का उप कप्तान बनाया गया है। टीम अगले सप्ताह की शुरुआत में दौरे के लिए रवाना होगी जिसके साथ नए मुख्य कोच गौतम गंभीर के तीन साल के कार्यकाल की शुरुआत होगी।विजय हजारे ट्रॉफी में सात अर्धशतक लगाने वाले रियान पराग और दिल्ली के तेज गेंदबाज हर्षित राणा एकदिवसीय टीम में दो नए चेहरे हैं। पिछले महीने टी20 विश्व कप में भारत की खिताबी जीत के बाद रोहित और कोहली के साथ टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने वाले अनुभवी ऑलराउंडर रविंद्र जडेजा को एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय टीम में जगह नहीं मिली है।लंबे समय से टीम के तेज गेंदबाजी आक्रमण की अगुआई कर रहे शीर्ष तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह को उम्मीद के मुताबिक आराम दिया गया है। पहला टी20 अंतरराष्ट्रीय 27 जुलाई को खेला जाएगा जबकि श्रृंखला के दो अन्य मैच 28 और 30 जुलाई को होंगे। सभी मुकाबले पाल्लेकल अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में खेले जाएंगे। एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय मुकाबले दो, चार और सात अगस्त को कोलंबो के आर प्रेमदासा स्टेडियम में खेले जाएंगे। तैंतीस साल के सूर्यकुमार को टी20 श्रृंखला के लिए कप्तानी की दौड़ में हार्दिक पंड्या पर तरजीह दी गई है जो टी20 विश्व कप में भारत की खिताबी जीत के दौरान टीम के उप कप्तान थे। स्टार ऑलराउंडर पंड्या की उम्र मुंबई के सूर्यकुमार से तीन साल कम है लेकिन वह चयन समिति के अध्यक्ष अजीत अगरकर और गौतम गंभीर दोनों की पहली पसंद नहीं हैं। पता चला है कि दोनों ने मंगलवार को इस मुद्दे पर पंड्या से बात की और उन्हें बताया कि दीर्घकालिक विकल्प के रूप में सूर्यकुमार के नाम पर विचार किया जा रहा है। पंड्या को टी20 टीम में जगह मिली है लेकिन निजी कारणों से उन्होंने एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला में नहीं खेलने का फैसला किया है। सूर्यकुमार ने इससे पूर्व पिछले साल नवंबर में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टी20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला में टीम की अगुआई की थी। भारत ने यह श्रृंखला 4-। से जीती थी। उनकी कप्तानी में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ श्रृंखला।-। से बराबर रही थी।घरेलू क्रिकेट नहीं खेलने के कारण राष्ट्रीय अनुबंध गंवाने के बावजूद श्रेयस अय्यर की लोकेश राहुल के साथ एकदिवसीय टीम में वापसी हुई है। राहुल ने पिछले साल स्वदेश में 50 ओवर में विश्व कप में विकेटकीपर-बल्लेबाज की भूमिका निभाई थी। अय्यर इस साल के आईपीएल चैंपियन कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के कप्तान हैं जबकि गंभीर इस टीम के मेंटर (मार्गदर्शक) थे। गंभीर को राहुल द्रविड़ की जगह भारतीय टीम का मुख्य कोच बनाया गया है। द्रविड़ का कार्यकाल टी20 विश्व कप में भारत की खिताबी जीत के साथ खत्म हो गया। रोहित के जोर देने के बावजूद द्रविड़ ने अनुबंध में विस्तार से इनकार कर दिया।

तैराक श्रीहरि नटराज की नजरें पेरिस ओलंपिक सेमीफाइनल पर

भाषा। नई दिल्ली

पिछले साल राष्ट्रीय खेलों में आठ स्वर्ण समेत दस पदक जीतने वाले भारतीय तैराक श्रीहरि नटराज 2017 से लगातार खेल रहे हैं और कड़े अभ्यास से थककर आखिर उन्हें कुछ समय का ब्रेक लेना पड़ा। नटराज ने पीटीआई से बातचीत में कहा , मुझे आराम की जरूरत थी क्योंकि 2023 सत्र काफी व्यस्त था जिसमें इतने सारे टूर्नामेंट थे। मुझे लगा कि अगर ब्रेक नहीं लिया तो शरीर टूट जाएगा। उन्होंने कहा , इससे चोट का भी डर रहता या अभ्यास की इच्छा ही मर जाती। शरीर पर काफी दबाव था लिहाजा मैंने कुछ समय का ब्रेक ले लिया। ब्रेक के बाद तरोताजा होकर 23 बरस के नटराज दूसरा ओलंपिक खेलने को तैयार हैं जिसमें वह सौ मीटर बैकस्ट्रोक में भाग लेंगे। यूनिवर्सिलिटी कोटा से ओलंपिक जा रहे नटराज ने तोक्यो ओलंपिक के लिए सीधे क्वालीफाई किया था। यूनिवर्सिलिटी कोटा के तहत जिस देश के तैराक सीधे क्वालीफाई नहीं कर सके हों , उनके सर्वोच्च रैंकिंग वाले दो तैराकों को ओलंपिक खेलने का मौका मिलता है। नटराज ने कहा , यह निराशाजनक था कि मैं सीधे क्वालीफाई नहीं कर सका लेकिन इसे लेकर चिंतित नहीं हूं। मुझे कोटा मिल गया है और अब या तो मैं अपने अभ्यास पर फोकस कर सकता हूं या इसका दुख मना सकता हूं कि मुझे सीधे क्वालीफिकेशन नहीं मिला। मैं अभ्यास पर फोकस कर रहा हूं। ब्रेक से लौटने के बाद उन्होंने स्पेन और फ्रांस में मेयर नोस्ट्रम मीट में दो रजत पदक जीते।

परिवार ही नहीं, पूरे गांव का अधूरा सपना सच करने खेलेंगे गाजीपुर के राजकुमार

नई दिल्ली। करीब तीन हजार की आबादी वाले करमपुर गांव से हॉकी स्टिक थामकर सैकड़ों लड़के ने ओलंपिक खेलने का सपना देखा लेकिन इसे पूरा करने का मौका सिर्फ राजकुमार पाल को मिला है और गाजीपुर के राजकुमार के नाम से मशहूर मिडफील्डर की ख्वाहिश पेरिस में अच्छा प्रदर्शन करके इस एक अधूरे सपने को पूरा करने की है।वाराणसी से करीब 40 किलोमीटर दूर गाजीपुर के गांव करमपुर के मेघबरन स्टेडियम पर हॉकी का ककहरा सीखने वाले बच्चों के प्रेरणास्रोत बन गए हैं राजकुमार। एकऐसा गांव जहां से 400 से अधिकलड़कों को हॉकी के जरिए रोजगार तो मिला लेकिन भारत की नुमाइंदगी का मौका नहीं।

बॉयकॉट के गले के ट्यूमर को हटाने की सर्जरी हुई

लंदन। इंग्लैड के महान क्रिकेटर सर ज्योफ्री बॉयकॉट के गले से ट्यूमर को हटाने के लिए सर्जरी की गई। यह जानकारी उनकी बेटी एम्मा ने दी।इंग्लैड के पूर्व बल्लेबाज ने इससे पहले भी गले के ट्यूमर के लिए 2002 मे कीमोथेरेपी का सहारा लिया था। इस 83 साल के पूर्व दिग्गज को मई मे पता चला कि वह फिर से इस कैंसर की चपेट मे आ गए है। एम्मा ने बॉयकॉट के एक्स अकाउंट पर लिखा, सभी को यह बताना चाहती हूं कि मेरे पिता ज्योफ्री को गले के कैंसर को हटाने के लिए तीन घंटे के ऑपरेशन से गुजरना पड़ा। उनकी सर्जरी पूरी हो गई है।

जूनियर स्क्वाश में भारतीय चुनौती की अगुआई करेंगे बावा और अनाहत

नई दिल्ली। शौर्य बावा और अनाहत सिंह ह्यूस्टन मे विश्व जूनियर स्क्वाश चैम्पियनशिप मे क्रमशः लड़कों और लड़कियों की टीम स्पर्धाओं मे भारतीय चुनौती की अगुआई करेंगे। बावा ने एकल मे कांस्य पदक जीता था, वह युवराज वाधवानी, अयान वाजिराल्ली और अरिहंत केएस के साथ गुरुवार से शुरू होने वाली लड़कों की स्पर्धा मे हिस्सा लेंगे।एकल मे क्वार्टरफाइनल तक पहुंची राष्ट्रीय चैम्पियन अनाहत फिर महिलाओं की टीम स्पर्धा मे उन्नति त्रिपाठी, निरुपमा दुबे और शमीना रियाज के साथ मिलकर चुनौती पेश करेंगी। भारतीय लड़कों का सामना पहले दौर मे कुवैत से होगा जबकि लड़कियां पहले दौर मे चीनी ताइपे से भिड़ेंगी।

चोटरानी, अंजलि को महाराष्ट्र ओपन स्क्वाश में शीर्ष वरीयता

मुंबई। वीर चोटरानी और अंजलि सेमवाल को 20 जुलाई से यहां शुरू होने वाले बॉम्बे जिमखाना 47वे महाराष्ट्र राज्य ओपन स्क्वाश टूर्नामेंट मे क्रमशः पुरुष और महिला ड्रॉ मे शीर्ष वरीयता मिली है। राहुल बैठा को दूसरी वरीयता दी गई है जबकि महेश मनगांवकर और ओम सेमवाल पुरुष वर्ग मे संयुक्त रूप से तीसरी-चौथी वरीयता प्राप्त है।महिला वर्ग मे सुनीता पटेल को दूसरी वरीयता प्राप्त है और आराध्या पोरवाल तथा रानी गुप्ता को संयुक्त रूप से तीसरी-चौथी वरीयता मिली है।

विश्व सुपरबाइक में भाग लेने वाले पहले भारतीय बने क्विंटल

चेन्नई। राइडर केविन क्विंटल विश्व एसबीके एसएसपी300 प्रतियोगिता मे ऐतिहासिक पदार्पण करने को तैयार है जिससे वह विश्व सुपरबाइक चैम्पियनशिप मे भाग लेने वाले पहले भारतीय राइडर बन जाएंगे। आयरिश टीम 109 रेट्रो ट्रैफिक कावासाकी और इसकी प्रबंधन कंपनी गामन रेसिंग ग्लोबल सर्विस ने क्विंटल को यह मौका मुहैया कराया जिससे उनकी एसएसपी प्रतियोगिता मे चौथे दौर के लिए प्रविष्टि स्वीकार ली गई।

ओडिशा एफसी का सामना जोर्डन और सिंगापुर के क्लबों से

नई दिल्ली। भारतीय क्लब ओडिशा एफसी को 2024-25 एएफसी महिला चैम्पियंस लीग फुटबॉल मे जोर्डन के एतिहाद क्लब और सिंगापुर के लायन सिटी सेलर्स एफसी के साथ प्रारंभिक चरण मे ग्रुप बी मे रखा गया है। इंडियन वुमैस लीग 2023-24 चैम्पियन ओडिशा एफसी प्रारंभिक चरण के लिए जोर्डन जाएगी जहां 25 से 31 अगस्त तक मुकाबले खेले जाएंगे। प्रारंभिक दौर मे 13 टीमें भाग लेगी जिन्हे चार टीमो के एक और तीन तीन टीमो के तीन समूहो मे बांटा गया है। चारो ग्रुप विजेता 12 टीमो के ग्रुप चरण मे खेलेंगे ।

पेरिस में स्वर्ण पदक जीतने के लिए सर्वश्रेष्ठ करूंगी : सिंधू

भाषा। नई दिल्ली।

शीर्ष बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिंधू ने कहा कि वह पेरिस में तीसरा व्यक्तिगत ओलंपिक पदक जीतने वाली पहली भारतीय बनने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगी जिसके लिए वह अतीत के अनुभव से फायदा उठाना चाहेंगी। सिंधू की निगाहें आगामी ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतने पर लगी हैं जिससे वह इतिहास रच सकती हैं क्योंकि उन्होंने 2016 रियो ओलंपिक में रजत और 2020 तोक्यो ओलंपिक में कांस्य पदक जीता था। जियो सिनेमा के द ड्रीमर्स पर बातचीत के दौरान सिंधू ने पेरिस में इतिहास रचने पर ध्यान लगाने के बारे में बात की। हालांकि इस भारतीय स्टार के लिए यह काफी मुश्किल होगा। सिंधू ने कहा, पेरिस में तीसरा पदक जीतने के बारे में सोचने की बात निश्चित रूप से मुझे प्रेरित करती है और मैं स्वर्ण पदक जीतने के लिए अथक प्रयास करूंगी। मेरे लिए ओलंपिक ऐसे खेल हैं जिसमें मैं अपना 200 प्रतिशत देती हूं। उन्होंने कहा, यह यात्रा 2016 में और 2020 में शानदार रही है जिसमें काफी अथक प्रयास रहे और ऐसे पल रहे जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता। सिंधू ने कहा, पेरिस 2024 के लिए तैयारी नई शुरूआत है और कुछ भी हो, मुझे अपना शत प्रतिशत देना होगा। विश्व रैंकिंग की शीर्ष खिलाड़ियों में शामिल सिंधू ने कहा, ओलंपिक में पिछले प्रदर्शन का काफी अनुभव मेरे पास है जिससे मैं पेरिस 2024 में मदद लूंगी लेकिन मैं पदकों के बारे में सोच सोचकर अतिआत्मविश्वासी नहीं होना चाहती। उन्होंने कहा, मुझे उम्मीद है कि मैं देश की उम्मीदों को पूरा कर सकती हूं और तीसरा पदक जीता।

प्रणय की कोशिश खेल की गति बढ़ाने पर

नई दिल्ली। हाल ही मे चिकनगुनिया की चपेट मे आने वाले अनुभवी भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी एचएस प्रणय पेरिस ओलंपिक के लिए अपनी तैयारियों में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहते है और अपने कोच तथा पूर्व खिलाड़ी आरएमवी गुरुसाईदत्त की देखरेख मे खेल की गति को बढ़ाने पर ध्यान दे रहे है। प्रणय पिछले कुछ समय के लगातार बीमारियो की चपेट मे रहे है। थॉमस कप विजेता की के इस अहम सदस्य को पेट की गंभीर बीमारी के कारण लंबे समय तक खेल से दूर रहना पड़ा था। इसके बाद पीठ की चोट ने उन्हें परेशान किया और फिर चिकनगुनिया के कारण उन्हें एक सप्ताह तक विश्राम करना पड़ा। गुरुसाईदत्त ने पीटीआई-भाषा से कहा, ऑस्ट्रेलिया ओपन के बाद हमने जो तैयारियां शुरू की थी, वे सही रास्ते पर है, हम सही रास्ते पर है। उन्होंने कहा, इस यात्रा मे प्रणय के बारे मे सबसे अच्छी बात यह है कि भले ही वह संघर्ष कर रहा था लेकिन अभ्यास मे कोई कोताही नही बरत रहा था और अपना सर्वश्रेष्ठ दे रहा था। उसे मुश्किल परिस्थितियो का सामना करना पड़ा इसलिए को बनाए रखना आसान नही था। गुरुसाईदत्त हालांकि इस बात को लेकर आश्वस्त है कि चिकनगुनिया से पीड़ित होने के बावजूद प्रणय के अभ्यास दिनचर्या मे मे ज्यादा बदलाव नही आई है। उन्होने कहा, वह उस तरह का खिलाड़ी है जो बड़े मौको पर दमदार प्रदर्शन के लिए जाना जाता है। उसने पिछले तीन-चार वर्षों मे कई बार ऐसा किया है। एक कोच के रूप मे मुझे और गोपी सर (राष्ट्रीय कोच पुलेला गोपीचंद) को उन पर भरोसा है।

देवी प्रिया के छह गोल से मणिपुर ने असम को रौंदा

कोलकाता। देवी मुतुम प्रिया की छह गोल की मदद से मणिपुर हॉकी ने गुरुवार को यहां द्वितीय हॉकी इंडिया जूनियर पुरुष और महिला पूर्वी क्षेत्र चैंपियनशिप के महिला वर्ग के मैच में असम हॉकी के खिलाफ 12-0 से एकतरफा जीत दर्ज की। देवी ने मैच के दूसरे, चौथे, सातवें, 26वें, 36वें और 59वें मिनट में गोल दागे। मैच में रीना कोइजम (20वें), तनु शोरेन्सांगबाम (32, 57वें), चानू लीशांगथेम नताली (42, 58वें) और देवी लैशराम रितु (51वें) ने भी विजई टीम के लिए गोल किए। हॉकी झारखंड ने हॉकी बिहार को 10-0 से हराया। झारखंड की टीम के लिए मुंडु सुकरमणि ने तीन जबकि रोशनी अइंद, कुमारी शांति और कप्तान रजनी करकेट्टा ने दो-दो गोल किए। सलोमी नाग ने एक गोल किया।

रीतिका हुड्डा को कोच के लिए वीजा हासिल करने में हो रही परेशान

● आईओए के सिफारिश पत्र का इंतजार

नई दिल्ली। ऐसे समय में जब पहलवान रीतिका हुड्डा को सिर्फ अपनी ओलंपिक तैयारियों पर ध्यान लगाना चाहिए तब हरियाणा की इस पहलवान को अपने कोच मंदीप के लिए वीजा की व्यवस्था करने के लिए आईओए अधिकारियों से गुहार लगानी पड़ रही है क्योंकि वह स्वीकृत सहयोगी स्टाफ की सूची में शामिल नहीं हैं। रीतिका 76 किग्रा हैवीवेट वर्ग में क्वालीफाई करने वाली पहली भारतीय महिला पहलवान हैं। देश की

पहली महिला अंडर-23 विश्व चैम्पियन रीतिका ने मई में भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) से अपने कोच और फिजियो को अपने साथ यात्रा करने की अनुमति देने का अनुरोध किया था। उन्होंने जून में भारतीय कुश्ती महासंघ को भी इसी तरह का एक ईमेल भेजा था।वहीं पांच क्वालीफाई करने वाले पहलवानों के कोच को साथ ले जाने के अनुरोध को मंजूरी दे दी गई है जबकि रीतिका के कोच को अनुमति नहीं मिली।रीतिका ने पीटीआई से कहा, मुझे यह देखकर हैरानी हुई कि सभी को निजी कोच के साथ यात्रा करने की अनुमति दी गई है। अंतिम (पंघाल) के दोनों कोच को जाने की मंजूरी दे दी गई जबकि मुझे एक भी कोच नहीं दिया गया है। उन्होंने कहा, जब मैंने आवेदन किया था, उसके कुछ दिनों बाद मुझे बताया गया कि किसी को भी निजी कोच के साथ यात्रा करने की अनुमति नहीं दी जा रही है। लेकिन अब मैं देख रही हूं कि मुझे छोड़कर सभी को अनुमति दी गई है।

पेरिस पुलिस ने ओलंपिक उद्घाटन समारोह से पहले सीन नदी को सील किया

पेरिस। सीन नदी के किनारे ओलंपिक आतंकवादी विरोधी इंतजामों की शुरुआत के साथ गुरुवार को मध्य पेरिस में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था लागू कर दी गई जिसके चलते पहले से पास के लिए आवेदन नहीं करने वाले पेरिसवासियों और पर्यटकों के लिए कई किलोमीटर लंबा क्षेत्र सील कर दिया गया। कई लोगों की जुबान पर क्यूआर कोड शब्द थे। यह वह पास है जो 26 जुलाई को होने वाले ओलंपिक खेलों के उद्घाटन समारोह की सुरक्षा के लिए स्थापित सुरक्षा घेरे में लगाए गए धातु अवरोधों के पार जाने की स्वीकृति देता है। जिन लोगों के पास फोन पर या कागज के टुकड़ों पर यह कीमती कोड था वे धातु अवरोधों के बीच विभिन्न अंतराल पर बनी पुलिस चौकियों से आसानी से गुजर गए।

महिला एशिया कप : आत्मविश्वास से ओतप्रोत भारत का सामना चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान से

दाम्बुला। गत चैम्पियन भारतीय महिला क्रिकेट टीम एशिया कप के पहले मैच में शुक्रवार को चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान से खेलेगी और अक्टूबर में होने वाले टी20 विश्व कप की तैयारियों के लिए इस टूर्नामेंट को काफी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। हरमनप्रीत की कप्तानी वाली भारतीय टीम का एशिया कप में दबदबा रहा है जिसने चार में से तीन टी20 खिताब और चारों बार 50 ओवरों के प्रारूप में जीत दर्ज की है। महिला एशिया कप टी20 टूर्नामेंट में भारत ने 20 में से 17 मैच जीते हैं। उसने 2022 में फाइनल में बांग्लादेश को हराया था। पाकिस्तान के खिलाफ भारत ने इस टूर्नामेंट में 14 मैचों में 11 जीत दर्ज की है और हरमनप्रीत कौर का लक्ष्य इस सिलसिले को आगे बढाने का होगा। इस महीने कर शुरूआत में भारत ने दक्षिण अफ्रीका से।.। से ड्रॉ खेला जबकि तीन टी20 मैचों में से दूसरा बारिश में धुल गया। पाकिस्तान का मनोबल गिरा हुआ होगा जिसे मई में इंग्लैंड ने 3 . 0 से हराया था। भारत के लिए सबसे अच्छी बात स्मृति मंधाना का शानदार फॉर्म है और हाल ही में गेंदबाजों ने एक ईकाई के रूप में बेहतरीन प्रदर्शन किया है।

एशिया कप में प्रतिद्वंद्वी टीमों पर दबदबा बनाना चाहेगा भारतः हरमनप्रीत

दाम्बुला (श्रीलंका)। भारतीय कप्तान हरमनप्रीत कौर ने गुरुवार को कहा कि उपमहाद्वीप में टीमों पर दबदबा जारी रखने की मुहिम में वे महिला एशिया कप के मंच का इस्तेमाल आगामी टी20 विश्व कप की तैयारी के लिए करेंगी। यह महाद्वीपीय टूर्नामेंट शुक्रवार से इस साल टी20 प्रारूप में आयोजित होगा जिसमें भारत का सामना चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान से होगा। बांग्लादेश इस साल के अंत में विश्व कप की मेजबानी करेगा। भारत ने 2004 से शुरू हुए इस टूर्नामेंट के सभी सात चरण (टी20 और वनडे मिलाकर) में ट्रॉफी जीतकर दबदबा बनाया है। यह टूर्नामेंट हम सभी के लिए काफी अहम है क्योंकि हम इस टूर्नामेंट को समान रूप से सम्मान देते हैं ।

भारत फीफा रैंकिंग में 124वें स्थान पर

अर्जेंटीना ने शीर्ष स्थान मजबूत किया

षा। नई दिल्ली

भारतीय फुटबॉल टीम गुरुवार को जारी फीफा पुरुष रैंकिंग में 124वें स्थान पर बरकरार है जबकि मौजूदा विश्व चैम्पियन और कोपा अमेरिका विजेता अर्जेंटीना ने अपना शीर्ष स्थान मजबूत किया। जून में जारी फीफा रैंकिंग में भारतीय पुरुष राष्ट्रीय फुटबॉल टीम सूची में तीन पायदान खिसक गई थी। ऐसा उसके कतर और अफगानिस्तान से 2026 विश्व कप क्वालीफायर के तीसरे दौर के लिए क्वालीफाई करने में विफल होने के कारण हुआ था। पिछले साल दिसंबर से भारत का रैंकिंग में खिसकना जारी है। भारतीय टीम पिछले साल शीर्ष 100 में पहुंची थी जिसमें उसकी सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग 99 रही थी। लेकिन इसके बाद से उसका खिसकना जारी है। एशिया में भारत 22वें स्थान पर बरकरार है जिसमें वह लेबनान, फलस्तीन और वियतनाम से पीछे है। अर्जेंटीना ने सफलतापूर्वक कोपा अमेरिका खिताब बरकरार रखने के बाद रैंकिंग में शीर्ष स्थान पर पकड़ मजबूत कर ली है। फ्रांस (दूसरी रैंकिंग) यूरो 2024 के सेमीफाइनल में पहुंचने के बाद दूसरे स्थान पर है।

मेरे पास कौशल था, लेकिन गौतम भाई ने केकेआर में मेरी मानसिकता बदल दीः हर्षित

नई दिल्ली। हर्षित राणा को जब पहली बार भारतीय वनडे टीम मे शामिल करने की खबर पता चली जिसमे विराट कोहली और रोहित शर्मा जैसे दिग्गज मौजूद है तो उनके मुंह से यही शब्द निकले, दिल्ली मे दिल टूट सकता है, पर हमने कभी हौसला नही हारा। दिल्ली के साउथ एक्सटेंशन के 22 वर्षीय तेज गेंदबाज हर्षित ने जूनियर स्तर से ही कड़ी मेहनत की लेकिन अकसर नजरअंदाज कर दिए जाते। पर कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के इस आईपीएल सत्र मे विजई अभियान मे 19 विकेट लेने से वह राष्ट्रीय टीम मे जगह बनाने मे सफल रहे। हर्षित ने कहा, मै कड़ी मेहनत करने मे विश्वास करता हूं लेकिन जब भी आयु ग्रुप की टीम मे मेरी अनदेखी होती तो मेरा दिल टूट जाता और मै अपने कमरे मे बैठकर रोता था। मेरे पिता प्रदीप ने कभी उम्मीद नही छोड़ी।

एनडीबीजी ने रोमांचक मैच में लाइफकेयर 22 रन से दी शिकस्त

लखनऊ। मैन ऑफ द मैच अखिलेश यादव 63 के उम्दा अर्धशतक के बाद उपयोगी गेंदबाजी से एनडीबीजी क्लब ने पांचवीं श्रीपाल सिंह स्मारक टी20 नाइट क्रिकेट टूर्नामेंट में लाइफकेयर क्लब को रोमांचक मुकाबले में 22 रन से हराया। पार्थ रिपब्लिक ग्राउंड पर एनडीबीजी ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित ओवर में 4 विकेट पर 152 रन का स्कोर बनाया। अखिलेश यादव ने 44 गेंदों पर 5 चौके व 2 छक्के से 63 रन बनाते हुए अर्धशतक पूरा किया।अभिषेक ने 28ए संजय व मनदीप सिंह ने 16.16 एवं अंकित तलवार ने नाबाद 14 रन का योगदान किया। लाइफकेयर क्लब से अतुल सिंह, धर्मेंद्र कुमार, अजय व पिंटू गौतम को 1-1 विकेट मिले। जवाब में लाइफकेयर 19ण्3 ओवर में 130 रन ही बना सका और जीत से 22 रन दूर रह गया।अनिल सिंह 38 आदित्य सिंह 16 अतुल सिंह 16और अभिषेक मिश्रा 14 ने पूरी कोशिश की लेकिन टीम को जीत नहीं दिला सके। एनडीबीजी से आजाद प्रताप सिंहए मनीष मिश्रा व संजय ने 2.2 विकेट चटकाए। मनदीप सिंह, अंकित शर्मा व नदीम खान को 1.1 विकेट मिले।

क्विक न्यूज

मांडविया प्रतिभा पहचान कार्यक्रम के दूसरे चरण का शुक्रवार को उद्घाटन करेंगे

नई दिल्ली। पेरिस ओलंपिक को लेकर खेलो की चर्चा के बीच केंद्रीय खेल मंत्री मनसुख मांडविया शुक्रवार को यहां सरकार के महत्वाकांक्षी खेलो इंडिया उदीयमान प्रतिभा पहचान (कीर्ति) कार्यक्रम के दूसरे चरण का उद्घाटन करेंगे। कीर्ति का पहला चरण मांडविया से पहले खेलमंत्री रहे अनुराग ठाकुर द्वारा 12 मार्च को चंडीगढ़ मे लॉन्च किया था। कीर्ति का लक्ष्य अधिसूचित प्रतिभा मूल्यांकन केंद्रों के माध्यम से प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की पहचान करने के लिए पूरे वर्ष मे देश भर में 20 लाख मूल्यांकन करना है। यह अपने पैमाने का देश की सबसे बड़ी प्रतिभा पहचान और मूल्यांकन कार्यक्रम है। यहां जारी विज्ञप्ति के मुताबिक कीर्ति की सबसे बड़ी खासियत सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारित पारदर्शी चयन है।विज्ञप्ति के मुताबिक महत्वाकांक्षी खिलाड़ी के खेल कौशल का अनुमान लगाने के लिए कृत्रिम मेधा (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) पर आधारित डेटा एनालिटिक्स का उपयोग किया जा रहा है। इसके पहले चरण में 70 केंद्रों पर 3,62,683 पंजीकरणों में से, 28 राज्यो और केंद्र शासित प्रदेशों में लगभग 51,000 मूल्यांकन किए गए हैं।

बैजबॉल की वापसीः इंग्लैंड ने सिर्फ 4.2 ओवर में सबसे तेज टीम अर्धशतक का रिकॉर्ड बनाया

नॉटिंघम। इंग्लैड ने अपना आक्रामक रवैया जारी रखते हुए गुरुवार को यहां दूसरे क्रिकेट टेस्ट के पहले दिन वेस्टइंडीज के खिलाफ सिर्फ 4.2 ओवर में सबसे तेज टीम अर्धशतक का रिकॉर्ड बनाया। सलामी बल्लेबाज बेन डकेट (नाबाद 33 रन, 14 गेंद) और ओली पोप (नाबाद 16 रन, नौ गेंद) ने मिलकर 10 चौके लगाए जिससे इंग्लैड ने 1994 मे द ओवल मे दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 4.3 ओवर मे अर्धशतक के अपने ही रिकॉर्ड मे सुधार किया। सबसे तेज टीम अर्धशतक की सूची मे पहले तीन स्थान पर इंग्लैड काबिज है। इंग्लैड ने 2002 मे श्रीलंका के खिलाफ मैनचेस्टर के ओल्ड ट्रैफर्ड मे भी पांच ओवर मे तीसरा सबसे तेज अर्धशतक जड़ा था। श्रीलंका इस सूची मे चौथे स्थान पर है जिसने 2004 मे कराची मे पाकिस्तान के खिलाफ 5.2 ओवर मे अर्धशतक पूरा किया था। भारत दो बार 5.3 ओवर मे अर्धशतक पूरा करके इस सूची मे पांचवे स्थान पर है। टीम इंडिया ने 2008 मे चेन्नई मे इंग्लैड और 2023 मे पोर्ट ऑफ स्पेन मे वेस्टइंडीज के खिलाफ यह उपलब्धि हासिल की।

रॉयल गरिल्ला देगा रफ्तार को रोमांच

बेंगलुरू। रॉयल एनफील्ड ने प्रीमियम आधुनिक रोडस्टर - रॉयल एनफील्ड गरिल्ला 450 लॉन्च किया, जो रोडस्टर्स और सड़कों को हमेशा के लिए बदल देगा। यह मोटरसाइकिल विश्व को एहसास कराएगी कि रोडस्टर वास्तव में क्या होते हैं रॉ, रिस्पॉन्सिव और विसरल राइडिंग अनुभव के लिए बनाई गई गरिल्ला 450 एक शक्तिशाली, बहुउपयोगी और उन्नत मोटरसाइकिल है गरिल्ला 450 के बारे में आयशर मोटर्स लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर, सिद्धार्थ लाल ने कहा, गरिल्ला 450 हमारे नजरिए का आधुनिक रोडस्टर्स है, और इसका विकास जिस तरह हुआ, उससे हमें बहुत खुशी मिली। इस मोटरसाइकिल की मशीन कैरेक्टरफ़ुल, अत्यधिक उन्नत है, यह परफॉर्मेंस, बहुमुखी गुण, और आत्मविश्वास बढ़ाने वाली हैंडलिंग प्रदान करती है। इसे उसी प्लेटफ़ॉर्म पर बनाया गया है, जिस पर हिमालयन बनी है। लेकिन इसे रोडस्टर की परफॉर्मेंस के लिए ट्यून किया गया है। इसलिए इसकी राइडिंग सबसे अलग और रोमांचक है। गरिल्ला वही है, जो हमेशा से रोडस्टर होते हैं। यह सुपर रिस्पॉन्सिव है और इसे दैनिक गति पर चलाने का अनुभव बहुत अच्छा है, और उतना ही आनंददायक इसे पूरी गति पर चलाना है। भारत में बुकिंग2,39,000 रुपये के शुरुआती मूल्य से शुरू हो गई है। इसकी टेस्ट राइड और रिटेल बिक्री 1 अगस्त, 2024 से शुरू होगी। सीईओ, बी गोविंदराजन ने कहा, गरिल्ला 450 एक खूबसूरत और गेम चेंजिंग रोडस्टर है। जब हमने शेरपा 450 प्लेटफॉर्म शुरू किया था, तब हमने एक एडवेंचर टूरर और एक बेहतरीन रोडस्टर की कल्पना की थी, जो एक खास रॉयल एनफील्ड होगी।

कम्युनिटी डे में ट्रेनरों को मिलेगा मौका

लखनऊ। हम जुलाई 2024 में होने वाले पोकेमॉन गो कम्युनिटी डे की घोषणा करते हुए बेहद उत्साहित हैं, जो रविवार, 21 जुलाई 2024 को आयोजित किया जाएगा। इस कम्युनिटी डे के दौरान, अपने आस-पास के ट्रेनरों के साथ रेड, ट्रेड और एक्सप्लोर करें, जिसमें लकवारा को विशेष रुप से फीचर किया जाएगा। हमारे कम्युनिटी डे मीट-अप रविवार, 21 जुलाई 2024 को स्थानीय समय अनुसार दोपहर 2 बजे से शाम 5 बजे तक होंगे। वर्चुअल ट्रेनर मीटअप भारत के 25 शहरों में आयोजित किए जाएंगे, जिनमें नई दिल्ली का लोधी गार्डन, टैगोर गार्डन में पैसिफिक मॉल और जापानी पार्क उर्फ स्वर्ण जयंती पार्क, मुंबई का जॉगर्स पार्क, नवी मुंबई का मदर टेरेसा गार्डन, पुणे का सारसबाग और विमान नगर में फीनिक्स मार्केटसिटी मॉल, गुरुग्राम का एंबिएंस मॉल, जयपुर का जवाहर सर्कल, भुवनेश्वर का खारवेला पार्क, बेंगलुरु का गोपालन सिग्नेचर मॉल, कब्बन पार्क, मुरुगेश पाल्या और स्पाइस गार्डन, कानपुर का कारगिल पार्क, चंडीगढ़ का जाकिर हुसैन रोज़ गार्डन, अगरतला का चिल्ड्रन पार्क, बर्धमान का मालिर मठ, वडोदरा का कामतीबाग, इंदौर का लालबाग गार्डन, कोलकाता का साउथ सिटी मॉल, सरसुना कॉलेज झील और रवीन्द्र सरोवर झील में लायंस सफारी पार्क, वाराणसी का शहीद उद्यान नगर निगम, पटना का सिटी सेंटर मॉल, चेन्नई का अन्ना नगर में स्थित टॉवर पार्क और वेल्लोर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में क्लॉक कोर्ट, हैदराबाद का इंदिरा पार्क, शांतिपुर का सार्वजनिक पुस्तकालय खेल का मैदान, लखनऊ का फन रिपब्लिक मॉल, अहमदाबाद का वस्त्रापुर झील, विशाखापत्तनम का केंद्रीय उद्यान और तिरुवनंतपुरम का नेपियर संग्रहालय शामिल हैं।

हमारे पास अगले ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करने की योजनाएं हैः सीएफआई महासचिव मनिंदर

चेन्नई। भारतीय साइक्लिंग महासंघ (सीएफआई) के महासचिव मनिंदर पाल सिंह ने गुरुवार को कहा कि कोविड -19 महामारी ने भारतीय खिलाड़ियों के पेरिस ओलंपिक में भाग लेने की उम्मीदो पर पानी फेर दिया, लेकिन उनके पास 2028 लॉस एंजिल्स खेलो के लिए योजनाएं है। भारत ने एशियाई खेलो मे साइक्लिंग मे तीन पदक जीते है लेकिन अभी तक ओलंपिक मे किसी खिलाड़ी को प्रतिनिधित्व नही मिला है। मनिंदर से पेरिस खेलो मे साइक्लिंग के लिए क्वालीफाई करने मे भारत की विफलता के बारे मे पूछा जाने पर कहा कि क्वालीफिकेशन अभियान के दौरान कोविड-19 महामारी ने उनकी योजनाओ को प्रभावित किया। उन्होंने एचसीएल द्वारा आयोजित बातचीत मे पीटीआई-भाषा कहा, साइक्लिंग मे ओलंपिक क्वालीफिकेशन दूसरे खेलो से काफी अलग है। इसमे ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करने मे ढाई साल लगते है। खिलाड़ियों को क्वालीफायर मे भाग लेने के अलावा, विभिन्न वर्गों की अन्य स्पर्धाओ से अंक प्राप्त करने की जरूरत होती है। उन्होंने कहा, हमें उम्मीद थी कि पेरिस खेलो के लिए हमारे कुछ राइडर क्वालीफाई करेंगे लेकिन कोविड-19 के कारण यूरोप के विपरीत एशिया मे आयोजनो पर असर पड़ा। यूरोप के राइडर्स को अधिक अंक हासिल कर क्वालीफाई करने का बेहतर मौके मिले। उन्होंने कहा, हम अगले ओलंपिक (लॉस एंजिल्स मे) मे जगह बनाने की राह पर है।

सीएमवाईके प्रिंटेक लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा 100के, मिलाप भवन, 8/ए, बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष: 011-40110455 से प्रकाशित तथा द इंडियन एक्सप्रेस लिमिटेड,ए-8, सेक्टर-7, जिला-गौतमबुद्ध नगर, नोएडा (उ.प्र.)-201301, दूरभाष-01202470700 से मुद्रित। प्रधान संपादक : शोबोरी गाँगुली, स्थानीय सम्पादकः प्रदीप तिवारी। पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं। मुख्य व्यवसायिक कार्यालय- 201-205 द्वितीय मंज़िल, प्रताप भवन, 5 बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष:011-69342500।